ISSN 2278-1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-6, अंक: 6, संख्या-44 नवम्बर 2023 मूल्य: ₹20

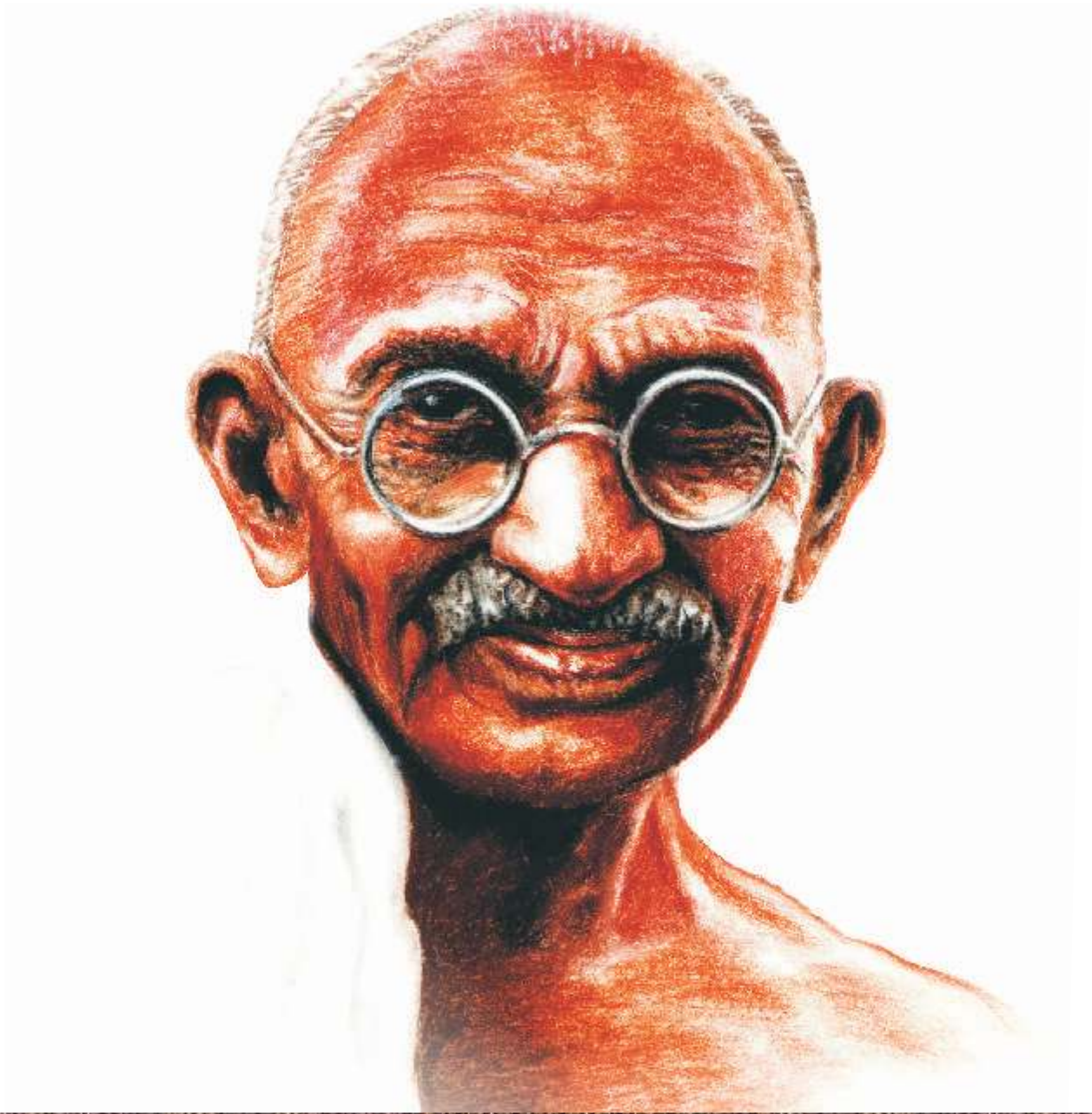

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संग्रहालय

समिति के दो परिसर हैं- गांधी स्मृति और गांधी दर्शन।

गांधी स्मृति, 5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित है। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों से जुड़े दुर्लभ चित्र, जानकारियाँ और मल्टीमीडिया संग्रहालय (Museum) है। जिसमें प्रवेश निःशुल्क है।

दूसरा परिसर गांधी दर्शन राजघाट पर स्थित है। यहाँ 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' प्रदर्शनी, डोम थियेटर और राष्ट्रीय स्वच्छता केंद्र संग्रहालय (Museum) है।

दोनों परिसर के संग्रहालय प्रतिदिन प्रातः 10 से शाम 6:30 तक खुलते हैं।
(सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़ कर)

ISSN 2278A 1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-6, अंक: 6, संख्या-44
नवम्बर 2023

संरक्षक
विजय गोयल
उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

प्रधान सम्पादक
डॉ. ज्वाला प्रसाद

सम्पादक
प्रवीण दत्त शर्मा
पंकज चौबे

परामर्श
वेदाभ्यास कुंडू

प्रबन्ध सहयोग
शुभांगी गिरधर

आवरण
सलिल दास

रेखांकन
संजीव शाश्वती, आस्था

मूल्य : ₹ 20
वार्षिक सदस्यता : ₹ 200
दो साल : ₹ 400
पांच साल : ₹ 500

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23392796
ई-मेल :lntimjangsds@gmail.com
2010gsds@gmail.com

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट,
नई दिल्ली-110002, की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण उनके अपने हैं, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली के नहीं।
समस्त मामले दिल्ली न्यायालय में ही विचाराधीन।

मुद्रक
पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092

इस अंक में

उपाध्यक्ष की कलम से... 2
सम्पादकीय 3
धरोहर
प्रथम सत्याग्रही कैदी *-मोहनदास करमचंद गांधी* 5
भाषण
एक भारत-श्रेष्ठ भारत *-श्री नरेंद्र मोदी* 9
संस्मरण
'महात्मा गांधी के साथ वर्धा में' *-परम हंस योगानंद* 14
चिंतन
अभिनवगुप्त की संवादपद्धति *-राधावल्लभ त्रिपाठी* 20
विमर्श
सत्याग्रह-प्रयोगों के लिए खुला है भविष्य *-आचार्य राममूर्ति* 29
विशेष
एक गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी: मंजर अली सोख्ता *-संजय कृष्ण* 38
विचार
महात्मा गांधी के आर्थिक विचार और सतत् विकास
-प्रज्ञा सिंह व अनूप सिंह कुशवाहा 42
रमा शंकर सिंह की कविताएं **45**
कहानी
प्रेम में परमेश्वर: तोल्सतोय *-अनुवाद: प्रेमचंद* 48
फोटो में गांधी **52**
चित्रकारी *-सुखदा* 53
कविता
प्रतिभा चौहान की बाल कविताएं 54
सामयिक
मिलेट खाएं स्वस्थ रहें *-नेहा सिंह* 58
गतिविधियाँ **62**

तन और मन दोनों का पोषक:श्री अन्न

एक कहावत है कि जैसा खायें अन्न-वैसा होये मन। अर्थात हमारे द्वारा खाया जाने वाला अनाज न केवल हमारे शरीर बल्कि विचारों पर भी प्रभाव डालता है। इसलिए खाद्य पदार्थों का शुद्ध और पोषक होना बहुत आवश्यक है। मिलेट्स, जिसे मोटा अनाज भी कहते हैं, ये ऐसे अनाज हैं, जो हमारे तन के साथ मन को भी सुंदर बनाता है। हमारे प्रधानमंत्री ने मिलेट्स को श्री अन्न का नाम दिया है।

श्री अन्न में बाजरा, ज्वार, रागी जैसे पोषक खाद्य पदार्थ होते हैं। यह कोई नई चीज नहीं है। यह पुराने समय से ही हमारे चलन में है। श्री अन्न गांवों व गरीबों से जुड़ा हुआ मुख्य भोजन है।

महात्मा गांधी ने भी मोटा अनाज इस्तेमाल करने की वकालत की थी। वे बाजरा ज्वार उगाने और उन्हें भोजन में शामिल करने के पक्षधर थे।

लेकिन वक्त के साथ श्री अन्न हमारी थालियों से गायब होता गया। नए दौर में पिज्जा, बर्गर जैसे जंक फूड के जाल में हमारे युवा और बच्चे उलझ गए हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि असमय ही बीमारियां हमारे घरों में पहुंच गई। छोटी उम्र में ही हार्ट अटैक, शूगर, बीपी, थायराइड और न जाने कितने रोगों का शिकार हमारी युवा पीढ़ी हो रही है।

मिलेट्स में पोषण तो ज्यादा होता ही है, साथ ही स्वाद में भी विशिष्ट होते हैं। विश्व के लिए श्रीअन्न बहुत बड़े उपहार की तरह हैं। इसी तरह, श्रीअन्न से फूड हैबिट्स की समस्या भी ठीक हो सकती है। हाइ फ़ाइबर वाले इन फूड्स को शरीर और सेहत के लिए बहुत फायदेमंद माना गया है। विशेषज्ञों के अनुसार गेहूं एवं चावल से, बाजरा आयरन एवं जिंक का एक बेहतर स्रोत है।

हम सब के लिए गौरव की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री के प्रस्ताव के आधार पर, संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया गया।

मिलेट्स को बढ़ावा देने के मोदी जी के प्रयासों से देश और दुनिया में मिलेट क्रांति आ गई है। अन्न बाजार को बढ़ावा मिलने से छोटे किसानों की आय बढ़ेगी, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। देश में पिछले कुछ समय में श्री अन्न पर काम कर रहे 500 से अधिक स्टार्टअप सामने आए हैं।

'अंतिम जन' का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें संकलित सामग्री आपको पसंद आएगी, ऐसी आशा करता हूं।

विजय गोयल

गांधी और खादी

आजादी से पहले खादी भारत में एक वस्त्र मात्र नहीं, अपितु स्वतंत्रता का प्रतीक थी। यदि भारतीय इतिहास को हम देखें, तो पाएंगे कि पूरे स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान खादी छाई रही। गांधीजी ने खादी को वस्त्र से विचार बनाया। और जन-जन तक पहुंचाया।

1915 में, गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, तो उन्होंने देखा कि यहाँ अंग्रेजों का कपड़ा उद्योग अपने चरम पर था। वे भारत से कच्चा माल ले जाकर कपड़े तैयार करते थे। फिर, वे इन तैयार कपड़ों को यहीं बेचते थे। इससे भारत का कपड़ा कारोबार पूरी तरह से खत्म हो चुका था। गांधी कहते हैं, ''हमने देखा कि जब तक हाथ से कातेगें नहीं, तब तक हमारी पराधीनता बनी रहेगी। मिलों के एजेंट बनकर हम देश सेवा करते हैं, ऐसा हमें प्रतीत नहीं हुआ।'' इस स्थिति को देखकर, गांधी जी को खादी ही वह अस्त्र नजर आया, जिससे वे अंग्रेजों को कमजोर कर सकते थे। दूसरी ओर, इससे भारतीय जनमानस में जात-पात के भाव को भुला, रोजगार के साधन को पुनः विकसित करने में मदद भी मिल सकती थी।

दरअसल गांधीजी खादी प्रेम के जरिए भारतीयों को स्वदेशी वस्त्रों से जोड़ना चाहते थे। वह चाहते थे कि कम से कम कपड़ों के मामलों में तो हम ब्रिटिश सरकार पर निर्भर न होकर आत्मनिर्भर बनें। आजादी से पूर्व वह वस्त्रों की आजादी चाहते थे। महात्मा गांधी कहते थे-खादी वस्त्र नहीं विचार है। यह प्रसन्नता की बात है कि खादी एक बार फिर लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी है। पहले खादी केवल गांधी जयंती के मौकों पर ही कुछ जगह दिखाई देती थी। लेकिन आज खादी फैशन का प्रतीक बन गई है।

मेरा आप से भी निवेदन है कि आप खादी के वस्त्र पहनें। खादी को फैशन के रूप में बढ़ावा देने से भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। यह भारत के कपड़ा उद्योग को दुनिया में प्रतिस्पर्धी बनाने में भी मदद कर सकता है। इससे स्वदेशी विचार को बढ़ावा मिलेगा।

अंतिम जन का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। इस अंक में स्थायी स्तम्भ के साथ-साथ परम हंस योगानंद जी का 'महात्मा गांधी के साथ वर्धा में' संस्मरण, आचार्य राममूर्ति, रमाशंकर जी की कविताएं और प्रतिभा चौहान जी की बाल कविताएं पठनीय है। परमहंस योगानंद जी ने लिखा है, ''श्री देसाई हमें सीधे लेखन कक्ष में ले गये, जहाँ पालथी लगाकर बैठे थे महात्मा गांधी। एक हाथ में कलम दूसरे हाथ में कागज थे। दूसरों को जीत लेने वाली अंतःकरण पूर्ण मुस्कान।''

अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया की अपेक्षा है।

डॉ. ज्वाला प्रसाद
निदेशक

आपके ख़त

नई शिक्षा नीति

अंतिम जन का अंक बहुत सुन्दर प्रकाशित हो रहा है. इस अंक में बहुत बेहतर आलेख दिये गये हैं।

आज भारत को एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जो समय के अनुकूल हो, मांग और बाजार के अनुकूल हो. आने वाले समय में विज्ञान तकनीक की आवश्यकता बढ़ेगी। इसको ध्यान में रखकर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारूप बना और यह व्यापक विचार - विमर्श के बाद आज हमारे सामने है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पहली कक्षा से शोध तक में हर स्तर पर समस्याओं के अनुसार बच्चों को तैयार किया जाएगा. इसमें सबसे बेहतर बात यह है कि पांचवीं तक के बच्चों की शिक्षा व्यवस्था मातृभाषा में दी जाएगी। प्राथमिक कक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक भाषा का तालमेल सुनिश्चित की गई है। मातृभाषा के संबंध में 19 अक्टूबर 1910 के इंडियन ओपिनियन में गांधीजी ने लिखा- हम लोगों में बच्चों को अंग्रेज बनाने की प्रवृति पाई जाती है। हम मातृभाषा की उन्नति नहीं कर सके और हमारा यह सिद्धांत रहे कि अंग्रेजी के जरिये ही हम अपने ऊँचे विचार प्रकट कर सकते हैं तो इसमें जरा भी शक नहीं की हम सदा ही गुलाम बने रहेंगे। मातृभाषा को शिक्षा का प्राथमिक हिस्सा माना जाए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषताओं में एक है-भारतीय जड़ों और उसके गौरव मूल्य से जुड़ना। भारत की विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान परंपरा को आत्मसात कर समृद्ध करना है।

आज अंतिम जन के सभी अंकों में बेहतर सामग्री दी जा रही है।

हरिपत
पांडव नगर, दिल्ली

बहुत शर्मिंदा हूं...

ओ मेरी लाडो
मैं बहुत शर्मिंदा हूं
हर रंग में, हर रूप में

एक पिता के रूप में
तुझे दुलार ना दे सका
तुझे काबिल ना बना सका

एक भाई के रूप में
तेरी रक्षा ना कर सका
तेरा जीवन ना संवार सका

एक पति के रूप में
तुझे हक ना दे सका
तुझे सब कुछ ना दे सका

एक दोस्त के रूप में
तुझे भरोसा ना दे सका
तुझे साहसी ना बना सका

एक प्रेमी के रूप में
तेरी भावनाओं को ना जान सका
तेरे मन का दर्द ना पहचान सका

ओ मेरी चिरैया
हो सके तो मुझे माफ कर देना
हे निर्भया, मेरा इंसाफ कर देना...

- **अमित बैजनाथ गर्ग**
राज आंगन, ए-9, श्री राणी नगर,
30 नंबर टेंपो स्टैंड के पास, पालड़ी मीणा,
आगरा रोड, जयपुर, राजस्थान-302031

प्रथम सत्याग्रही कैदी

मोहनदास करमचंद गांधी

अथक परिश्रम करने के बाद भी जब एशियाटिक ऑफिस को 500 से अधिक नाम नहीं मिल सके, तो एशियाटिक विभाग के अधिकारी इस निर्णय पर आए कि किसी न किसी हिंदुस्तानी को गिरफ्तार करना चाहिए। पाठक जर्मिस्टन के नाम से परिचित हैं। वहाँ बहुत से हिंदुस्तानी रहते थे। उनमें से एक रामसुंदर पंडित भी था। वह दिखने में बहादुर और वाचाल था। उसे कुछ संस्कृत श्लोक भी कंठस्थ थे। उत्तर भारत का होने से तुलसीदास की रामायण के दोहे-चौपाई तो वह जानता ही था। और पंडित कहलाने के कारण लोगों में उसकी थोड़ी प्रतिष्ठा भी थी। उसने जगह-जगह भाषण दिए। अपने भाषणों को वह खूब जोशीले बना सकता था। जर्मिस्टन के कुछ विघ्न संतोषी हिंदुस्तानियों ने एशियाटिक ऑफिस से कहा कि यदि रामसुंदर पंडित को गिरफ्तार कर लिया जाए, तो जर्मिस्टन के बहुत से हिंदुस्तानी एशियाटिक ऑफिस से परवाने ले लेंगे। उस ऑफिस का अधिकारी रामसुंदर पंडित को पकड़ने के प्रलोभन से अपने को रोक नहीं सका। रामसुंदर पंडित गिरफ्तार कर लिया गया। इस तरह का यह पहला ही मुकदमा होने से सरकार और हिंदुस्तानी कौम में बड़ी खलबली मच गई। जिस रामसुंदर पंडित को कल तक केवल जर्मिस्टन ही जानता था, उसे एक क्षण में सारा दक्षिण अफ्रीका जानने लग गया। जिस प्रकार किसी महापुरुष पर मुकदमा चलता है और वह सब लोगों की दृष्टि अपनी ओर खींच लेता है, उसी तरह सबकी नजर रामसुंदर पंडित की ओर लग गई। सरकार के लिए शांति की रक्षा का किसी भी तरह का बंदोबस्त करना जरूरी नहीं था, फिर भी उसने ऐसा बंदोबस्त किया। अदालत में भी रामसुंदर को साधारण अपराधी न मानकर हिंदुस्तानी कौम का प्रतिनिधि माना गया और उसके साथ आदर का व्यवहार किया गया। अदालत उत्सुक हिंदुस्तानियों से खचाखच भर गई थी। रामसुंदर को एक मास की सादी कैद मिली। उसे जोंहानिसबर्ग की जेल में रखा गया था। वहाँ यूरोपियन वार्ड में एक अलग कमरा उसे दिया गया था। लोग बिना किसी कठिनाई के उससे मिल सकते थे। उसे बाहर से भोजन प्राप्त करने की इजाजत दी गई थी और कौम की ओर से हमेशा उसे सुंदर भोजन बनाकर भेजा जाता था। उसकी हर एक इच्छा पूरी की जाती थी। जिस दिन उसे जेल की सजा मिली वह दिन कौम ने बड़ी धूमधाम से मनाया। कौम का एक भी आदमी उसके जेल जाने से

सरकार के लिए शांति की रक्षा का किसी भी तरह का बंदोबस्त करना जरूरी नहीं था, फिर भी उसने ऐसा बंदोबस्त किया। अदालत में भी रामसुंदर को साधारण अपराधी न मानकर हिंदुस्तानी कौम का प्रतिनिधि माना गया और उसके साथ आदर का व्यवहार किया गया। अदालत उत्सुक हिंदुस्तानियों से खचाखच भर गई थी। रामसुंदर को एक मास की सादी कैद मिली। उसे जोंहानिसबर्ग की जेल में रखा गया था।

निराश नहीं हुआ, बल्कि सारी कौम का उत्साह और जोश बढ़ गया। सैकड़ों हिंदुस्तानी जेल जाने को तैयार हो गए। एशियाटिक आफिस की आशा पूरी नहीं हुई। जर्मिस्टन के हिंदुस्तानी भी परवाना लेने नहीं गए। अधिकारियों के उपर्युक्त कदम से कौम को ही लाभ हुआ। एक महीना पूरा हुआ। रामसुंदर पंडित छूट गया उसे बाजे गाजे के साथ जुलूस में उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ सभा करने का निश्चय हुआ था। सभा में जोशीले भाषण हुए। रामसुंदर को फूलमालाओं से ढक दिया गया। स्वयंसेवकों ने उसके सम्मान में एक दावत दी। और हजारों हिंदुस्तानी यह सोचकर रामसुंदर पंडित से मीठी ईर्ष्या करने लगे कि हम भी जेल में गए होते तो कितना अच्छा होता।

लेकिन रामसुंदर पंडित खोटा सिक्का निकला। उसका बल झूठी सती के जैसा था। एक महीने की कैद से बचना तो संभव था ही नहीं, क्योंकि उसे एकाएक गिरफ्तार किया गया था। और, जेल में उसने जो साहबी भोगी उसके दर्शन भी बाहर उसे कभी नहीं हुए थे। फिर भी स्वच्छंद घूमनेवाला और साथ ही व्यसनी आदमी जेल के एकांतवास को तथा अनेक प्रकार का भोजन मिलने पर भी जेल के संयम को सहन नहीं कर सकता। यही स्थिति रामसुंदर पंडित की हुई। कौम के लोगों का और जेल के अधिकारियों का इतना सम्मान मिलने पर भी जेल उसे कड़वा लगा और वह ट्रान्सवाल तथा सत्याग्रह की लड़ाई को अंतिम नमस्कार करके रातोंरात भाग खड़ा हुआ। प्रत्येक समाज में चतुर आदमी तो होते ही हैं, और जैसे वे किसी समाज में होते हैं वैसे ही किसी आंदोलन में भी होते हैं। वे रामसुंदर की रग-रग से परिचित थे। परंतु उससे भी हिंदुस्तानियों का हित हो सकता है, ऐसा समझ कर उन्होंने रामसुंदर पंडित का गुप्त इतिहास उसका भंडा फूटने से पहले - मुझे कभी जानने ही नहीं दिया। बाद में मुझे पता चला कि रामसुंदर तो अपना गिरमिट पूरा किए बिना ही भागा हुआ एक गिरमिटिया मजदूर था। उसके गिरमिटिया होने की बात यहाँ मैं नफरत से नहीं लिख रहा हूँ। उसके गिरमिटिया होने में कोई दोष नहीं था। पाठक अंत देखेंगे कि सत्याग्रह की लड़ाई को अतिशय सुशोभित करनेवाले तो हिंदुस्तानी गिरमिटिया मजदूर ही थे। यह लड़ाई जीतने में भी उनका बड़े से बड़ा हाथ था।

गिरमिट पूरा करने से पहले भाग आने में जरूर रामसुंदर पंडित का दोष था। परंतु रामसुंदर का पूरा इतिहास मैंने उसका दोष दिखाने के लिए यहाँ नहीं दिया है, यह इतिहास मैंने इस घटना के भीतर छिपे गूढ़ अर्थ को प्रकट करने के लिए ही दिया है। प्रत्येक शुद्ध आंदोलन के नेताओं का यह कर्तव्य है कि वे शुद्ध आंदोलन में शुद्ध आदमियों को ही भरती करें। परंतु बड़ी से बड़ी सावधानी रखने पर भी अशुद्ध आदमियों को शुद्ध आंदोलन से बाहर नहीं रखा जा सकता। फिर भी यदि संचालक निडर और सच्चे हों, तो अनजाने अशुद्ध लोगों के प्रवेश कर जाने से किसी शुद्ध आंदोलन को अंत में हानि नहीं होती। रामसुंदर पंडित का सच्चा रूप खुल जाने पर कौम के लोगों में उसकी कोई कीमत नहीं रह गई। वह बेचारा पंडित मिट गया और केवल रामसुंदर रह गया। कौम उसे भूल गई, परंतु उसकी वजह से भी लड़ाई का बल अवश्य बढ़ा। सत्याग्रह के खातिर उसने कैद की जो सजा भोगी वह व्यर्थ नहीं गई। उसके जेल जाने से लड़ाई का जो बल बढ़ा वह टिका रहा। और उसके उदाहरण से लाभ उठा कर दूसरे कमजोर आदमी अपने-आप लड़ाई से दूर हट गए। ऐसी कमजोरी के दूसरे कुछ उदाहरण भी सामने आए। लेकिन उनका इतिहास मैं नाम-पते के साथ यहाँ देना नहीं चाहता। उसे देने से कोई लाभ नहीं होगा। कौम की कमजोरी और कौम की शक्ति पाठकों के ध्यान से बाहर न रहे, इस खयाल से इतना कह देना आवश्यक है कि रामसुंदर कोई अकेला ही रामसुंदर नहीं थाय परंतु फिर भी मैंने देखा कि सभी रामसुंदरों ने कौम की लड़ाई की तो सेवा ही की थी।

पाठक रामसुंदर को दोषी न समझें। इस जगत में सभी मानव अपूर्ण हैं। किसी को अपूर्णता जब विशेष रूप से हमारे सामने आती है तब हम उसका दोष दिखाने के लिए उस पर अँगुली उठाते हैं। लेकिन वस्तुतः यह हमारी भूल है। रामसुंदर जान- बूझकर कमजोर नहीं बना था। मनुष्य अपने स्वभाव को बदल सकता है, उस पर नियंत्रण रख सकता है, लेकिन उसे जड़मूल से मिटा नहीं सकता। जगत्कर्ता प्रभु ने इतनी स्वतंत्रता मनुष्य को दी ही नहीं है। बाघ यदि अपनी चमड़ी की विचित्रता को बदल सके, तो ही मनुष्य अपने स्वभाव की विचित्रता को बदल सकता है। भागज ानेप रभ ीर ामसुंदरक ोअ पनीक मजोरीक ेि लए कितना पश्चात्ताप हुआ होगा, यह हम कैसे जान सकते हैं? अथवा,क याउ सकाभ ागज ानाह ीउ सकेप श्चात्तापक ा

एक प्रबल प्रमाण नहीं स्वीकार करके वह सदा जेल मुक्त रह सकता था। इतना ही नहीं, वह चाहता तो एशियाटिक अक्कफिस का दलाल बन कर दूसरे हिंदुस्तानियों को भुलावे में डाल सकता था और सरकार का प्रिय आदमी भी बन सकता था। यह सब करने के बजाय कौम को अपनी कमजोरी दिखाने में लज्जा अनुभव करने के कारण उसने अपना मुँह छिपा लिया और ऐसा करके भी उसने हिंदुस्तानी कौम का सेवा ही की, इस तरह का उदार अर्थ हम उसके भागने का क्यों न करें?

इंडियन अधिनियन

मैं पाठकों के सामने सत्याग्रह की लड़ाई के बाहरी और भीतरी सभी साधन रखना चाहता हूँ, इसलिए 'इंडियन ओपीनियन' नामक जो साप्ताहिक आज भी दक्षिण अफ्रीका से प्रकाशित हो रहा है उसका परिचय कराना भी जरूरी है। दक्षिण अफ्रीका में सर्वप्रथम हिंदुस्तानी प्रेस खोलने का श्रेय श्री मदनजीत व्यावहारिक नामक एक गुजराती सज्जन को है। उस प्रेस को कुछ समय तक मुसीबतों के बीच चलाने के बाद उन्होंने एक अखबार निकालने का भी सोचा। इस संबंध में उन्होंने स्व. मनसुखलाल नाजर की और मेरी सलाह ली। अखबार डरबन से निकाला गया। श्री मनसुखलाल नाजर उसके अवैतनिक संपादक बने। अखबार में पहले से ही घाटा आने लगा। अंत में उसमें काम करनेवाले लोगों को साझेदार या साझेदार जैसे बनाकर और एक खेत खरीद कर उसमें उन सबको बसा कर वहाँ से यह अखबार निकालने का निश्चय किया गया। वह खेत डरबन से 13 मील दूर एक सुंदर पहाड़ी पर है। उसके निकट से निकट का रेलवे स्टेशन खेत से 3 मील दूर है और उसका नाम िनिक्स है। अखबार का नाम शुरू से ही 'इंडियन ओपीनियन' रखा गया है। एक समय वह खेत पर अँग्रेजी, गुजराती, तामिल और हिंदी में प्रकाशित होता था। तामिल और हिंदी का बोझ हर तरह से अधिक लगने के कारण, रह सकें ऐसे तामिल और हिंदी लेखक न मिलने के कारण और इन दो भाषाओं के लेखों पर अंकुश न रह सकने के कारण ये दो विभाग बंद कर दिए गए और अँग्रेजी तथा गुजराती विभाग जारी रखे गए। सत्याग्रह की लड़ाई शुरू हुई तब इन्हीं दो भाषाओं में 'इंडियन ओपीनियन' निकलता था। खेत पर बसकर संस्था में काम करनेवाले लोगों में गुजराती, हिंदी भाषी (उत्तर भारतीय), तामिल और अँग्रेज सभी थे। श्री मनसुखलाल नाजर की असामयिक मृत्यु के बाद एक अँग्रेज मित्र हर्बर्ट किचन 'इंडियन ओपीनियन' के संपादक रहे। उसके बाद संपादक के पद पर श्री हेनरी पोलाक ने लंबे समय तक कार्य किया। मेरे और श्री पोलाक के जेल-निवास के दिनों में भले पादरी स्व. जोसफ डोक भी अखबार के संपादक रहे। इस अखबार के द्वारा कौम के लोगों को हर सप्ताह के संपूर्णस माचारोंस`अ च्छीत रहप रिचितर खाज ास कता था।स ाप्ताहिकक`अ ँग्रेजी ि वभागद्व ाराए`सेि हंदुस्तानियों को सत्याग्रह की थोड़ी-बहुत तालीम मिलती थी, जो गुजराती नहीं जानते थे और हिंदुस्तान, इंग्लैंड तथा दक्षिण अफीका के अंग्रेजों के लिए तो 'इंडियन ओपीनियन' एक साप्ताहिक समाचार पत्र की गरज पूरी करता था। मेरा यह विश्वास है कि जिस लड़ाई का मुख्य आधार आंतरिक बल पर है, वह लड़ाई अखबार के बिना लड़ी जा सकती हैय परंतु इसके साथ मेरा यह अनुभव भी है कि श्इंडियन ओपीनियनश के होने से हमें अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई, कौम को आसानी से सत्याग्रह की शिक्षा दी जा सकी, और दुनिया में जहाँ कहीं भी हिंदुस्तानी रहते थे वहाँ सत्याग्रह-संबंधी घटनाओं के समाचार फैलाए जा सके। यह सब अन्य किसी साधन से शायद संभव न होता। इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है। कि सत्याग्रह की लड़ाई लड़ने के साधनों में इंडियन ओपीनियनश भी एक अत्यंत उपयोगी और प्रबल साधन था।

दक्षिण अफ्रीका में सर्वप्रथम हिंदुस्तानी प्रेस खोलने का श्रेय श्री मदनजीत व्यावहारिक नामक एक गुजराती सज्जन को है। उस प्रेस को कुछ समय तक मुसीबतों के बीच चलाने के बाद उन्होंने एक अखबार निकालने का भी सोचा। इस संबंध में उन्होंने स्व. मनसुखलाल नाजर की और मेरी सलाह ली। अखबार डरबन से निकाला गया। श्री मनसुखलाल नाजर उसके अवैतनिक संपादक बने। अखबार में पहले से ही घाटा आने लगा।

जिस प्रकार लड़ाई के दिनों में और लड़ाई के अनुभवों के फलस्वरूप कौम में अनेक परिवर्तन हुए, उसी प्रकार श्इंडियन ओपीनियन में भी हुए। पहले उस

साप्ताहिक में विज्ञापन लिए जाते थे। प्रेस में बाहर का फुटकर काम भी छापने के लिए स्वीकार किया जाता था। मैंने देखा कि इन दोनों कामों में हमारे अच्छे से अच्छे आदमियों को लगाना पड़ता था। विज्ञापन लेने ही हों तो कौन से विज्ञापन लिए जाएँ और कौन से न लिए जाएँ –

इसका निर्णय करने में हमेशा ही धर्म-संकट खड़े होते थे। इसके सिवा, किसी आपत्तिजनक विज्ञापन को न लेने का मन हो, परंतु विज्ञापन देनेवाला कौम का कोई अग्रगण्य व्यक्ति हो, तो उसके बुरा मान जाने के भय से भी हमें न लेने योग्य विज्ञापन लेने के प्रलोभन में फँसना पड़ता था। विज्ञापन प्राप्त करने में और छपे हुए विज्ञापनों के पैसे वसूल करने में हमारे अच्छे से अच्छे आदमियों का समय खर्च होता था और विज्ञापनदाताओं की खुशामद करनी पड़ती सो अलग। इसके साथ यह विचार भी आया कि यदि अखबार पैसा कमाने के लिए नहीं बल्कि केवल कौम की सेवा के लिए ही चलाना हो, तो वह सेवा जबरदस्ती नहीं की जानी चाहिए कौम चाहे तो ही उसकी सेवा हमें करनी चाहिए। और कौम की इच्छा का स्पष्ट प्रमाण यही माना जाएगा कि कौम के लोग काफी बड़ी संख्या में साप्ताहिक के ग्राहक बनकर उसका खर्च उठा लें। इसके सिवा, हमने यह भी सोचा कि अखबार चलाने के लिए उसका मासिक खर्च निकालने की दृष्टि से कुछ व्यापारियों को सेवा भाव के नाम पर अपने विज्ञापन देने की बात समझाने की अपेक्षा यदि कौम के आम लोगों को 'इंडियन ओपीनियन' खरीदने का कर्तव्य समझाया जाए, तो वह ललचाने वाले लोगों और ललचाए जानेवाले लोगों दोनों के लिए कितनी सुंदर शिक्षा हो सकती है? इन सारी बातों पर हमने सोच-विचार किया और उस पर तुरंत अमल भी किया। इसका नतीजा यह हुआ कि जो कार्यकर्ता विज्ञापन-विभाग की झंझटों में फँसे रहते थे, वे अब अखबार को सुंदर बनाने के प्रयत्नों में लग गए। कौम के लोग तुरंत समझ गए कि 'इंडियन ओपीनियन' की मालिकी और उसे चलाने की जिम्मेदारी दोनों उनके हाथ में है। इसके फलस्वरूप हम सब कार्यकर्ता निश्चिंत हो गए। कौम अखबार की माँग करे तब तक उसे निकालने के लिए पूरी मेहनत करने की चिंता ही हमारे सिर पर रह गई, और किसी भी हिंदुस्तानी का हाथ पकड़ कर उससे 'इंडियन ओपीनियन' का ग्राहक बनने की बात कहने में न केवल हमें लज्जा नहीं आती थी, बल्कि ऐसा कहना हम अपना धर्म समझते थे 'इंडियन ओपीनियन' की आंतरिक शक्ति में और उसके स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ और वह एक महाशक्ति बन गया। उसकी ग्राहक संख्या, जो सामान्यत: 1200 से 1500 तक रहती थी, दिनोंदिन बढ़ने लगी। उसका वार्षिक चंदा हमें बढ़ाना पड़ा था, फिर भी जब सत्याग्रह की लड़ाई ने उग्र रूप धारण किया।

उस समय उसके ग्राहकों की संख्या 3500 तक पहुँच गई थी। 'इंडियन ओपीनियन' के पाठकों की संख्या अधिक से अधिक 20000 मानी जा सकती है। इतने पाठकों के बीच उसकी 3000 से ऊपर प्रतियाँ बिकना आश्चर्यजनक फैलाव कहा जाएगा। कौम ने 'इंडियन ओपीनियन' को इस हद तक अपना बना लिया था कि यदि निश्चित समय पर उसकी प्रतियाँ जोहानिसबर्ग न पहुँचती तो मुझ पर शिकायतों की झड़ी लग जाती थी। प्राय: रविवार को सुबह साप्ताहिक जोहानिसबर्ग पहुँचा जाता था। मैं जानता हूँ कि बहुत से हिंदुस्तानी अखबार पहुँचने पर सबसे पहला काम उसके गुजराती विभाग को आदि से अंत तक पढ़ जाने का करते थे। एक आदमी पढ़ता था और दस-पंद्रह आदमी उसके आसपास बैठकर सुनते थे। हम गरीब ठहरे, इसलिए कुछ लोग साझे में भी श्इंडियन ओपीनियन खरीदते थे।

प्रेस में बाहर का फुटकर काम लेना उसी तरह बंद कर दिया गया था, जिस तरह विज्ञापन लेना बंद कर दिया गया था। उसे बंद गया था, जिस तरह विज्ञापन लेना बंद कर दिया गया था। उसे बंद , करने के कारण प्राय: वैसे ही थे जैसे विज्ञापन न लेने के थे। यह काम बंद करने से कंपोजिटरों का जो समय बचा उसका उपयोग प्रेस द्वारा पुस्तकें प्रकाशित करने में हुआ। और कौम जानती थी कि पुस्तकें प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य धन कमाना नहीं था। चूँकि ये पुस्तकें केवल लड़ाई को सहायता पहुँचाने के लिए ही छापी जाती थीं, इसलिए उनकी बिक्री भी अच्छी होने लगी। इस प्रकार 'इंडियन ओपीनियन' और प्रेस दोनों ने सत्याग्रही लड़ाई में भाग लिया। और यह स्पष्ट रूप से देखा गया था कि जैसे-जैसे सत्याग्रह की जड़ कौम में जमती गई वैसे सत्याग्रह की दृष्टि से साप्ताहिक की और उसके प्रेस की नैतिक प्रगति भी होती गई।

('दक्षिण अफ्रिका का इतिहास' से साभार।)

एक भारत-श्रेष्ठ भारत

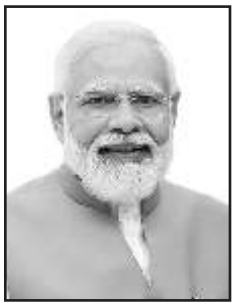

श्री नरेंद्र मोदी

मेरे प्यारे परिवारजनों, नमस्कार। 'मन की बात' में आपका एक बार फिर स्वागत है। ये एपिसोड ऐसे समय में हो रहा है जब पूरे देश में त्योहारों की उमंग है आप सभी को आने वाले सभी त्योहारों की बहुत-बहुत बधाइयाँ।

साथियो, त्योहारों की इस उमंग के बीच, दिल्ली की एक खबर से ही मैं 'मन की बात' की शुरुआत करना चाहता हूँ। इस महीने की शुरुआत में गांधी जयन्ती के अवसर पर दिल्ली में खादी की रिकॉर्ड बिक्री हुई। यहाँ कनॉट प्लेस में, एक ही खादी स्टोर में, एक ही दिन में, डेढ़ करोड़ रुपये से ज्यादा का सामान लोगों ने खरीदा। इस महीने चल रहे खादी महोत्सव ने एक बार फिर बिक्री के अपने सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। आपको एक और बात जानकार भी बहुत अच्छा लगेगा, दस साल पहले देश में जहां खादी प्रोडक्ट्स की बिक्री बड़ी मुश्किल से 30 हजार करोड़ रुपये से भी कम की थी, अब ये बढ़कर सवा लाख करोड़ रूपए के आसपास पहुँच रही है। खादी की बिक्री बढ़ने का मतलब है इसका फायदा शहर से लेकर गाँव तक में अलग-अलग वर्गों तक पहुंचता है। इस बिक्री का लाभ हमारे बुनकर, हस्तशिल्प के कारीगर, हमारे किसान, आयुर्वेदिक पौधे लगाने वाले कुटीर उद्योग सबको लाभ मिल रहा है, और, यही तो, 'वोकल फॉर लोकल' अभियान की ताकत है और धीरे-धीरे आप सब देशवासियों का समर्थन भी बढ़ता जा रहा है।

साथियो, आज मैं अपना एक और आग्रह आपके सामने दोहराना चाहता हूँ और बहुत ही आग्रहपूर्वक दोहराना चाहता हूँ। जब भी आप पर्यटन पर जाएं, तीर्थाटन पर जाएं, तो वहां के स्थानीय कलाकारों के द्वारा बनाए गए उत्पादों को जरुर खरीदें। आप अपनी उस यात्रा के कुल बजट में स्थानीय उत्पादों की खरीदी को एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में जरूर रखें। 10 परसेंट हो, 20 परसेंट हो, जितना आपका बजट बैठता हो, लोकल पर जरुर खर्च करिएगा और वहीं पर खर्च कीजिएगा।

साथियो, हर बार की तरह, इस बार भी, हमारे त्योहारों में, हमारी प्राथमिकता हो 'वोकल फॉर लोकल' और हम मिलकर उस सपने को पूरा करें, हमारा सपना है 'आत्मनिर्भर भारत'। इस बार ऐसे प्रोडक्ट से ही घर को रोशन करें जिसमें मेरे किसी देशवासी के पसीने की महक हो, मेरे देश के

आज मैं अपना एक और आग्रह आपके सामने दोहराना चाहता हूँ और बहुत ही आग्रहपूर्वक दोहराना चाहता हूँ। जब भी आप पर्यटन पर जाएं, तीर्थाटन पर जाएं, तो वहां के स्थानीय कलाकारों के द्वारा बनाए गए उत्पादों को जरुर खरीदें। आप अपनी उस यात्रा के कुल बजट में स्थानीय उत्पादों की खरीदी को एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में जरूर रखें।

किसी युवा का talent हो, उसके बनने में मेरे देशवासियों को रोजगार मिला हो, रोजमर्रा की जिन्दगी की कोई भी आवश्यकता हो – हम लोकल ही लेंगे। लेकिन, आपको, एक और बात पर गौर करना होगा। 'वोकल फॉर लोकल' की ये भावना सिर्फ त्योहारों की खरीदारी तक के लिए ही सीमित नहीं है और कहीं तो मैंने देखा है, दीवाली का दीया लेते हैं और फिर सोशल मीडिया पर डालते हैं 'वोकल फॉर लोकल' – नहीं जी, वो तो शुरुआत है। हमें बहुत आगे बढना है, जीवन की हर आवश्यकता –हमारे देश में, अब, सब कुछ उपलब्ध है। ये अपेपवद केवल छोटे दुकानदारों और रेहड़ी–पटरी से सामान लेने तक सीमित नहीं है। आज भारत, दुनिया का बड़ा manufacturing HUB बन रहा है। कई बड़े brand यहीं पर अपने product को तैयार कर रहे हैं। अगर हम उन प्रोडक्ट को अपनाते हैं, तो, Make in India को बढ़ावा मिलता है, और, ये भी, 'लोकल के लिए वोकल' ही होना होता है, और हाँ, ऐसे प्रोडक्ट को खरीदते समय हमारे देश की शान UPI digital payment system से payment करने के आग्रही बनें, जीवन में आदत डालें, और उस प्रोडक्ट के साथ, या, उस कारीगर के साथ selfie NamoApp पर मेरे साथ share करें और वो भी Made in India smart phone से। मैं उनमें से कुछ post को सोशल मीडिया पर share करूँगा ताकि दूसरे लोगों को भी 'वोकल फॉर लोकल' की प्रेरणा मिले।

साथियो, जब आप, भारत में बने, भारतीयों द्वारा बनाएग एउ त्पादोंस अ पनीद ीवालीर ौशनक रेंगे,अ पने परिवार की हर छोटी–मोटी आवश्यकता लोकल से पूरी करेंगे तो दीवाली की जगमगाहट और ज्यादा बढ़ेगी ही बढ़ेगी, लेकिन, उन कारीगरों की जिंदगी में, एक, नयी दीवाली आयेगी, जीवन की एक सुबह आयेगी, उनका जीवन शानदार बनेगा। भारत को आत्मनिर्भर बनाइए, 'Make in India' ही चुनते जाइए, जिससे आपके साथ–साथ और भी करोड़ों देशवासियों की दीवाली शानदार बने, जानदार बने, रौशन बने, दिलचस्प बने।

मेरे प्यारे देशवासियो, 31 अक्टूबर का दिन हम सभी के लिए बहुत विशेष होता है। इस दिन हमारे लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म–जयंती मनाते हैं। हम भारतवासी, उन्हें, कई वजहों से याद करते हैं, और श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। सबसे बड़ी वजह है – देश की 580स ज यादा रियासतोंक ोज ोड़नेम ंउ नकीअ तुलनीय भूमिका। हम जानते हैं हर साल 31 अक्टूबर को गुजरात में Statue of Unity पर एकता दिवस से जुड़ा मुख्य समारोह होता है। इस बार इसके अलावा दिल्ली में कर्तव्य पथ पर एक बहुत ही विशेष कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। आपको याद होगा, मैंने पिछले दिनों देश के हर गाँव से, हर घर से मिट्टी संग्रह करने का आग्रह किया गया था। हर घर से मिट्टी संग्रह करने के बाद उसे कलश में रखा गया और फिर अमृत कलश यात्राएं निकाली गईं। देश के कोने–कोने से एकत्रित की गयी ये माटी, ये हजारों अमृत कलश यात्राएं अब दिल्ली पहुँच रही हैं। यहाँ दिल्ली में उस मिट्टी को एक विशाल भारत कलश में डाला जाएगा और इसी पवित्र मिट्टी से दिल्ली में 'अमृत वाटिका' का निर्माण होगा। यह देश की राजधानी के हृदय में अमृत महोत्सव की भव्य विरासत के रूप में मौजूद रहेगी। 31 अक्टूबर को ही देशभर में पिछले ढ़ाई साल से चल रहे आजादी के अमृत महोत्सव का समापन होगा। आप सभी ने मिलकर इसे दुनिया में सबसे लंबे समय तक चलने वाले महोत्सव में से एक बना दिया। अपने सेनानियों का सम्मान हो या फिर हर घर तिरंगा, आजादी के अमृत महोत्सव में, लोगों ने अपने स्थानीय इतिहास को, एक नई पहचान दी है। इस दौरान सामुदायिक सेवा की भी अद्भुत मिसाल देखने को मिली है।

साथियो, मैं आज आपको एक और खुशखबरी सुना रहा हूँ, विशेषकर मेरे नौजवान बेटे–बेटियों को, जिनके दिलों में देश के लिए कुछ करने का जज्बा है, सपने हैं, संकल्प हैं। ये खुशखबरी देशवासियों के लिए तो है ही है, मेरे नौजवान साथियों आपके लिए विशेष है। दो दिन बाद ही 31 अक्टूबर को एक बहुत बड़े राष्ट्रव्यापी संगठन की नींव रखी जा रही है और वो भी सरदार साहब की जन्मजयन्ती के दिन। इस संगठन का नाम है – मेरा युवा भारत, यानी MYBharat- MYBharat संगठन, भारत के युवाओं को राष्ट्रनिर्माण के विभिन्न आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देगा। ये, विकसित भारत के निर्माण में भारत की युवा शक्ति को एकजुट करने का एक अनोखा प्रयास है। मेरा युवा भारत की वेबसाइट

MYBharat भी शुरू होने वाली है। मैं युवाओं से आग्रह करूँगा, बार–बार आग्रह करूंगा कि आप सभी मेरे देश के नौजवान, आप सभी मेरे देश के बेटे–बेटी MYBharat.Gov.in पर register करें और विभिन्न कार्यक्रम के लिए Sign Up करें। 31 अक्टूबर को पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी की पुण्यतिथि भी है। मैं उन्हें भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मेरे परिवारजनों, हमारा साहित्य, literature, एक भारत–श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रगाढ़ करने के सबसे बेहतरीन माध्यमों में से एक है। मैं आपके साथ तमिलनाडु की गौरवशाली विरासत से जुड़े दो बहुत ही प्रेरक प्रयासों को साझा करना चाहता हूँ। मुझे तमिल की प्रसिद्ध लेखिका बहन शिवशंकरी जी के बारे में जानने का अवसर मिला है। उन्होंने एक Project किया है – Knit India, Through Literature इसका मतलब है – साहित्य से देश को एक धागे में पिरोना और जोड़ना। वे इस Project पर बीते 16 सालों से काम कर रही है। इस Project के जरिए उन्होंने 18 भारतीय भाषाओं में लिखे साहित्य का अनुवाद किया है। उन्होंने कई बार कन्याकुमारी से कश्मीर तक और इंफाल से जैसलमेर तक देशभर में यात्राएँ की, ताकि अलग – अलग राज्यों के लेखकों और कवियों के Interview कर सकें। शिवशंकरी जी ने अलग – अलग जगहों पर अपनी यात्रा की, travel commentary के साथ उन्हें Publish किया है। यह तमिल और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है। इस Project में चार बड़े volumes हैं और हर volume भारत के अलग–अलग हिस्से को समर्पित है। मुझे उनकी इस संकल्प शक्ति पर गर्व है।

साथियो, कन्याकुमारी के थिरु ए. के. पेरूमल जी का काम भी बहुत प्रेरित करने वाला है। उन्होंने तमिलनाडु के ये जो storytelling tradition है उसको संरक्षित करने का सराहनीय काम किया है। वे अपने इस मिशन में पिछले 40 सालों से जुटे हैं। इसके लिए वे तमिलनाडु के अलग–अलग हिस्सों में Travel करते हैं और FolkArt Forms को खोज कर उसे अपनी Book का हिस्सा बनाते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि उन्होंने अब तक ऐसी करीब 100 किताबें लिख डाली हैं। इसके अलावा पेरूमल जी का एक और भी Passion है। तमिलनाडु के Temple Culture के बारे में Research करना उन्हें बहुत पसंद है। उन्होंने Leather Puppets पर भी काफी Research की है, जिसका लाभ वहाँ के स्थानीय लोक कलाकारों को हो रहा है। शिवशंकरी जी और ए. के. पेरूमल जी के प्रयास हर किसी के लिए एक मिसाल हैं। भारत को अपनी संस्कृति को सुरक्षित करने वाले ऐसे हर प्रयास पर गर्व है, जो हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के साथ ही देश का नाम, देश का मान, सब कुछ बढ़ाये।

मेरे परिवारजनों, आने वाले 15 नवंबर को पूरा देश जनजातीय गौरव दिवस मनाएगा। यह विशेष दिन भगवान बिरसा मुंडा की जन्म–जयंती से जुड़ा है। भगवान बिरसा मुंडा हम सब के ह्रदय में बसे हैं। सच्चा साहस क्या है और अपनी संकल्प शक्ति पर अडिग रहना किसे कहते हैं, ये हम उनके जीवन से सीख सकते हैं। उन्होंने विदेशी शासन को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने ऐसे समाज की परिकल्पना की थी, जहाँ अन्याय के लिए कोई जगह नहीं थी। वे चाहते थे कि हर व्यक्ति को सम्मान और समानता का जीवन मिले। भगवान बिरसा मुंडा ने प्रकृति के साथ सद्भाव से रहना इस पर भी हमेशा जोर दिया। आज भी हम देख सकते हैं कि हमारे आदिवासी भाई–बहन प्रकृति की देखभाल और उसके संरक्षण के लिए हर तरह से समर्पित हैं। हम सब के लिए, हमारे आदिवासी भाई–बहनों का ये काम बहुत बड़ी प्रेरणा है।

> ***एक भारत–श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रगाढ़ करने के सबसे बेहतरीन माध्यमों में से एक है। मैं आपके साथ तमिलनाडु की गौरवशाली विरासत से जुड़े दो बहुत ही प्रेरक प्रयासों को साझा करना चाहता हूँ। मुझे तमिल की प्रसिद्ध लेखिका बहन शिवशंकरी जी के बारे में जानने का अवसर मिला है। उन्होंने एक Project किया है - Knit India, Through Literature इसका मतलब है - साहित्य से देश को एक धागे में पिरोना और जोड़ना।***

साथियो, कल यानि 30 अक्टूबर को गोविन्द गुरु जी की पुण्यतिथि भी है। हमारे गुजरात और राजस्थान के आदिवासी और वंचित समुदायों के जीवन में गोविन्द गुरु जी का बहुत विशेष महत्व रहा है। गोविन्द गुरु जी को भी

मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। नवंबर महीने में हम मानगढ़ नरसंहार की बरसी भी मनाते हैं। मैं उस नरसंहार में, शहीद माँ भारती की, सभी संतानों को नमन करता हूँ।

साथियो, भारतवर्ष में आदिवासी योद्धाओं का समृद्ध इतिहास रहा है। इसी भारत भूमि पर महान तिलका मांझी ने अन्याय के खिलाफ बिगुल फूंका था। इसी धरती से सिद्धो-कान्हू ने समानता की आवाज उठाई। हमें गर्व है कि जिन योद्धा टंटडा भील ने हमारी धरती पर जन्म लिया। हम शहीद वीर नारायण सिंह को पूरी श्रद्धा के साथ याद करते हैं, जो कठिन परिस्थितियों में अपने लोगों के साथ खड़े रहे। वीर रामजी गोंड हों, वीर गुंडाधुर हों, भीमा नायक हों, उनका साहस आज भी हमें प्रेरित करता है। अल्लूरी सीताराम राजू ने आदिवासी भाई-बहनों में जो अलख जगाई, उसे देश आज भी याद करता है। North East में कियांग नोबांग और रानी गाइदिन्ल्यू जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से भी हमें काफी प्रेरणा मिलती है। आदिवासी समाज से ही देश को राजमोहिनी देवी और रानी कमलापति जैसी वीरांगनाएं मिलीं। देश इस समय आदिवासी समाज को प्रेरणा देने वाली रानी दुर्गावती जी की 500वीं जयंती मना रही हैं। मैं आशा करता हूँ कि देश के अधिक से अधिक युवा अपने क्षेत्र की आदिवासी विभूतियों के बारे में जानेंगे औरउ नसेप्र ेरणाल ेंगे।द ेशअ पनेअ ादिवासीस माजक ा कृतज्ञ है, जिन्होंने राष्ट्र के स्वाभिमान और उत्थान को हमेशा सर्वोपरि रखा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, त्योहारों के इस मौसम में, इस समय देश में Sports का भी परचम लहरा रहा है। पिछले दिनों Asian Games के बाद ParaAsian Games में भी भारतीय खिलाड़ियों ने जबरदस्त कामयाबी हासिल की है। इन खेलों में भारत ने 111 मेडल जीतकर एक नया इतिहास रच दिया है। मैं ParaAsian Games में हिस्सा लेने वाले सभी ाthletes को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

सथियो, मैं आपका ध्यान Special Olympics World Summer Games की ओर भी ले जाना चाहता हूँ। इसका आयोजन बर्लिन में हुआ था। ये प्रतियोगिता हमारे Intellectual Disabilities वाले एथलीटों की अद्‌भुत क्षमता को सामने लाती है। इस प्रतियोगिता में भारतीय दल ने 75 Gold Medals सहित 200 पदक जीते। Roller skating हो, Beach Volleyball हो, Football हो, या Tennis, भारतीयर्ा खलाड़ियोंन े Medalsक ाझ ड़ील गा दी। इन पदक विजेताओं की Life Journey काफी Inspiring रहीह ै।ह रियाणाक ेर णवीरस ैनीन े Golf में Gold Medal जीताह ै।ब चपनस ेह ीlutism सेज ूझर हे रणवीरक ेि लएक ोईभ ीच ुनौती Golf कोल ेकरउ नके जुनून को कम नहीं कर पाई। उनकी माँ तो यहाँ तक कहती हैं कि परिवार में आज सब Golfer बन गए हैं। पुडुचेरी के 16 साल के टी-विशाल ने चार Medal जीते। गोवा की सिया सरोदे ने Powerlifting में 2 Gold Medals सहित चार पदक अपने नाम किये। 9 साल की उम्र में अपनी माँ को खोने के बाद भी उन्होंने खुद को निराश नहीं होने दिया। छत्तीसगढ़ के दुर्ग के रहने वाले अनुराग प्रसाद ने Powerlifting में तीन Gold और एक Silver Medal जीता है। ऐसे ही प्रेरक गाथा झारखंड के इंदु प्रकाश की है, जिन्होंने Cycling में दो Medal जीते हैं। बहुत ही साधारण परिवार से आने के बावजूद, इंदु ने गरीबी को कभी अपनी सफलता के सामने दीवार नहीं बनने दिया। मुझे विश्वास है कि इन खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की सफलता Intellectual Disabilities का मुकाबला कर रहे अन्य बच्चों और परिवारों को भी प्रेरित करेगी। मेरी आप सब से भी प्रार्थना है आपके गाँव में, आपके गाँव के अगल-बगल में, ऐसे बच्चे, जिन्होंने इस खेलकूद में हिस्सा लिया है या विजयी हुए हैं, आप सपरिवार उनके साथ जाइए। उनको बधाई दीजिये। और कुछ पल उन बच्चों के साथ बिताइए। आपको एक नया ही अनुभव होगा। परमात्मा ने उनके अन्दर एक ऐसी शक्ति भरी है आपको भी उसके दर्शन का मौका मिलेगा। जरुर जाइएगा।

मेरे परिवारजनों, आप सभी ने गुजरात के तीर्थक्षेत्र अंबाजी मंदिर के बारे में तो अवश्य ही सुना होगा। यह एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ है, जहां देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु मां अंबे के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। यहां गब्बर पर्वत के रास्ते में आपको विभिन्न प्रकार की योग मुद्राओं और आसनों की प्रतिमाएं दिखाई देंगी। क्या आप जानते हैं किइ नप्र तिमाओंक ेख ाासक याब ातह ै? द रअसलय े Scrap से बने Sculpture हैं, एक प्रकार से कबाड़ से बने हुए और जो बेहद अद्‌भुत हैं। यानि ये प्रतिमाएं इस्तेमाल हो

चुकी, कबाड़ में फेक दी गयी पुरानी चीजों से बनाई गई हैं। अंबाजी शक्ति पीठ पर देवी मां के दर्शन के साथ–साथ ये प्रतिमाएं भी श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन गई हैं। इस प्रयास की सफलता को देखकर, मेरे मन में एक सुझाव भी आ रहा है। हमारे देश में बहुत सारे ऐसे लोग हैं, जो ॅजम से इस तरह की कलाकृतियां बना सकते हैं। तो मेरा गुजरात सरकार से आग्रह है कि वो एक प्रतियोगिता शुरू करेअ ौरए ेसेल ेगोंक ेअ ामंत्रितक रे ाय ेप्र यास,ग ब्बर पर्वत का आकर्षण बढ़ाने के साथ ही, पूरे देश में 'Waste to Wealth' अभियान के लिए लोगों को प्रेरित करेगा।

साथियो,ज बभ ीस् वच्छभ ारतअ ौर' 3 'क ीब ात आती है, तो हमें, देश के कोने–कोने से अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते हैं। असम के Kamrup Metropolitan District में lkshar Forum इस नाम का एक ैबीववस बच्चों में, Sustainable Development की भावना भरने का, संस्कार का, एक निरंतर काम कर रहा है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थी हर हफ्ते Plastic Waste जमा करते हैं, जिसका उपयोग Eco & Friendly ईटें और चाबी की बेंपद जैसे सामान बनाने में होता है। यहां Students को Recycling और Plastic Waste ls Products बनाना भी सिखायाज ाताह ै।क मअ ायुम ेंह ीप र्यावरणक ेप्र तिय े जागरूकता, इन बच्चों को देश का एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाने में बहुत मदद करेगी।

मेरे परिवारजनों, आज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहाँ हमें नारी शक्ति का सामर्थ्य देखने को नहीं मिल रहा हो। इस दौर में, जब हर तरफ उनकी उपलब्धियों को सराहा जा रहा है, तो हमें भक्ति की शक्ति को दिखाने वाली एक ऐसी महिला संत को भी याद रखना है, जिसका नाम इतिहास के सुनहरे पन्नो में दर्ज है। देश इस वर्ष महान संत मीराबाई की 525वीं जन्म–जयंती मना रहा है। वो देशभर के लोगों के लिए कई वजहों से एक प्रेरणाशक्ति रही हैं। अगर किसी की संगीत में रूचि हो, तो वो संगीत के प्रति समर्पण का बड़ा उदाहरण ही है, अगर कोई कविताओं का प्रेमी हो, तो भक्तिरस में डूबे मीराबाई के भजन, उसे अलग ही आनंद देते हैं, अगर कोई दैवीय शक्ति में विश्वास रखता हो, तो मीराबाई का श्रीकृष्ण में लीन हो जाना उसके लिए एक बड़ी प्रेरणा बन सकता है। मीराबाई, संत रविदास को अपना गुरु मानती थी। वो कहती भी थी–

गुरु मिलिया रैदास, दीन्ही ज्ञान की गुटकी।

देश की माताओं–बहनों और बेटियों के लिए मीराबाई आज भी प्रेरणापुंज हैं। उस कालखंड में भी उन्होंने अपने भीतर की आवाज को ही सुना और रुढ़िवादी धारणाओं के खिलाफ खड़ी हुई। एक संत के रूप में भी वे हम सबको प्रेरित करती हैं। वे भारतीय समाज और संस्कृति को तब सशक्त करने के लिए आगे आई, जब देश कई प्रकार के हमले झेल रहा था। सरलता और सादगी में कितनी शक्ति होती है, ये हमें मीराबाई के जीवनकाल से पता चलता है। मैं संत मीराबाई को नमन करता हूं।

मेरे प्यारे परिवारजनों, इस बार 'मन की बात' में इतना ही। आप सबके साथ होने वाला हर संवाद मुझे नई ऊर्जा से भर देता है। आपके संदेशों में उम्मीद और Positivity से जुड़ी सैकड़ों गाथाएं मुझ तक पहुंचती रहती हैं। मेरा फिर से आपसे आग्रह है – आत्मनिर्भर भारत अभियान पर बल दें। स्थानीय उत्पाद खरीदें, लोकल के लिए वोकल बनें। जैसे आप अपने घरों को स्वच्छ रखते हैं, वैसे ही अपने मोहल्ले और शहर को स्वच्छ रखें और आपको पता है, 31 अक्टूबर सरदार साहब की जयंती, देश, एकता के दिवस के रूप में मनाती है, देश के अनेक स्थानों पर Run for Unity के कार्यक्रम होते है, आप भी 31 अक्टूबर को Run for Unity के कार्यक्रम को आयोजित करें। बहुत बड़ी मात्रा में आप भी जुडें, एकता के संकल्प को मजबूत करें। एक बार फिर मैं आने वाले त्योहारों के लिए अनेक–अनेक शुभकामनाएं देता हूँ। आप सभी परिवार समेत खुशियां मनाएं, स्वस्थ रहें, आनंद में रहें, यही मेरी कामना है। और हाँ दिवाली के समय कहीं ऐसी गलती न हो जाये, कि कहीं आग की कोई घटनाएं हो जाए। किसी के जीवन को खतरा हो जाए तो आप जरुर संभालिये, खुद को भी संभालिये और पूरे क्षेत्र को भी संभालिये। बहुत बहुत शुभकामनाएं। बहुत–बहुत धन्यवाद।

(मन की बात की 106वीं कड़ी में प्रधानमंत्री का सम्बोधन)

'महात्मा गांधी के साथ वर्धा में'

परम हंस योगानंद

'वर्धा में आपका स्वागत है!' महात्मा गांधी के सचिव श्री महादेव देसाई ने इन शब्दों के साथ खद्दर की मालाएँ भेंट करते हुए मिस ब्लेच, श्री राइट और मेरा स्वागत किया। अगस्त महीने की एक सुबह हम लोग वर्धा स्टेशन पर पहुँचे ही थे। ट्रेन की धूल और गर्मी से मुक्ति पाने की हमें खुशी हो रही थी। अपना सारा सामान एक बैलगाड़ी के हवाले कर हम लोग श्री देसाई और उनके साथी बाबासाहेब देशमुख एवं डॉक्टर पिंगले के साथ एक खुली कार में बैठ गये। कीचड़ भरी कच्ची सड़क पर चलकर कार थोड़ी ही देर में भारत के राजनीतिक संत के आश्रम ''मगनवाड़ी'' में पहुँच गयी।

श्री देसाई हमें सीधे लेखन-कक्ष में ले गये, जहाँ पालथी लगाकर बैठे थे महात्मा गांधी। एक हाथ में कलम, दूसरे में कागज, चेहरे पर विस्तृत, दूसरों को जीत लेने वाली, अंत:करणपूर्ण मुस्कान !

'स्वागत है!' हिंदी में उन्होंने लिखा, क्योंकि यह सोमवार था सप्ताह का उनका मौन-दिवस । -

हम दोनों की यह पहली ही मुलाकात थी, फिर भी दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर अत्यंत प्रेम और खुशी के साथ मुस्कुरा रहे थे । 1925 में महात्मा गांधी ने राँची के मेरे विद्यालय में पधार कर उसे सम्मानित किया था और वहाँ की अतिथि-पुस्तिका में प्रशंसा के शब्द लिखे थे।

मात्र एक सौ पौण्ड वजन के इस क्षीणकाय सन्त के शरीर से शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य की आभा प्रकट हो रही थी। उनकी हल्की भूरी-सी आँखों में बुद्धि, ईमानदारी और विवेक का तेज था। इस राजनीतिज्ञ ने हजारों कानूनी, सामाजिक और राजनीतिक लड़ाइयों में विजय पायी थी। महात्मा गांधी ने भारत की कोटि-कोटि अशिक्षित जनता के हृदय में अपना जो अटल स्थान बनाया है, वैसा स्थान अपनी जनता के हृदयों में विश्व के किसी अन्य नेता ने नहीं बनाया। उनकी विख्यात उपाधि 'महात्मा' (महान् आत्मा) उनके प्रति जनता के सहज आदर एवं प्रेम की निशानी है। उनकी खातिर ही गांधीजी केवल धोती पहनकर रहते हैं, जब कि उनके इस पोशाक पर सब तरफ व्यंग्यचित्र बनाये जाते हैं। यह पोशाक पददलित जनता के साथ उनकी एकात्मता का प्रतीक है, जो इससे अधिक कुछ पहन नहीं सकती।

''यहाँक ेस बअ ाश्रमवासीअ ापकीस ेवाम ेंउ पस्थितह ैं।अ ापको कोई भी काम पड़े तो कृपया इन्हें बुला लीजिये।'' श्री देसाई हमें लेखन-

हम दोनों की यह पहली ही मुलाकात थी, फिर भी दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर अत्यंत प्रेम और खुशी के साथ मुस्कुरा रहे थे । 1925 में महात्मा गांधी ने राँची के मेरे विद्यालय में पधार कर उसे सम्मानित किया था और वहाँ की अतिथि-पुस्तिका में प्रशंसा के शब्द लिखे थे।

कक्ष से अतिथि भवन की ओर ले जा ही रहे थे कि गांधीजी ने जल्दी- जल्दी में लिखा यह पर्चा अपने स्वभावगत विनय के साथ मेरे हाथ में दे दिया।

श्री देसाई हम लोगों को फलोद्यानों और पुष्पवाटिकाओं के बीच में से एक खपरैल-छत के मकान में ले गये, जिसकी खिड़कियों में जालियाँ लगी हुई थीं। सामने के आँगन में एक पच्चीस फुट चौड़ा कुआँ था। श्री देसाईन`ब तायाि कइ सकाप ानीअ ाश्रमक`ज ानवरोंक` लिये प्रयुक्त होता है। पास में ही सीमेंट का एक घूमने वाला चक्का था जो धान की झड़ाई करने के काम में लाया जाता था। हमारे छोटे-छोटे कमरों में केवल अत्यावश्यक अल्पतम सामान ही था - केवल रस्सी - की एक खटिया। रसोई घर की सफेदी की हुई थी। उसमें एक कोने में नल था और दूसरे कोने में मिटी का एक चूल्हा । देहात की विशिष्ट आवाजें हमारे कानों में आ रही थीं कौओं की काव काव, चिड़ियाओं की चूँ-चूँ, मवेशियों का हंभारव, पत्थरों को तोड़ती छेनियों की ठन-ठन।

श्री राइट की यात्रा - दैनन्दिनी पर दृष्टि पड़ी, तो श्री देसाई ने उसे खोला और एक पन्ने पर महात्माजी के अनुयायियों (सत्याग्रहियों) द्वारा लिये जाने वाले सत्याग्रह व्रत में शामिल प्रतिज्ञाओं की सूचि उन्होंने लिख दी:

''अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम स्वाद -इंद्रिय पर नियंत्रण, निर्भयता, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी, अस्पृश्यता से मुक्ति। इन ग्यारह प्रतिज्ञाओं का विनम्रता के साथ पालन किया जाना चाहिये।'' (दूसरे दिन गांधीजी ने स्वयं इस पन्ने पर अपने हस्ताक्षर किये और तारीख भी डाल दी अगस्त 1935) -

हमारे आगमन के दो घंटे बाद हम लोगों को भोजन के लिये बुलाया गया। महात्माजी पहले से ही बरामदे में अपनी थाली के सामने बैठे हुए थे। यह बरामदा उनके लेखन कक्ष के सामने ही आँगन के इस पार था। लगभग पच्चीस सत्याग्रही पीतल की थालियाँ और कटोरियाँ अपने-अपने सामने लिये बैठे हुए थे। सामूहिक प्रार्थना के बाद पीतल के विशाल पात्रों में से भोजन परोसा जाने लगा। भोजन में घी लगायी हुई रोटियाँ, सब्जी और नींबू का मीठा अचार था।

गांधीजी ने रोटियाँ, उबाले हुए चुकन्दर, कुछ कच्ची सब्जियाँ तथा संतरे खाये। उनकी थाली में एक ओर काफी बड़ी मात्रा में नीम के कड़वे पत्तों की चटनी थी। नीम उत्कृष्ट रक्तशोधक है। एक चम्मच से उन्होंने थोड़ी-सी चटनी मेरी थाली में डाल दी। बचपन के वे दिन मुझे याद आ गये जब माँ मुझे जबरदस्ती यह अप्रिय औषधि देती थी। मैंने पानी के साथ वह चटनी गले से नीचे उतार दी। परन्तु गांधीजी उसे आराम से थोड़ा- थोड़ा कर बिना किसी अरुचि के खा रहे थे।

इस छोटी-सी घटना से गांधीजी की अपने मन को इच्छानुसार इंद्रियों से अलग करने की क्षमता मेरे ध्यान में आ गयी। कुछ वर्ष पहले किये गये उनके ॲपेन्डिक्स के अक्परेशन की मुझे याद आयी, जिसे उस समय बहुत प्रसिद्धि भी दी गयी थी । बेहोशी की दवा लेने से इन्कार कर ऑपरेशन के दौरान सारा समय वे फ्रुल्लित मन से अपने अनुयायियों से बातें कर रहे थेय उनके चेहरे पर शान्त मुस्कान यह साफ बता रही थी कि उन्हें दर्द का कोई एहसास नहीं हो रहा था।

दोपहर में मुझे गांधीजी की विख्यात शिष्या मीरा बेन' से बातचीत करने का अवसर मिला। मीरा बेन एक अंग्रेज नौसेना प्रमुख (एडमिरल) की पुत्री हैं, जिनका नाम आश्रम में आने से पहले मिस मैडेलिन स्लेड था । अपने दैनिक कार्यक्रम का विशुद्ध हिंदी में विवरण सुनाते हुए मजबूत-सा लगता उनका शान्त चेहरा उत्साह से खिल उठा।

''ग्रामोद्धार का कार्य बड़ा संतोषप्रद है। प्रतिदिन सुबह पाँच बजे हम लोगों का एक दल आस-पास के ग्रामीणों की सेवा करने तथा उन्हें स्वास्थ्य एवं साफ-सफाई संबंधी साधारण बातों की जानकारी देने जाता है। हम लोग उनकी घासफूस की झोंपड़ियों एवं शौचालयों की स्फाई करने का विशेष ध्यान रखते हैं। ग्रामीण जन अशिक्षित उदाहरण के बिना उन्हें शिक्षित नहीं किया जा सकता!'' वे प्रसन्नता के साथ हँस पड़ीं।

उच्च कुल की इस अंग्रेज महिला को मैं आदरभरी दृष्टि से देख रहा था, जो सच्ची ईसाई विनम्रता हृदय में धारण किये मल-सफाई तक का काम कर रही थी, जिसे साधारणत: केवल ''अस्पृश्य लोग'' ही करते हैं ।

उन्होंने मुझे बताया: ''मैं 1924 में भारत आयी। इस देश में आकर मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपने घर वापस आ गयी हूँ। अब मैं अपने पुराने जीवन और पुराने

तौर-तरीकों में कभी लौटना नहीं चाहूँगी।''

मीरा बेन ने गांधीजी द्वारा लिखे गये अनेक पत्रों को प्रकाशित किया है जिनसे उनके गुरु द्वारा उन्हें दी गयी आत्मानुशासन की शिक्षा पर प्रकाश पड़ता है (गांधीज लेटर्स टू ए डिसाइपल हार्पर एन्ड ब्रदर्स, न्यू यॉर्क, 1950)।

बाद की एक पुस्तक (द स्पिरिट्स पिलग्रिमेजय कक्रवर्ड-मैककैन, न्यू यॉर्क, 1960) में उन्होंने वर्धा में गांधीजी से मिलने आनेवालों की विशाल संख्या का उल्लेख किया है। वे लिखती हैं: ''इतने दीर्घकाल के बाद अब मुझे उनमें से बहुतों का स्मरण नहीं रहा हैय परन्तु दो व्यक्तियों का स्पष्ट स्मरण मुझे है वे हैं तुर्की की प्रसिद्ध लेखिका हालिद अदीब हनुमय और सेल्फ- रियलाइजेशन फेलोशिप अक्रु अमेरिका के संस्थापक स्वामी योगानन्द।'' (प्रकाशक की टिप्पणी)

फिर थोड़ी देर हमने अमेरिका के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा: ''भारत आने वाले अनेक अमेरिकी लोगों की आधयात्मिक विषयों में गहरी रुचि देखकर मुझे सदा ही आनन्द और आश्चर्य होता है।''

मीरा बेन के हाथ शीघ्र ही चरखा चलाने में व्यस्त हो गये। महात्माजी के प्रयत्नों के फलस्वरूप चरखा अब भारत के ग्रामीण इलाकों में सर्वव्यापी हो गया है।

कुटीर उद्योगों के पुनरुज्जीवन को प्रोत्साहित करने के लिये गांधीजी के पास ठोस अर्थशास्त्रीय और सांस्कृतिक कारण हैं, तथापि वे सभी आधुनिक प्रगति से कटरता के साथ दूर रहने की सलाह भी नहीं देते। उनके अपने राष्ट्रव्यापी व्यस्त जीवन में मशीनों, रेलगाड़ियों, मोटर गाड़ियों तथा टेलिग्राफ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है! पचास वर्ष की जनसेवा, जेल के अन्दर-बाहर आना-जाना, राजनैतिक जगत् की छोटी से छोटी बातों एवं उसकी कठोर वास्तविकताओं के साथ दिन-प्रतिदिन संघर्ष - इन सभी बातों द्वारा उनके जीवन में और अधिक संतुलन आया है, उनकी उदारमनस्कता में, उनकी स्वस्थचित्तता में और भी अधिक वृद्धि हुई है तथा इस विलक्षण मानवीय तमाशे का विनोदपूर्ण कौतुक बुद्धि के साथ अवलोकन करना सिखाया है।

शाम छह बजे बाबासाहेब देशमुख के यहाँ उनके निमंत्रण पर हम तीनों ने भोजन का आनन्द लिया। सात बजे की प्रार्थना के समय हम लोग आश्रम लौट आये और छत पर पहुँचे, जहाँ तीस सत्याग्रही गांधीजी के सामने अर्धवृत्ताकार बैठे थे। गांधीजी एक चटाई पर बैठे थे, एक पुरानी जेब-घड़ी उनके सामने खड़ी करके रखी हुई थी । अस्त होते सूर्य की अंतिम किरणें ताड़ और बरगद के वृक्षों पर पड़ रही थीं। रात के अँधेरे' मिस स्लेड को देखकर मुझे एक और विशिष्ट पाश्चात्य महिला का स्मरण हो आया। वे हैं अमेरिका के महान राष्ट्रपति विल्सन की ज्येष्ठ कन्या मिस मार्गरेट वुडरो विल्सन । न्यू यॉर्क में उनसे मेरी भेंट हुई थी उन्हें भारत में गहरी रुचि थी। बाद में वे पाण्डिचेरी चली गयीं, जहाँ उन्होंने महान् गुरु श्री अरविन्द के चरणों में प्रसन्नतापूर्वक आत्मानुशासन के मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने जीवन के अंतिम पाँच वर्ष व्यतीत किये।

की और झींगुरों की गुनगुनाहट शुरू हो गयी थी। वातावरण शान्त गम्भीर थाय मैं मंत्रमुग्ध हो गया।

श्री देसाई एक भजन गाने लगे और बाकी लोग उनका साथ देने लगे । इसके बाद गीतापाठ हुआ। गांधीजी ने समापन प्रार्थना करने के लिये मुझे संकेत किया। वहाँ भाव और अभिलाषा का कैसा दिव्य संयोग था! यह एक अविस्मरणीय स्मृति बनकर रह गयी - वर्धा में छत पर तारों के नीचे ध्यान ।

समयक ीप ाबंदीक ाप ालनक रतेह ुएठ ीकअ ाठ बजे गांधीजी ने अपना मौन भंग किया। उनके लिये अपने जीवन के विशाल कार्यों के कारण अपने समय को सूक्ष्मता से विभाजित कर विविध कार्यों में बाँटना आवश्यक है।

स्वागत, स्वामीजी ! ''इस बार महात्माजी का अभिवादन कागज के माधयम से नहीं था। हम छत से उतर कर उनके लेखन कक्ष में पहुँचे ही थे। लेखन-कक्ष में कोई फर्नीचर नहीं थाय वहाँ केवल बैठने की आसन नुमा छोटी-छोटी चौकोर चटाइयाँ थी, जमीन पर बैठ कर लिखने के काम आ सके इतनी ऊँचाई की एक डेस्क, कागज और कुछ साधारण कलमें (फाऊन्टन पेन नहीं) थींय एक कोने में मामूली सी एक घड़ी टिक-टिक किये जा रही थी। उस कमरेम ंश ान्तिअ ैरभ ाक्तिक ाव ातावरणथ ाा। ग ांधीजी अपनी मोहक, लगभग दंतविहीन मुस्कान बिखेर रहे थे।

उन्होंने बताया : ''अपने पत्रव्यवहार हेतु समय निकालने के लिये मैंने कई वर्षों पूर्व सप्ताह में एक दिन मौन रखना शुरू किया। परन्तु मौन के वे चौबीस घंटे अब एक महत्त्वपूर्ण आधयात्मिक आवश्यकता बन गये हैं।

नियतकालिक मौन रखने में कष्ट तो कुछ नहीं है, बल्कि यह एक वरदान है ।''

मैं पूर्ण मन से उनके साथ सहमत हो गया।' महात्माजी ने मुझसे अमेरिका और यूरोप के विषय में प्रश्न किये। हमने भारत और विश्व की परिस्थितियों पर चर्चा की।

अनेक वर्षों तक अमेरिका में मैं नियतकालिक मौन रखता था। मिलने के लिये आने वाले लोग और मेरे सचिव इससे उद्विग्न हो उठते थे। कमरे में श्री देसाई के प्रवेश करते ही गांधीजी ने उनसे कहा: ष्महादेव! कल रात टाऊन हक्कल में योग शास्त्र पर स्वामीजी के व्याख्यान की व्यवस्था करो।''

रात को जब अपने कमरे में जाने के लिये मैं उठा, तो गांधीजी ने सिनेला अक्कयल की एक शीशी मेरे हाथ में दी। ''वर्धा के मच्छर अहिंसा के बारे में कुछ नहीं जानते, स्वामीजी!'' हँसते हुए उन्होंने कहा ।

दूसरे दिन सुबह जल्दी ही दूध में गुड़ के साथ बनाये हुए दलिये का नाश्ता हम लोगों ने किया। साढ़े दस बजे गांधीजी और सत्याग्रहियों के साथ भोजन करने के लिये हमें बुलाया गया। आज भोजन में हाथ से कूटे हुए चावल का भात, सब्जी और इलायची के दाने थे।

मैं दोपहर को आश्रम की भूमि पर टहलने निकला और घूमते-घूमते चराई के एक मैदान में जा पहुँचा जहाँ कुछ गायें शान्त चित्त से चर रही थीं। गोरक्षण का गांधीजी के हृदय में अत्यंत विशेष स्थान था।

उन्होंने कहा है: हमेरे लिये गाय का अर्थ है सम्पूर्ण मानवेतर जगत् । मनुष्य का अपनी जाति की सीमाओं से बाहर निकल कर पशु जगत् के प्रति सहानुभूति प्रकट करना। गाय के माधयम से मनुष्य सारे जीव-जगत् के साथ अपनी एकात्मता स्थापित कर सकता है। प्राचीन ;षियों ने गाय को ही पवित्र क्यों माना यह मेरी समझ में आसानी से आता है। उदाहरण देने के लिये भारत में गाय ही सर्वोत्तम प्राणी थी, क्योंकि गाय अनेक प्रकारों से मनुष्य की समृद्धि की जननी है। न केवल वह दूध देती है, बल्कि कृषि- कर्म उसी के कारण संभव बना। गाय करुणा का काव्य है। इस निरीह प्राणी में मनुष्य कारुण्य भाव का दर्शन करता है। लक्ष लक्ष मानवप्राणियों के लिये गाय दूसरी माता है। गोरक्षण का अर्थ है ईश्वर की समस्त मूक सृष्टि अहिंसा गांधीवाद का मूल आधार है। जैनों से वे काफी प्रभावित हैं, क्योंकि जैन लोग अहिंसा को धर्म का मूल मानते हैं। जैन मत हिंदू धर्म का ही एक संप्रदाय है, जिसका ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भगवान महावीर ने व्यापक प्रसार किया। भगवान महावीर भगवान बुद्ध के ही समकालीन थे।

अनेक शताब्दियों का भेद कर उनकी करुणा दृष्टि अपने वीर पुत्र गांधी पर पड़े तो सही।

को रक्षा और यह रक्षा करना हमारा और भी अधिक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य बन जाता है, क्योंकि वह बोल नहीं सकती।''

धर्मपरायण हिंदू के लिये कुछ दैनिक धार्मिक कृत्य बताये गये हैं। उनमें से एक है भूत यज्ञ, अर्थात् प्राणी जगत् को अन्न अर्पण करना। यह कर्म इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य को सृष्टि के उन कम विकसित जीवों के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध है, जो प्रवृत्ति के द्वारा शरीर के साथ एकरूप हो गये हैं (एक भ्रम जिससे मनुष्य भी ग्रसित है), परन्तु जिनमें आत्मा को मुक्त करा सकने वाली विवेक बुद्धि का अभाव है, जो केवल मनुष्यों की ही विशेषता है।

इस प्रकार भूत यज्ञ निर्बलों की सहायता के लिये मनुष्य की तत्परता को सु-दृ बनाता है, जैसे मनुष्य भी बदले में उच्चतर अदृश्य जीवों से असंख्य प्रकार से सहायता पाता है भूमि, समुद्र और आकाश में प्रकृति ने जो नवशक्ति प्रदायक उपहार जगह-जगह बहुतायत में बिखेर रखे हैं, उनके लिये भी मानवजाति ;ण में बँधी हुई है। प्रकृति, प्राणी जगत, मानव तथा सूक्ष्म जगत् के देवताओं के बीच क्रमविकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के कारण परस्पर सम्पर्क में जो बाधाएँ हैं, उन्हें मूक प्रेम के दैनिक यज्ञों (कर्मों) के द्वारा ही पार किया जा सकता है।

जो प्रतिदिन करने चाहिये, ऐसे दो अन्य यज्ञ हैं पितृ यज्ञ तथा नृ यज्ञ । पितृ यज्ञ में पितरों के लिये तर्पण किया जाता है। यह गत पीढ़ियों के ;ण की स्वीकृति का प्रतीक है, जिनकी ज्ञान संपदा आज मानवजाति को राह दिखा रही है। नृ यज्ञ का अर्थ है अभ्यागतों को या गरीबों को भोजन अर्पण करना। यह मनुष्य के समकालीन दायित्वों का, अर्थात् उसके साथ संसार में जी रहे जीवों के प्रति कर्तव्यों का प्रतीक है।

गांधीजी ने हजारों विषयों पर सुन्दरता के साथ लिखा है। प्रार्थना के बारे में उन्होंने कहा है ''यह हमें याद दिलाती है

कि ईश्वर के सहारे के बिना हम असहाय है। प्रार्थना के बिना कोई मानवी प्रयास पूर्ण नहीं होताय इस निश्चित स्वीकृति के बिना कोई प्रयास कभी पूर्ण नहीं होता कि मानव चाहे कितना ही प्रयास कर लें, उस प्रयास के पीछे यदि ईश्वर का आशीर्वाद नहीं है, तो सब प्रयास व्यर्थ ही होने वाला है। प्रार्थना विनम्रता को जगाती है। प्रार्थना आत्म शुद्धि कराती है, आत्मशोध कराती है।

महात्मा गांधी के साथ वर्धा में

दोपहर में गांधीजी द्वारा छोटी-छोटी बच्चियों के लिये चलाये जा रहे। आश्रम को भेंट देकर मैंने अपना नृ यज्ञ पूरा किया। मोटर से दस मिनट का रास्ता था। श्री राइट भी मेरे साथ आये थे। रंगबिरंगी साड़ियाँ पहने वे बालिकाएँ ऐसी लग रही थीं मानो लम्बे-लम्बे डण्ठलों पर छोटे-छोटे फूल लगे हों। बाहर खुले मैदान में ही मैंने हिंदी में छोटा-सा भाषण दिया। भाषण खत्म होते-होते बादलों ने अचानक पानी बरसाना शुरू कर दिया। हंसते हुए श्री राइट और मैं कार में घुस गये और घनी बारिश में मगनवाड़ी की ओर तेजी से बढ़ चले। उष्ण प्रदेश में वर्षा भी कितनी घनी और तीव्रता के साथ होती है।

अतिथिभ ावनम ेंप ुन:प्र वेशक रतेह ुएम ैं यहाँ हर तरु दिखायी देने वाली नितान्त सादगी औरत यागक ेि नशानियोंक ेद ेखकरि फरए क बार प्रभावित हो उठा। गांधीजी ने अपने वैवाहिक जीवन के कफी प्रारम्भ में ही अपरिग्रह व्रत ले लिया था। वार्षिक 60,000 रुपये से अधिक आय देनेव ालीव कालतछ ोड़करउ न्होंनेअ पनीस ारी सम्पत्ति गरीबों में बाँट दी।

श्रीयुक्तेश्वरजी संसार-त्याग की सामान्यत: देखने में आने वाली अल्प धारणाओं पर कभी-कभी व्यंग्य किया करते थे।

वे कहते : ''भिखारी संपत्ति का त्याग नहीं कर सकता। यदि कोई मनुष्य विलाप करता है कि 'मेरा धंधा डूब गया, पत्नी मुझे छोड़कर चली गयी अब मैं संसार त्याग कर आश्रम में चला जाता है तो किस संसार- त्याग की यह बात कर रहा है? उसने किसी संपत्ति और प्रेम का त्याग नहीं कियाय संपत्ति और प्रेम ने उसका त्याग कर दिया।''

दूसरी ओर गांधीजी जैसे संतों ने केवल भौतिक संपत्तियों का ही प्रत्यक्ष त्याग नहीं किया, बल्कि उससे भी कठिन निजी लक्ष्य प्राप्ति और स्वार्थी उद्देश्यों का त्याग भी कर दिया और अपने अस्तित्व के गहनतम हिस्सों को भी सारी मानवजाति को एक ही धारा मानकर उसमें विलीन कर दिया।

महात्माजी की असाधारण धर्मपत्नी कस्तूरबा ने कोई आपत्ति प्रकट नहीं की कि उन्होंने उनके लिये या उनके

बच्चों के लिये कुछ बचाकर नहीं रखा। गांधीजी का विवाह किशोरावस्था में ही हो गया था। चार पुत्रों को जन्म देने के बादउ न्होंनेअ ारैउ नकीध र्मपत्नीन ेब्रह्मचर्यक ाव्रतल े लिया।' उनके सहजीवन के प्रखर नाटक की शान्त नायिका के रूप में कस्तूरबा अपने पति के साथ कारावास में गयीं, तीन-तीन सप्ताहों के अनशनों में पति के साथ स्वयं भी उपवास करती रहीं और पति की अनंत जिम्मेदारियों में अपने हिस्से की जिम्मेदारियाँ सम्हालती रहीं। गांधीजी के प्रति उन्होंने अपनी श्रद्धा इन शब्दों में व्यक्त की है: मैं आपकी आभारी हूँ कि आपको जीवनसंगिनी एवं सहधर्मिणी बनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मैं आपकी आभारी हूँ संसार में सर्वश्रेष्ठ विवाहबंधन के लिये, जो विषयभोग पर नहीं, बल्कि ब्रह्मचर्य पर आधारित है। मैं आपकी आभारी हूँ कि आप उन पतियों में से एक नहीं बने, जो जुआ, घुड़दौड़, सुरा, सुन्दरी और गाने-बजाने में अपना समय नष्ट कर देते हैं और अपनी पत्नी एवं बच्चों से इस प्रकार ऊब जाते हैं, जैसे कोई बच्चा अपने खिलौनों से जल्दी ही ऊब जाता है। मैं अत्यंत कृतज्ञ कि आप वैसे पतियों में नहीं हैं जो दूसरों के परिश्रम के बल पर उनका शोषण कर धनवान बनने में अपना समय लगा देते हैं।

मैं नितान्त कृतज्ञ हूँ कि आपने रिश्वत से अधिक महत्त्व ईश्वर और देश को दिया, कि अपनी धारणाओं के अनुसार अपना जीवन जीने का साहस आपमें था, कि ईश्वर में आपका गांधीजी ने "द स्टोरी ऑफ माइ एक्स्पेरिमेंट्स विद ट्रूथ" (अहमदाबाद: नवजीवन प्रेस, 1927-28, 2 खंड) नामक अपनी आत्मकथा में अपने जीवन का सारा वृत्तान्त भयंकर स्पष्टता के साथ लिख दिया है।

अनेक बड़े-बड़े विख्यात नामों और अद्‌भुत घटनाओं से परिपूर्ण अनेक आत्मकथाएँ आंतरिक विश्लेषण या आंतरिक विकास से संबंधित बातों पर लगभग पूर्णत: मौन ही रहती हैं। उन्हें पढ़ लेने के बाद कुछ असंतुष्टि के साथ ही पाठक उसे एक ओर रख देता है, मानो कह रहा हो ष्यह रहा एक आदमी अनेक विख्यात लोगों को तो यह जानता था पर अपने आप को कभी जान नहीं सका।" गांधीजी को आत्मकथा पढ़ने के बाद यह प्रतिक्रिया आना असंभव है। उन्होंने सत्य के प्रति ऐसी सर्वार्थ भक्ति के साथ अपने सब दोष एवं छल-कपटों का स्पष्ट वर्णन किया है कि किसी भी युग के इतिहास में ऐसा उदाहरण विरले ही मिलेगा।

पूर्ण विश्वास था। असीम कृतज्ञ हूँ मैं ऐसे पति को पाकर जिसने ईश्वर और अपने देश को मुझसे अधिक महत्त्व दिया। मेरे और मेरी युवावस्था की त्रुटियों के प्रति आपने जब समृद्धि का जीवन त्यागकर अपरिग्रह के जीवन को अपनाया तब मैंने आपका जो विरोध किया और विद्रोह पर उतर आयी, उस सब के प्रति आपने जो सहनशीलता का रुख अपनाया, उसके लिये मैं आपकी आभारी हूँ।

बचपन में मैं आपके माता-पिता के घर में रही। आपकी बहुत अच्छी और महान् महिला थीं। उन्होंने मुझे बहादुर माँ और साहसी पत्नी बनना सिखाया और यह भी सिखाया कि मैं उनके पुत्र, अर्थात् अपने भावी पति के प्रेम और आदर की पात्र कैसे बन सकती हूँ। जब वर्ष पर वर्ष बीतते गये और आप भारत के सबसे प्रिय नेता बन गये, तब सफलता की सीढ़ी चढ़ने वाले पुरुष की पत्नी के मन में उठने वाला वह भय मेरे मन में कभी नहीं उठा, कि मैं एक ओर फेंक दी जाऊँगी, जैसा कि अन्य देशों में प्राय: होता है। मैं जानती थी कि जब मृत्यु आयेगी, तब भी हम पति-पत्नी ही होंगे।

अनेक वर्षों तक कस्तूरबा उन जन-निधियों के कोषपाल का काम करती थीं, जिन्हें महात्माजी लाखों में जमा कर सकते हैं। भारत के घरों में बड़ी मजेदार कहानियाँ बतायी जाती हैं कि गांधीजी की सभाओं में महिलाओं के आभूषण पहनकर जाने को लेकर पति लोग बहुत चिंतित रहते हैं, क्योंकि पददलितों की वकालत करने वाली गांधीजी की जादुई वाणी सोने के कँगनों और हीरे के हारों पर अपना जादू चलाकर उन्हें अपने आप हाथों और कंठों से निकालकर दानपात्र में जमा करवा देती है!

एकर्ा दनज न-निधिक ोषपालक स्तूरबाच ाररु पये के खर्च का हिसाब नहीं दे सकीं। गांधीजी ने आय-व्यय विवरण प्रकाशित कर दिया, जिसमें उन्होंने अपनी पत्नी की चार रुपये की विसंगति को निष्ठुरतापूर्वक स्पष्ट दर्शाया।

अभिनवगुप्त की संवादपद्धति

राधावल्लभ त्रिपाठी

अभिनवगुप्त एक रहस्यदर्शी तान्त्रिक, सिद्ध, कवि, दार्शनिक, चिन्तक, काव्यशास्त्री के रूप में असाधारण उपलब्धियों के लिये जाने जाते हैं। संगीतशास्त्र के आचार्य के रूप में भी उन्हें मान्यता दी गई है। अभिनवगुप्त एक मेधावी चितंक, दार्शनिक, कवि और सौन्दर्यशास्त्री थे। उनके जैसी प्रतिभा के निर्माण में अनेक समीकरणों, परम्पराओं व साधनापद्धतियों का समायोजन हुआ। उनके आविर्भाव के समय प्रत्यभिज्ञा दर्शन का चिन्तन और तन्त्र की साधना – दोनों अपने शिखर पर थी, और दोनों की विरासत पक्के गुरुओं से अभिनवगुप्त को मिली। उनकी कतिपय रचनाओं से उनके रचनाकाल उल्लेखों के आधार पर अभिनवगुप्त का समय 940 ई. से 1030 के बीच माना जाता है।

अभिनवगुप्त की वंशपरम्परा महान् पण्डितों की थी, उनका परिवार वैदुष्य के कारण प्रतिष्ठित था। काव्यशास्त्र के क्षेत्र में इंदुराज या भट्टेंदुराज तथा विप्र तोत (भट्टतोत) इन दो गुरुओं का उल्लेख अभिनवगुप्त ने अभिनव भारती तथा ध्वन्यालोक लोचन में किया है। तन्त्रालोक के आरम्भ में उन्होंने अपने को 'भटेन्दुराजचरणाब्जकृताधिवास'क हाह ै।अ पनेच ाचाव ामनक ाव े एक कवि के रूप में उल्लेख करते हैं, जो काव्यशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य वामन से भिन्न हैं। उनके पिता नरसिंहगुप्त संगीत और राग में अपनीि नपुणताक ेि लयेप्र सिद्धथ ो।अ भिनवगुप्तन ेअ पनेि पतास े संगीतशास्त्र का विशद अध्ययन किया होगा, जो अभिनवभारती टीका मेंि वशेषरू पस ेन ाट्यशास्त्रक ेस ंगीतशास्त्रविषयकस ातअ ध्यायों (28–34) पर उनके द्वारा किये गये तलावगाही विमर्श में परिलक्षित होता है।

अभिनवगुप्त की वंशपरम्परा महान् पण्डितों की थी, उनका परिवार वैदुष्य के कारण प्रतिष्ठित था। काव्यशास्त्र के क्षेत्र में इंदुराज या भट्टेंदुराज तथा विप्र तोत (भट्टतोत) इन दो गुरुओं का उल्लेख अभिनवगुप्त ने अभिनव भारती तथा ध्वन्यालोक लोचन में किया है। तन्त्रालोक के आरम्भ में उन्होंने अपने को 'भटेन्दुराजचरणाब्जकृताधिवास' कहा है।

बड़ी गुरु परम्परा, बड़ी शिष्य परम्परा गुरुओं के पास स्वयं जाते हैं शिष्य उनके पास स्वयं आते हैं। अभिनवगुप्त अपने जीवन में एक स्तर पर अवधूत बन कर रहे, एक स्तर पर कवि और चिंतक, तो एक अन्य स्तर पर परिवार के प्रति स्नेहमय भी। परिवारजनों के प्रेम और स्नेह के बंधनों ने ही कदाचित् अभिनव को एक स्तर पर संसार के यथार्थ से जोड़े रखा होगा।

उन्होंने अपने समय के लगभग पच्चीस श्रेष्ठ गुरुओं से अध्ययन किया। यहाँ तक कि गुरु शंभुनाथ से कौलिक मत का अध्ययन करने वे काश्मीर के बाहर जालंधर गये। लोचन में उन्होनें अपने आप को ईश्वरप्रत्यभिज्ञा के प्रणेता आचार्य उत्पलदेव का प्रशिष्य या परमशिष्य बताया है। उत्पलदेव के शिष्य लक्ष्मणगुप्त थे, जिनसे अभिनवगुप्त ने शैवशास्त्र का अध्ययन किया। अभिनवभारती में उन्होंने गौरव के साथ अपने प्रवरपुर (आधुनिक श्रीनगर) तथा कश्मीर के वासी होने का उल्लेख किया है।

अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण संभव है अभिनव को अपने सभी गुरुओं से संतोष न रहा हो, यद्यपि उन्होंने कहीं भी किसी भी गुरु के प्रति रत्ती भर भी अवज्ञा का भाव व्यक्त नहीं किया है। पर वे किसी एक गुरु से बँधे नहीं रहे, और एक को छोड़ कर दूसरे का पल्ला पकड़ते रहे, इसका कारण उनके चिन्तन, मनन और अध्ययन की वह विस्तीर्ण परिधि ही हो सकती है, जिसके आगे गुरु का अपनी वृत्त छोटा हो जाता होगा।

विचारों की प्रखरता व गहनता तथा रहस्यदर्शी भावजगत् दोनों अभिनवगुप्त के कृतित्व में आश्चर्यजनक रूप से गलबाहीं करते हुए चलते हैं। वे स्वयं चिन्तन के शिखरों का स्पर्श अपनी अंतर्दृष्टि से करते हैं, पर अपने गुरुजनों का स्मरण श्रद्धातिरेक से और गद्गदभाव से करते हैं। यही नहीं वे अपने शिष्यों का भी अपनी रचनाओं में स्नेह के साथ स्मरण करते हैं।

अभिनवगुप्त ऐसे समय में हुए जब सारे देश में शारदादेश या सरस्वती की भूमि के रूप में काश्मीर का डंका बजता था। पांडुलिपियों के समृद्ध भंडारों तथा कवियों और विद्वानों की बड़ी जमात के कारण कश्मीर कवियों की तीर्थ भूमि बना हुआ था। इस वातावरण में अपनी महनीय कृतित्व के कारण अभिनवगुप्त ने जैसी प्रतिष्ठा व सम्मान पाया वह कम महापुरुषों को अपने जीवनकाल में मिलता है। वे अपने कवित्व, वैचारिक लेखन तथा साधना – तीनों में शिवमय हो गये थे, इस रूप में उनके शिष्य उन्हें सम्मान देते थे। अपने जीवनकाल में वे साक्षात् भैरव के रूप में पूजे जाने लगे थे।

शिष्यवात्सल्य के कारण अभिनवगुप्त ने अधिकांश लेखन किया, उनका सारा लेखन इस दृष्टि से शिष्यों से संवाद है। इसलिये परात्रीशिका के उपंहार श्लोकों में अन्त में सारे शिष्यों के लिये अभिनवगुप्त कहते हैं

व्याख्यादिकर्मपरिपाटिपदे नियुक्तो
युष्माभिरस्मि गुरुभावमनुप्रविश्य।
वाक्चित्तचापलमिदं मम तेन देव्य–
स्तच्चक्रचारुचतुरस्थितयः क्षमन्ताम।।
परात्रिंशिका, उपसंहार श्लोक – 21

(आप लोगों ने गुरुभाव में अनुप्विष्ट हो कर व्याख्या आदि के कर्ममें मुझे नियुक्त किया इसलिये तन्त्र के चक्र में स्थित देवियाँ मेरे इस वाक्चित्तचापल को क्षमा करें।)

योगी मधुराज जो कर्नाटक से चल कर काशअमीर आये और अभिनवगुप्त के अनन्य भक्त बन गये, कहते हैं ––

अभिनवगुप्तनाथलिखितं लिखितं हृदये
तदितरशास्त्रकारलिखितं लिखितं सलिले।
स्वहृदयदेवतामुखहुतं हुतमग्निमुखे
तदितरदेवतासु निहितं निहितं भसिते।।21।।

(अभिनवगुप्त नाथ ने जो लिखा, वह हृदय पर लिख गया। अन्य शास्त्रकारों ने जो लिखा वह पानी पर लिख गया। अपने हृदयस्थ देवता के मुख में जो आहुति डाली वही अग्नि में गिरी, अन्य देवताओं के लिये जो आहुति दी वह भस्म में चली गई।)

वैदिक वाङ् के महार्णव को भी उन्होंने मथा। अपने से पहले के अनेक दार्शनिकों तथा दर्शनशास्त्र के प्रस्थानों को वे उद्धृत रते हैं। वाजसनेयि संहिता और ऐतरेय ब्राह्मण से संदर्भ देते हैं।अपने गीतार्थसंग्रह में वे भगवद्गीता तथा शैवाम्नायों के बीच संवाद के धरातलों को उजागर करते हैं। बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन की शून्यवाद के निर्वचन में प्रयुक्त पदावली का भी वे अपने ढंग से इस्तेमाल करते हैं।

शंकराचार्य केरल से चल कर शास्त्रार्थ के लिये कश्मीर तक जाते हैं। अभिनवगुप्त के पास केरल से ज्ञान पाने के लिये कोई साधक चला आता है। अभिनवगुप्त की जीवनयात्रा और अवदान की इस झलक से लगता है कि उनमें अगस्त्य, याज्ञवल्क्य, ऋषभदेव, भरतमुनि, कालिदास, भर्तृहरि और कबीर – सब के व्यक्तित्व एक साथ एक ज्योतिःपुंज बन कर आ मिल गये थे।

अभिनवगुप्त अपनी व्याख्यापद्धति में पाठ के साथ संवाद करते हैं। व्याख्येय कृति संप्रदाय (गुरुशिष्यपरम्परा) से प्राप्त है, व्याख्याकार उसे आत्मसात् कर उसका संवर्धन उसी तरह करता है जैसे कोई अपनी संतान को पालता और बड़ा करता है। इस तरह यह व्याख्या पद्धति ज्ञान को निरंतर तेजस्वी, जीवंत और अद्यतन बनाये रखती है। अभिनवगुप्त की व्याख्यापद्धति शैवशास्त्र की दार्शनिकभित्ति तथा तन्त्र की उदार मानवीय दृष्टि दोनों का समागम हुआ। गीता के इस श्लोक की उनकी व्याख्या से इसे साररूप में हम समझ सकते हैं –

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।

स्त्रियो वेश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।

कृष्ण कहते हैं – हे पार्थ, मेरी शरण में आ कर चाहे पाप की योनि से जन्मे लोग हों, या स्त्रियाँ, वेश्याएँ या शूद्र – ये सब परम गति या मुक्ति को पा जाते हैं।

गीता पर शंकराचार्य का भाष्य भी है। जैसी पूर्व में शंकराचार्यविषयक विमर्श के प्रसंग में चर्चा की गई है, शंकराचार्य की दृष्टि स्त्रियों और शूद्रों को ले कर वर्णव्यवस्था की रूढ़ियों से बँधी हुई है। वे 'पापयोनयः' को 'स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः' का विशेषण मानते हैं। इससे यह आशय हो जाता है कि स्त्री, वैश्य तथा शूद्र पाप से जन्म लेते हैं। संस्कृत भाषा की संश्लिष्ट शैली के कारण गीता के इस श्लोक का सहज रूप में पाप की योनि से जन्मीं स्त्रियाँ, वेश्याएँ तथा शूद्र भी मुक्त हो जाते हैं – यह अर्थ भी निकल आता है। पर अभिनवगुप्त अपने गीतार्थसंग्रह में ?ापयोनयः' को स्त्री, वैश्य व शूद्रों का विशेषण नहीं मानते। वे 'येऽपि स्युः पापयोनयः' को एक अलग वाक्यखंड मान कर व्याख्या करते हैं, जो कि सही भी है, और जिससे गीता के वाक्य का आशय यह बनता है कि स्त्रियाँ, वैश्य, शूद्र तथा इनके अलावा कोई पापयोनि जनभ ीह ों,त ोव े भ ीम ुक्तह ोज ातेंह ै।श ंकराचार्यक ी वेदान्ती दृष्टि में स्त्रियाँ व शूद्र हेय हो सकते हैं, अभिनवगुप्त की शैवी और तांत्रिक दृष्टि में नहीं। अभिनवगुप्त वेदान्ती दृष्टि पर कटाक्ष भी यहाँ करते हैं – ?शूद्राः कार्त्स्न्येन वैदिकक्रियानधिकृतः परतन्त्रवृत्तयश्च, तेपि मदाश्रिता मामेव यजन्ते। (शूद्रों को वैदिक क्रिया या यज्ञ आदि का अधिकार प्राप्त नहीं है, वे भी मेरी शरण में आ कर मेरा ही यजन या पूजन करते हैं)। यहीं नहीं, अभिनवगुप्त उन रूढ़िवादियों की कठोर शब्दों में यहाँ मत्सर्ना ही कर डालते हैं, जो गीता की ब्राह्मणवादी व्याख्या करते हुए यहाँ यह आशय निकालते हैं कि वास्तव में मुक्ति तोब्राह्मणअ ौरक्ष त्रियक ोह ी मिलनीह ै,ि स्त्रियों,व ैश्यों आदि के लिये आश्वासन यहाँ दिया गया है, वास्तविक मुक्ति उनके लिये नहीं है। अभिनव कहते हैं – – –

केचिदाचक्षते – द्विजराजन्यप्रशंसापरमेतद्वाक्यं, न तु स्त्र्यादिष्वपवर्गप्राप्तितात्पर्येण इति। ते हि भगवतः सर्वानुग्राहिकां शक्तिं मितविषयतया खण्डयतः तथा परमेश्वरस्य परमकृपालुत्वमसहमानाः, ... निरतिशययुक्तिप्रपञ्चसाधिताद्वैत– भगवत्तत्त्वे भेदं बलादेवानयन्तो, अन्यांश्चागमविरोधेनाचेतयमानाः परमन्तर्गर्भीकृतजात्यादिमहाग्रहाविष्टान्तःकरणाः मात्सर्यावहित्थ– लज्जाजिह्मीकृतावमुखदृष्ट्य इति हास्यरसविषयभावम् आत्मनि आरोपयन्ति इति।

(कुछ लोग कहते हैं कि (गीता का) यह वाक्य द्विजों और राजन्यों (क्षत्रियों) के प्रति प्रशंसापरक है और इसका आशय यह नहीं है कि स्त्रियों आदि को भी सचमुच मुक्ति मिल ही जायेगी। ऐसे लोग भगवान् की सर्वानुग्राहिका शक्ति को सीमित बनाकर उसे खण्डित करने की कुचेष्टा करते हैं, वे परमेश्वर की परमकृपालुता को सहन नहीं कर पाते, समस्त युक्तियों से सिद्ध होने वाले अद्वैत भगवत् –तत्त्व में वे बलात् भेद आरोपित करते हैं, आगमक ेि वरोधस ेअ न्योंक ोभ ीन स मझतेह ुएज ाति आदि को ले कर महान् आग्रह से आविष्ट अन्तःकरण वालेय ईर्ष्या, छल और लज्जा से कुटिल मुख और –दृष्टि वाले ये लोग अपने आपको हास्यास्पद ही बनाते हैं।)

व्याख्याकार परम्परा को सतत प्रवाह के रूप में देखता है, वह स्वयं इस प्रवाह का एक हिस्सा भी होता है, तथा सातत्य और संवर्धन का दायित्व भी वहन करता है। इस अर्थ में वह व्याख्येय कृति से अलग नहीं रह जाता।

अभिनवगुप्त सुदीर्घ कालावधि में फैली चिन्तन परम्पराओं को समग्रता में देख कर समेकित रूप में व्याख्या करते हैं। इसलिये उनके दर्शन व तन्त्र से सम्बद्ध ग्रन्थ, टीकाग्रन्थ व स्तोत्र तथा फुटकर काव्य आदि मिला कर भी परम्परा की व्याख्या का महावाक्य बनता है। रसविषयक

उनका विमर्श समन्वित व समग्र दृष्टि से निर्मित है, जिसकाअ ाभासअ भिनवभ ाारतीम ेंर सतत्त्वक ेि नरूपण की भूमिका में उन्होने अपने उद्गारों में दिया है।

पाठ के साथ संवाद, दर्शन, तन्त्र और धर्म की परम्पराओं के साथ संवाद, पूर्व के आचार्यों से संवाद, वरिष्ठ और कनिष्ठ समकालीनों से संवाद ये अभिनवगुप्त के संवादपरिधि के अनेक पक्ष हैं। वे भरतमुनि के पूरे नाटङशास्त्र को एक महावाक्य (मेटा डिस्कोर्स) के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तथा उसमें पूर्वापर संगति, सुश्लिष्ट संबंध और अन्विति के सूत्र निकालते हैं। इसके लिये वे गुरुपरम्परा से मिले शैवदर्शन के तत्त्वविचार का भरपूर उपयोग करते हैं।

अकबर

अल्बिरूनी ने संवाद के जो बीज बोये, वे मुगलकाल में अंकुरित और पल्लवित हुए।

अकबर (1556-1605) के समय संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों - वैदिकसाहित्य, उपनिषद्, महाभारत आदि के फारसी में अनुवाद का महनीय उपक्रम हुआ। अकबर ने 1582 में फारसी को राजकाज की भाषा घोषित किया, साथ ही द्वैभाषिकता या त्रैभाषिकता को भी बढ़ावा दिया। उपनिषदों के दर्शन के साथ इस्लामी तत्त्वचिन्तन की समकक्षता स्थापित करने के लिये अल्लोपनिषद् अकबर के शासनकाल में लिखा गया। रामायण तथा महाभारत के पारसी अनुवाद तैयार कराने के पीछे अकबर की सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि थी। वह अपने शासन के लिये प्रेरक सूत्र इन ग्रन्थों से प्राप्त करना चाहता था, तथा अपने शासन को जनता में वैधता भी स्थापित करना चाहता था। वस्तुतः 1560 से 1660ई.तक का सौ वर्षो का काल संस्कृत साहित्य के उन्नयन तथा फारसी और संस्कृत के पारस्परिक संबंधों के संवर्धन की दृष्टि से स्वर्णिम युग था।

अकबर एक आश्रयदाता तथा सम्राट् की हैसियत से संस्कृतक ेप ण्डितोंक ोअ ामंत्रितअ ौरस त्कृतक रतेह ों, ऐसा नहीं था, वे उनसे संवाद करने और सीखने के लिये उन्हें आग्रह के साथ बुलाते थे। बुद्धिजीवियों की सत्ता के संचालन में एक भूमिका हो सकती है, उसका एक उदाहरण अकबर का दरबार बनता गया था। संवाद में सम्प्रदायगत सीमाएँ और संकीर्णताएँ टूटती भी थीं, तो पण्डितोंक ाप ारस्परिकम नोमालिन्यए कस् वस्थभ ाूमिका के निर्वाह में बाधक भी होता था। कुछ पण्डितों ने स्वेच्छा से इस्लाम का अंगीकार किया था, जिनमें एक थे शेख भावन। वे मुसलमान बन गये थे। पर अकबर उनसे वैदिक धर्म के तत्त्व पर चर्चा करते थे। अकबर की उनके साथ संवाद की भित्ति इसलिये भी सुदृढ़ होती कि वे साम्प्रदायिकअ ाग्रहोंस ेम ुक्तह ोकरइ स्लामक ेअ नुकूल व्याख्या कर देते। इस संवाद का परिणाम था कि अकबर अथर्ववेद का फारसी अनुवाद कराने के लिये उत्सुक हुए।

मुनि हीरविजय का अकबर से बड़ी ही घनिष्ठ स्नेहसंबंध था। भानुचन्द्र और सिद्धिचन्द्र ये दोनों मुनि हीरविजय के मेधावी शिष्य थे। उन्होने दोनों को अकबर के पास भेजा था। अकबर इन दोनों के संस्कृत, प्राकृत तथा फारसी के ज्ञान से बहुत प्रभावित हुआ और उसने इनको खुश्रुहम की उपाधि प्रदान की। अकबर प्रत्येक रविवार को भानुचंद्र से सूर्यसहस्रनाम का पाठ सुनता था। सिद्धिचन्द्र से जहाँगीर और नूरजहाँ भी धर्मोपदेश सुनते थे।

चंद्रभान ब्राह्मण फारसी के न केवल अच्छे ज्ञाता थे, फारसी में कविता भी करते थे। उड़ीसा के कृष्णदास महापात्र शाहजहाँ के समकालीन थे। अकबर नामा में इनके संस्कृत साहित्य के प्रति अनुराग की भूरि भूरि प्रशंसा की गई है। इन्होने गीतप्रकाश नामक ग्रंथ की रचना मुगल आश्रय में रह कर की, तथा बादशाह के प्रतिनिधि के रूप मे दिल्ली से उड़ीसा की यात्रा की। नर्तननिर्णय के प्रणेता पुंडरीक विठ्ठल भी अकबर के प्रशंसित विद्वानों में थे। पद्मसुंदर ने रसशास्त्रनिरूपक अपने ग्रंथ अकबर शाहिशृंगार दर्पण में अकबर की प्रशस्ति में अनेक पद्य भी संकलित किये।

मुगलकाल में संस्कृत तथा फारसी के द्विभाषी कोश तैयारर् कयेग ये।प हलास ंस्कृतप ारसीक ोशग ुजरातम ें चौदहवीं शताब्दी में एक मुस्लिम शासक के संरक्षण में निर्मित हुआ। इसके प्रणेता का नाम सलक्ष था। इसी समय गुजरात में ही फरहत-अल् मुल्क के लिये नैषधचरित पर चंडू पण्डित की टीका की प्रति निर्मित की गई। पंद्रहवीं शताब्दी में भानुदत्त जैसे सुकवि तथा काव्यशास्त्र के एक

मूर्धन्य आचार्य हैदराबाद के निजाम शासकों के आश्रय में रहे। कर्णपूर का पारसीकपदप्रकाश अकबर के शासनकाल में निर्मित हुआ। राजकोशनिघण्टु तथा राजव्यवहारकोश में राजनीतिशास्त्र की शब्दावली का संग्रह किया गया। ये दोनों कोश शिवाजी के शासनकाल में तैयार किये गये। इनमें पारसी भाषा में प्रचलित प्रशासकीय शब्दावली के लिये संस्कृत के शब्द दिये गये हैं। राजव्यवहारकोश के प्रणेता रघुनाथ पण्डित हैं। ये शिवाजी के दरबार में थे।

इन कोशों में फारसी के अनेक शब्दों का संस्कृतीकरण किया गया। सुल्तान के लिये सुरत्राण, फरमान के लिये स्फुरमान जैसे शब्द गड़े गये।

अकबर ने आज के सम्मेलन कक्ष की तरह इबादतखाने की इमारत बनवाई थी। इबादतखाने के भीतर विभिन्न धर्मावलम्बियों से संवादकरते अकबार के उस समय के चित्र प्राप्त होते हैं। प्रतापकुमार मिश्र ने इबादतखाने में सत्संग करते हुए अकबर चित्र की प्रतिकृति अपनी पुस्तक में दी है। यह चित्र अकबर के समय का ही है।उ सस मयक ेप्र खरद ार्शनिकों,स तोंअ ौरक वियोंन े अकबर के सत्संगों में हिस्सा लिया। इनमें मधुसूदन सरस्वती जैसे महान् दार्शनिक, गोस्वामी विट्ठलनाथ और गोस्वामी यदुरूप, स्वामीनृसिंहाश्रम, स्वामीनारायण आश्रम आदि वैष्णव सन्त और वेदान्त के आचार्य थे। उस समय के सबसे बड़े जैन संतमुनि हीरविजय का बहुत स्नेह अकबर था। उनके साथ के बीस के लगभग मुनि अकबर के संपर्क में रहे। हीरविजय के शिष्य भानुचन्द्र गणि अकबर को सूर्यसहस्रनाम का नियमित अभ्यास कराते रहे। इसके लिये लाहौर जाकर अकबर के साथ उन्हें रहना पड़ा। जैन मुनियों ने अकबर पर संस्कृत में अनेक काव्य और प्रशस्तियाँ लिखीं हैं, हालाँकि उन्हें अकबर से अपने लिए कोई खैरात नहीं चाहिए थी।

संस्कृत के अनेकों ग्रंथों का अकबर के निर्देश पर विद्वन्मंडली ने फारसी में अनुवाद किया। अकबर द्वारा जारी राजकीय रजत मुद्राओं में अकबर की रामायण में ही नहीं, राम पर भीग हरी आस्था व्यक्त होती है। रामायण और रज्मनाम: (महाभारत) पर अकबर और रहीम की प्रतियों में बनवाये गये चित्रों का विवरण प्रताप कुमार मिश्र की पुस्तक में है। अकबर की अपनी रज्मनामा: या महाभारत की प्रति को चित्रों से सुसज्जित करने में उनके वेतनभोगी चित्रकारों को चार साल लगे थे। इस प्रति में 169 चित्र थे। मिश्र का यह कहना सही लगता है कि भारतीय चित्रकला में इतिहास में इन चित्रों का असाधारण महत्त्व है, तथा इस दृष्टि से इनका अध्ययन नहीं किया गया है। रज्मनाम: की असंख्य प्रतियाँ अकबर के आश्रित अमीर-उमराओं ने तैयार कराई, क्योंकि अकबर की दृष्टि में यह एक ईश्वरीय कार्य था।

अकबर पर और अकबर के विचारों से प्रभावित होकर उनके जीवन काल में ही काफी साहित्य लिखा गया- अकबर सहस्रनाम की रचना हुई, अल्लोप निषद् की भी। अकबर के द्वारा सम्मानित जैनमुनियों और संस्कृत के पण्डितोंक ीस ूचीब हुतलंबीस ूचीं मलतीह ै।ग ोविंदभट्ट संस्कृत के बड़े सरस कवि थे, जिन्हें अकबरीय कालिदास की उपाधि मिली। महेशठक्कुर के पाण्डित्य से प्रभावित होकर अकबर ने उन्हें मिथिला का राजा बनाया, जिसके बाद मिथिला में संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डितों की कई पीढियाँ शासन करती रहीं और वहाँ विद्या का अप्रतिम विकास हुआ।

अकबर सहस्रनाममाला (अकबरहजारा) अज्ञात कवि की रचना है। फैजी और अन्य सभी इतिहासकार इस पर मौन हैं, केवल बदायूँनी कुछ हिकारत के साथ मुन्तख॥ वुत्तवारीख या तारीख-ए-बदायूँनी में इसकी सूचना देते हैं। संस्कृत में अनेक देवी-देवताओं पर सहस्रनाम लिखे गये, किसी राजा पर सहस्रनाम लिखे जाने की सूचना इसके पहले नहीं मिलती।

अकबर का इबादतखाना उस समय अपने आप में एक क्रांतिकारी संस्थान बन गया था। उपनिषत्काल के राजा जनक की सभा में ब्रह्मोद्ययाज्ञान चर्चा के लिये संवाद हुआ करते थे। इबादतखाने में संवाद की वह परम्परा पुनरुज्जीवित हुई। अकबर के कटुआलोचक बदायूँनी के द्वारा दिये गये तथ्यात्मक विवरणों और अबुल फज्ल के द्वारा अकबर पर लिखे ग्रन्थ से भी यह बात एकदम साफ है कि इबादतखाना अपने समय में वैचारिक स्वराज्य का एक बड़ा संस्थान बनता जा रहा था। मुल्ले और मौलवी अकबर के विरुद्ध साजिश रच रहे थे, फतवे जारी कर रहे थे, विदेशक ेब ादशाहोंक ोअ कबरक ोन ेस्तनाबूदक रनेक े

लिये हमला करने को उकसाते रहे थे।

अकबर के सलाहकार दार्शनिक और संस्कृत तथा फारसी के पण्डित फैजी स्वयं धर्म के नाम पर होने वाले संकीर्णताओं से मुक्त हो कर विभिन्न मतों में संवाद देखते थे। उनका कहना था कि फैजी मस्जिद में जाता है तो मौलवी बन जाता है, और सोमनाथ के मन्दिर में जाता है तो काफिर हो जाता है –

गह जाहिद मस्जिदस्त फैजी

गह काफिर सोमनाथ बाशद।।

बादशाह अकबर से संत दादू की भेंट और उनके साथ चालीस दिन तक हुए सत्संग का उल्लेख रज्जब जी की सरवंदी में इस प्रकार मिलता है

अकबर साहि बुलाया गुरु दादू का आप।

साँच झूठ न्यारो हुआ तू रह्यो नाम प्रताप।।

जन गोपाल जी की दादू जन्म लीला परचई में भी यही बात कही गई है –

गोष्ठी करी दिवस चारीसा।

पार न पायो बिसवा बीसा।।

टेक अहै जैसी प्रहलादू। ज्ञान कबीर सुहावे दादू।।

इस प्रकार के अनेक प्रमाणों के आधार पर आचार्य क्षितिमोहन सेन जैसे विद्वानों ने स्थापित किया है कि अकबर से भेंट, सीकरी में निवास आदि घटनाए ऐतिहासिक हैं और प्रामाणिक हैं, जब कि मोतीलाल मेनारिया आदि कुछ विद्वान् उन्हें जनश्रुति ही मानते हैं। दादू की अकबर से भेंट संवत् 1640 हुई मानी जाती है।

दाराशुकोह

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर मन्नत माँगने के बाद 1625ई. में शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र का जन्म हुआ था। पिता ने नाम दाराशुकोह रखा था औरंगजेब ने उनेक विरुद्ध ईर्ष्यावश दुष्प्रचार करते हुए उन्हें दाराशुकोह बना दिया। लतीफ सुल्तानपुरी, मीरन शेख और अजमद देहलवी से दाराशुकोह ने इस्लामी दर्शन की शिक्षा पाई। बादशाह शाहजहाँस्‍ वयंए कस मयस स्ंकृतक ेप ण्डितोंक ीस ंगत पसंद करते थे।

दारा शिकोह ने देश व विदेश के श्रेष्ठ ज्ञानियों से विमर्श करते हुए वैश्विक संवाद के लिये तैयारी की। वे एक प्राज्ञपुरुष हैं। लतीफ सुल्तानपुरी, अजमद देहलवी तथा मीरन शेख एक ओर तो दूसरी ओर बाबा लालदास बैरागी, पण्डितराज जगन्नाथ और काशी में रामानंद त्रिपाठी के सान्निध्य में दारा ने इस्लाम की सूफी व संस्कृत की वेदान्त और उपनिषद्दर्शन की परम्पराओं को आत्मसात् किया। शाहजहाँन ेद ाराशुकोहक ोव ेदान्तप ढ़नेक ेि लयेक ाशी भेजा था। काशी में दारा के गुरु रहे रामानंदपति त्रिपाठी। रामानंदपति त्रिपाठी के प्रपितामह दिवाकर त्रिपाठी गोरखपुर से विद्याध्ययन के लिये काशी आये थे। फिर सपरिवार यहां बस गये। इनके पिता का नाम मधुकर था। रामानंदपति का समय 1625–75 के आसपास है। इनको शाहजहाँ के द्वारा सम्मानित किया गया था। काशी की पण्डित मण्डली में ये अपने समय में मूर्धन्य थे। संन्यास लेने पर इनका नाम ज्ञानानंद हुआ। काशी में लक्ष्मीकुंड के पास कालीमठ की स्थापना की।

दाराशुकोह ने समुद्रसङ्गम की रचना के पूर्व अनेक वैदिक पण्डितों व सूफियों से परामर्श किया था। अपने इस ग्रंथ के आरंभ में ही वे कहते हैं – अथ च कैश्चित् कैश्चित् परिपूर्णवैदिकैः सह विशेषतश्चौतन्यस्वरूप–ज्ञानमूर्ति– सद्‌गुरु–श्रीबाबालालस्य अन्तिके तपश्चर्यायाः ज्ञानस्य साम्बुधयफलस्येश्वरप्राप्तेः शान्तिं च प्राप्तवान् तेन च सह पुनः पुनः स्ंगतीर्गोष्ठीश्चाकरवम्, परं परिभाषावेदातिरक्तिं कमपि भेदं स्वरूपावाप्तौ नापश्यम्। अतश्च द्वयोरेकवाक्यतामकरयम्। (समुद्रसङ्गम, पृ.)

(इसर्ी वचार–विमर्शक ीप्र क्रियाम ें)म ैंनेक तिपय परिपूर्ण वैदिक पण्डितों का सान्निधय भी प्राप्त किया, विशेष रूप से चैतन्यस्वरूप, सद्‌गुरु श्री बाबालाल के पास रहकर उनकी तपस्या, ज्ञान के अवबोध के फल ईश्वर की प्राप्ति तथा शान्ति का लाभ मैंने पाया। फिर मैं बार–बार उनके साथ संगति तथा संगोष्ठी करता रहा। पर मनुष्य के सच्चे स्वरूप के प्रत्यय में (इस्लाम तथा वैदिक मत के बीच में) परिभाषाओं के भेद के अलावा कोई तात्त्विक भेद मुझे नहीं दिखाई दिया। इसलिए मैंने इन दोनों के बीच समन्वय स्थापित किया है।)

सन्त बाबा लाल के प्रति दारा की विशेष श्रद्धा थी, जिनका वे समुद्रसङ्गम में चौतन्य स्वरूप प्रज्ञान मूर्ति कह करस्‍ मरणक रतेह ैं।प ण्डितच न्द्रभानन ेब ाबाल ालक े

साथ हुए उनके छह संवाद सत्रों का उल्लेख किया है। इनका लेखा जोखा राय जाधवदास तथा चन्द्रभान ब्राह्मण ने तैयार किया था।

दाराशुकोहभ् ाारतीयम नीषाक ेव ैश्विकस ंवादक ी दृष्टि से अलबिरूनी के बाद पूरी सहस्राब्दी में सबसे बड़े संवादपुरुष हैं, उन्होने सिर्र-ए-एकबर में 52 उपनिषदों का जो अनुवाद कर दिया था, उसी का तर्जुमा एंटकिल दुपेरों ने 1801-02 में लेटिन में किया। दुपेरों के उसी अनुवाद के अनुवाद से अन्य योरोपीय भाषाओं में उपनिषदों के पुनः अनुवाद रूपांतर तैयार किये गये, जिससे शापेनहार, इमर्सन, हर्डेल आदि अनेक दार्शनिक भारतीय तत्त्वचिन्तन से प्रभावित हुए। हम भारतीय चिन्तन की महत्ता और विश्व को उसकी देन का जब गुणगान करते हैं, तो यह भूल जाते हैं कि प्रति पंक्ति मूल का अध्ययन कर के दाराशुकोह ने उपनिषदों के फारसी अनुवाद न किये होते और इन अनुवादों के माध्यम से उपनिषदों का चिन्तन ईरान और अरब देशों के जरिये योरोप तक न पहुँचता, तो उन्नीसवीं शती में विश्व उपनिषद् से परिचित न हो पाता। जिस तरह पंचतन्त्र के पहलवी और सीरियाई अनुवादों ने विश्व में भारतीय कथापरम्परा को प्रतिष्ठित किया, उसी तरह दारा के द्वारा किये गये फारसी अनुवाद ने उपनिषदर्शन को वैश्विक प्रतिष्ठा दी। फ्रांस के चिकित्सक तथा दार्शनिक फांकोइस बर्नियर बारह वर्ष मुगल दरबार में रहा। वह दारा के निजी चिकित्सक के रूप में नियुक्त किया गया था। बाद में उसके व्यापक ज्ञान का उपयोग करने के लिये उसे दानिशमंद खान के सलाहकार का काम दिया गया।

दाराशुकोहक ीज घन्यह त्यान ेक ाशीक ीप ण्डित मंडली को हतप्रभ और शोकाकुल कर दिया था, क्यों कि दारा अपने समय के सबसे बड़े संवादपुरुष थे। उनके गुरु रामानंद त्रिपाठी ने संस्कृत में दारा की जघन्य हत्या के बाद संस्कृत में उन पर जो मर्सिया या शोककाव्य लिखा, उसमें काशी की पण्डितमण्डली की वेदना व्यक्त हुई है।

अनेक राजनीति वात्याचक्रों अपने विरुद्ध चल रहे षडयंत्रों के बीच दारा उपनिषदों पर चिन्तन मनन व लेखन करते रहे। 42 वर्ष की आयु में अपनी जघन्य हत्या के पाँच वर्षप हलेउ न्होंनेस मुद्रसङ्गमप ुस्तकप ूरीक ी।स ूफियों को वे ऐकात्म्यवादी मानते हैं, क्यों कि सूफी मत वेदान्त से सामंजस्य व ऐकात्म्य स्थापित करता है। दोनों परम्पराओं का साम्य देखते हुए उन्होने अपने मत को सत्यैकात्मवाद बताया। दारा के अनुसार वेदान्त तथा इस्लामी दर्शन के अंतर्गत सूफी परम्परा - ये दो सागर हैं, जिनका संगम उन्होने इस ग्रन्थ में किया है अतः इस का नाम समुद्रसङ्गम रखा गया - ज्ञानिनोर्द्वयोरपि मतसमुद्रयोरिह स्ंगम इति चास्य नाम चास्थापयम् समुद्रसङ्गम इति (ससं. 1.2)।

समुद्रसङ्गम में बीस प्रकरण हैं। पंच महाभूत, इंद्रियाँ, ध्यान, ईश्वरतत्त्व, आत्मा, सृष्टि प्रक्रिया, नूर, मोक्ष, ईश्वरसाक्षात्कार, सिद्ध का स्वरूप, दिक्कालस्वरूप, इहलोक व परलोक, प्रलय को विषय में दोनों परम्पराओं में साम्य वैषम्य व अंतर्निहित मूलभूत एकता को दारा प्रदर्शित करते हैं। तुलनात्मक तत्त्वमीमांसा या हरम्युनिटिक्स की यह पहली महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। दारा कहते हैं कि शब्दावली तथा विभिन्न कोटियों के वर्गीकरण में आपातः भेद होते हुए भी दोनों विचारधाराओं अपने मूलभूत तत्त्वविवेक में समान हैं, अतः इनमें एकवाक्यता स्थापित की जा सकती है। कट्टरपंथी यदि इस से सहमत नहीं हैं, तो वे कुंठाओं के शिकार हैं - भेदवादिनस्तु कुण्ठितमतयः। जिन पण्डितों से दारा ने परामर्श किया उन्हें वे परिपूर्ण वैदिक कहते हैं। सन्त बाबा लाल बैरागी को दारा ने चौतन्यस्वरूप प्रज्ञानमूर्ति कहा है। संभवतः योगवसिष्ठ के अपने अध्ययन के आधार पर वे आकाश के तीन प्रकार बताते हैं भूताकाश, चिदाकाश और चित्ताकाश। वे पंचमहाभूतों के समानांतर इस्लामी दर्शन के उंसूरे आलम, वाद (वात), आतश (अग्नि),आब (आपस्) तथा षोक - इन तत्त्वोंकी चर्चा की है। बृहदारण्यक उपनिषद् के आधार पर उन्होंने इन्द्रियों व पंच तन्मात्राओं के विवेचन में भी वेदान्त व इस्लामी दर्शन में साम्य पाया है। भारतीय दर्शन सृष्टि के उद्भव सत्त्व, रजस् तथा तमस् इन तीन गुणों से मानता है। इस्लाम की परम्परा में इनके समतुल्य जिब्राईल, मिखाईल तथा ईसराफील की अवधारणाएँह ैं।इ सीप्र कारज ीवात्माव प रमात्माक ेव ं रूह के विविध प्रकारों से तुलनार्ह ठहराते हैं। रूह-ए-आजम परमेश्वर के समकक्ष है। दारा ने कुरान शरीफ (4.35) से उद्धरण देते हुए प्रमाणित किया है कि ब्रह्मसाक्षात्कार की तरह अल्लाह का दीदार हो सकता है।

मुक्ति के स्वरूप पर भी अन्तर्दृष्टि के साथ दारा ने दोनों परम्पराओं के वैशिष्टय व आंतरिक एकात्म्य को पकड़ा है।

दाराशुकोह की चेतना पर वैदिक परम्परा तथा इस्लाम दोनों का संस्कार इतना गहरा है कि वे कुरान को 'हमारा वेद' कहते हैं (समुद्रसङ्गम, पृ. 34)। वे कुरान तथा वेद दोनों को एक दूसरे के सन्दर्भ में परिभाषित करते हैं, तथा दोनों की अद्वितीयता के प्रति भी सचेत हैं। इस अर्थ में दारा एशियाई संस्कृति तथा इस महाद्वीप की दार्शनिक चेतना के पहले महत्त्वपूर्ण भाष्यकार कहे जा सकते हैं।

समुद्रसङ्गम ज्ञान की पिपासा, सत्य की खोज तथा रचनात्मक चिन्तन के द्वारा राष्ट्र निर्माण की दिशा प्रशस्त करने वाली किताब है, और यह किताब दारा ने केवल अपने समय के लिए ही नहीं, आने वाले समय के लिए भी लिखी थी। यह इस देश के लिए ही नहीं, समूचे एशिया महाद्वीप के लिए एक जरूरी किताब है। दारा की मौत के दस वर्ष बाद अरबी में इसका पहला अनुवाद तैयार किया गया, उसके बाद और भी अनेक भाषाओं में इसके अनुवाद होते रहे (समुद्रसङ्गम, सं. पं. बाबूलाल शुक्ल, भूमिका, पृ. 5)।

दारा ने बहुत सरल संस्कृत में यहाँ अपनी बात कही है। उनकी भाषा में सन्तों की वाणी की बानगी है। धार्मिक ग्रन्थों का अनुशीलन ही नहीं, दारा का अपना अनुभव उसमें बोलता है। वे एक सर्वात्म सत्ता को स्वीकार करते हैं, और उसका निर्वचन इस प्रकार करते हैं–

प्रतिवेशी सवासी च सहगः सर्वमेव च।
पटच्चरे दरिद्रस्य क्षौमे राज्ञः स सर्वतः।
भाति संसदि भेदोखयमभेदो रहसि स्फुटः।
ईशस्य शयनं भूयस्तच्छयः सर्वमेव सः।।
(समुद्रसङ्गम, 1, 2)

(ईश्वर हमारा पड़ोसी भी है, और साथ निवास करने वाला तथा साथ चलनेवाला भी है। यह सब कुछ वही है। दरिद्र के चीथड़े में तथा राजा के रेशमी कपड़ों में भी वही रमा हुआ है। समाज में उसका भेद प्रतीत होता है, एकान्त में सबसे उसका अभेद झलकने लगता है। यह ससांर ईश्वर की शैया भी है, और शैया के भीतर भी वही है।)

दारा ने वैदिक तथा इस्लामी परम्पराओं के बीच समाकारिताय ास ाम्र्या नम्नलिखितअ ाधारोंप रद ेखाह ै–

सृष्टिप्रक्रिया, पदार्थतत्व तथा मुक्ति की अवधारणा। उन्होंने इस्लाम और वेदान्त के बीच सेतु बनाते हुए सृष्टि की प्रक्रिया का जो विवेचन किया है उसमें पंच महाभूतों की अवधारणा में दोनों परम्पराओं का अपना अपना वैशिष्टय और दोनों में पार्थक्य भी प्रदर्शित किया। चिदाकाश से इश्क नामक पदार्थ उत्पन्न हुआ। वस्तुतः कुरान तथा उपनिषदों के तत्त्वदर्शन में चिन्तन की एकाकारिता पर दारा ने पर्याप्त शोध किया अनेक धर्मसिद्धान्तों का आलोडन करके यह सुनिश्चित मन्तव्य दिया कि ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है। वे कहते हैं–'परमेश्वर का दर्शन ज्ञानचक्षुओं के द्वारा मुनि लोग कर लेते हैं इसमें न कोई शंका सम्भव है, न परम्परा वरोधह ी।ि जतनेभ ीअ पौरुषेयग्र्न्थय ाप रिपूर्ण दर्शन हैं, उन सबकी इस विषय में स्वीकृति तथा श्रद्धा है–चाहे वह कुरान हो, या वेद या तौरात या इंजील।' सुन्नी मत का हवाला देते हुए दारा कहते हैं कि जब तक ईश्वर निर्गुण तथा निराकार है, तब उसका प्रत्यक्ष नहीं हो सकता, जब वह परिच्छिन्न हो जाता है तभी प्रत्यक्षगोचर हो पाता है। (वही, पृ. 29)।

दारा ने ईश्वरदर्शन की जो कोटियाँ बताई है, उनके द्वारा वे नए दर्शन का निर्माण करते हुए प्रतीत होते हैं। प्रथम दर्शन स्वप्न में मन की आँख से होता है। द्वितीय दर्शन जाग्रत अवस्था में मस्तिष्क की आँख से होता है। तृतीय दर्शन स्वप्न और जागरण के बीच विशेष निरहंकार रहने की स्थिति में होता है। चौथा दर्शन सीमित चेतना के भीतर होता है। पाँचवी कोटि में मनुष्य ईश्वर से सर्वथा एकाकार होता है (समुद्रसङ्गम, पृ. 32)।

ईश्वरदर्शन की कोटियों के अनुसार ही मुक्ति की भी विविध कोटियाँ बनती हैं। यह मुक्ति तीन प्रकार की है- प्रथम जीवन्मुक्ति, दूसरी सर्वमुक्ति, जिसे विदेह मुक्ति भी कहा गया है। दारा ने इसकी व्याख्या सबकी मुक्ति के रूप में की है। तीसरी मुक्ति सर्वदा मुक्ति या नित्य मुक्ति है। दारा के इस विवेचन से मुक्ति का स्वरूप बदल जाता है, वह पहली दो कोटियों में निरपेक्ष सत्ता नहीं है। कुंजान-अकबर या फिरदौस्स् आला में लय होना महामुक्ति या परम मोक्ष है।

दारा की दृष्टि विभिन्न धर्मपन्थों की मूलभूत एकता को समझाने में है, पर इन पंथों में चिन्तनगत वैषम्य को उन्होंने अनदेखा नहीं किया है। ऐकात्म्यवादी इस्लाम में दो ही गुणों के द्वारा सृष्टि का प्रादुर्भाव माना गया है-जलाल तथा जमाल। वैदिक परम्परा के दर्शन तीन गुण मानते हैं- सत्त्व, रजस् और तमस् रजोगुण से उत्पत्ति, सत्त्व गुण से पालन तथा तमोगुण से लय होता है। इस्लाम की दृष्टि से जमाल के द्वारा उत्पत्ति और पालन दोनों सम्भाव्य हो जाते हैं। ईश्वर के साक्षात्कार के विषय में इस्लाम, वैदिक दृष्टि तथा स्फी मतों में परस्पर अन्तर है। पर दारा इस तरह के दृष्टिभेद के पार देखते हुए सारे मतों में अभेद पाते हैं। ईश्वर का साक्षात्कार चर्मचक्षुओं से सम्भव नहीं। निस्सीम की सीमा में कैसे बाँधा जा सकता है? जब हम अपनी सीमाएँ तोड़कर स्वयं असीम हो जाते हैं, तब न देखने वाला रह जाता है, न देखा हुआ रह जाता है-दृष्टा और दृश्य में अन्तर नहीं होता। तब ईश्वर को देखा-यह भाषागत व्यवहार मात्र है। भाषा के इस व्यवहार की अपनी सीमा होती है, इसके कारण अलग-अलग पन्थ अलग-अलग दृष्टि से ईश्वर का स्वरूप बता सकते हैं। पैगम्बर कहते हैं कि मैंने ईश्वर को दिव्य प्रकाश के रूप में देखा है। उपनिषद् इसे अपनी भाषा में कहता है कि परम तत्व ज्योतिःस्वरूप तथा स्वयंप्रकाश है। पैगम्बर के कथन की यह व्याख्या दारा असंगत मानते हैं किप रमेश्वरक ास ाक्षात्कारअ सम्भवह ै(समुद्रसङ्गम, पृ. 31)। साक्षात्कार का अनुभव इतना अद्वितीय तथा अनिर्वचनीय होता है कि यदि उसके विवरण को शब्दों में बाँधने की चेष्टा की जाए, तो ऐसे विवरण परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं, जबकि तात्त्विक दृष्टि से देखा जाए तो ये विरोध नहीं रह जाते।

दारा की व्याख्याएँ कई जगह साहसिक भी हैं और मौलिक सोच से उपजी हुई भी। प्रणव या ओंकार परमात्मा के निःश्वास से उत्पन्न है। यही वेद है। अरबी में इसी को 'कुन्' कहा गया है। शुद्ध नाद के रूप में यही सरस्वती है। इसी प्रकार भारतीय मिथक शास्त्र के देवगणों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश दारा की दृष्टि में क्रमशः रजस् सत्त्व और तमस्-इन तीन गुणों के प्रतीक हैं। इस्लामी दर्शन में ये ही 'जबरईल', 'मीकाईल' तथा 'इसरफ़ील' हैं (समुद्रसङ्गम, पृ. 15)। इस व्याख्या-पद्धति को आगे ले जाते हुए दारा इन तीनों को क्रमशः जल, तेजस् तथा वायु- इन तीन भूतों से सम्बन्धित करते हैं। इस्लामी परम्परा में 'रूहे-जुजवी- तथा 'रूहे-कुली' को दारा ने औपनिषदिक चिन्तन के जीवात्मा और परमात्मा का पर्याय माना है।

अलबिरूनी तथा दाराशुकोह दोनों ने भारतीय मनीषा के संवाद के लिये दो पद्धतियाँ अपनाई - एक तो अनुवादात्मक, दूसरी मीमांसात्मक। दूसरी पद्धति को साम्प्रतिक विमर्श में हरमेन्यूटिक्स कहा जाता है। अलबिरूनी ने सांख्य और योग के ग्रन्थों कासंस्कृत से अरबी में अनुवाद किया, जो अरब देशों में ही नहीं, योरोप के देशों भी भारतीय चिन्तन के प्रसार के लिये माधयम बने।

अलबिरूनी और दाराशुकोह दोनों ने भारतीय प्रज्ञा में इतरस ंस्कृतियोंअ ौरइ तरज ातीयप रम्पराओंक ेप रिप्रेक्ष्य को समझ कर उसकी जो व्याख्या की, एक वैश्विक संवाद का माध्यम बनी।

(क्रमशः)

सत्याग्रह- प्रयोगों के लिए खुला है भविष्य

आचार्य राममूर्ति

युग-पुरुष युग के प्रवाह को समझ लेता है और उसको वर्तमान प्रवाह के साथ जोड़ देता है। 19वीं शताब्दी के दो महापुरुषों ने यह काम असाधारणत ैरप र ि कया।ए कक ार्लम ार्क्सथ ा,ज ोथ ात ोज र्मनीक । लेकिन श्रम का पूंजी के द्वारा होने वाला शोषण उसकी पहचान में अच्छी तरह तब आया जब उसने लंदन के ब्रिटिश म्युजियम में बैठकर दस वर्षों तक लगातार सभ्यताओं का इतिहास पढ़ा। स्वाध्याय से समाज-दर्शन बन सकताह ै,इ सकाउ दाहरणम ार्क्सस ेअ च्छाश ायदद ूसराक ोईन हींह ो सकता। दूसरा उदाहरण गांधी का है जिसने साधना के द्वारा नया जीवन-दर्शन विकसित किया, नया समाज-दर्शन विकसित किया, इतना ही नहीं क्रांति के समग्र दर्शन को बदल दिया। मार्क्स और गांधीजी में इतनी समानता मानी जा सकती है कि मार्क्स ने शोषण के द्वारा श्रमिक पर होने वाली हिंसा को पहचाना और गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद द्वारा होने वाली हिंसा को पहचाना।

मार्क्स ने कहा: 'आज तक जितनी सभ्यताएं विकसित हुई हैं उन सबकी जड़ें हिंसा में हैं। मार्क्स के पहले इस सत्य को किसी चिंतक ने पहचाना नहीं था। यों तो गांधी का समय मार्क्स से चौबीस वर्ष बाद आता है फिर भी जब पत्रकारों ने उनके सामने मार्क्स की कही हुई यह बात कही कि क्या आप मार्क्स की इस बात से सहतमत है तो गांधीजी ने उत्तर दिया: 'इसमें 'भारतीय सभ्यता' जोड़ दो तो मैं पूरी तरह सहमत हूं।ह हमें अपनी सभ्यता के आध्यात्मिक होने पर सदा गर्व रहा है। किंतु हमारी आध्यात्मिकता की आड़ में कहीं हिंसा छिपी हुई है, यह बात हमने कभी सोची नहीं, गांधी के पहले कभी किसी ने नहीं सोची। मार्क्स का शाोषण और गांधीजी का वर्णभेद, दोनों मिला दें तो आज तक की विकसित सभ्यता की जड़ें सफ दिखाई देने लगेंगी।

जब विनोबा ने अपना भूदान यज्ञ आंदोलन शुरू किया तो सचमुच वे शोषणमुक्त स्वामित्व की खोज कर रहे थे। उनकी इस खोज को हम मार्क्स कीश ोषणमुक्तिम ानेंगेय ाग ांधीन ेि जसेश ांतिक ेि हंसा-मुक्तस ंस्कृति कहीं, उसका अभ्यास कहेंगे ? वास्तव में विनोबा ने महात्मा गांधी और महामुनि मार्क्स को साथ बैठाने का काम किया। समन्वय का मार्ग विनोबाजी ने अपने तेरह वर्षों की अनवरत पदयात्रा में गांव-गांव फैलाया

मार्क्स ने कहा: 'आज तक जितनी सभ्यताएं विकसित हुई हैं उन सबकी जड़ें हिंसा में हैं। मार्क्सक ेप हलेइ सस त्यक ो किसी चिंतक ने पहचाना नहीं था। यों तो गांधी का समय मार्क्स से चौबीस वर्ष बाद आता है फिर भी जब पत्रकारों ने उनके सामने मार्क्स की कही हुई यह बात कही कि क्या आप मार्क्स की इस बात से सहतमत है तो गांधीजी ने उत्तर दिया: 'इसमें 'भारतीय सभ्यता' जोड़ दो तो मैं पूरी तरह सहमत हूं।

और उन्हें पूर्ण समर्थन मिला। यह मानव-धर्म का पदार्थ-पाठ था जिसे गांधी ने शुरू किया, उसे विनोबा ने आगे बढ़ाया, जयप्रकाश की संपूर्ण क्रांति उस पाठ का अंतिम अक्षर नहीं है। अंतिम अक्षर शायद कभी मिलेगा ही नहीं। मनुष्य बढ़ता जाएगा, सभ्यताओं के स्वरूप बदलते जाएंगे और समन्वय के नए-नए रूप प्रकट होते रहेंगे। एक महत्व की बात मार्क्स के ध्यान में नहीं आई। वे यहां तक तो पहुंच गए कि राज्य से मुक्त होने पर ही नागरिक की मुक्ति है लेकिन मनुष्य का जीवन हिंसा से मुक्त कैसे होगा, इसका उपाय शायद वे नहीं सोच सके। यह काम गांधी को करना पड़ा। यह काम बुद्ध ने किया था। लेकिन बुद्ध की सिद्धि उनकी साधना से आई थी। हम यह अपेक्षा नहीं रख सकते कि हर नागरिक साधक होगा और अपनी साधना के बल पर अपने जीवन-मूल्यों को सिद्ध करेगा। गांधी ने यही काम पूरा किया शांति की संस्कृति के द्वारा, यहां तक कि चित्त की शुद्धि के लिए उन्होंने नई तालीम पर भरोसाि कया,ि कसीि वशेषप्र कारक ीस ाधनाप रन हीं। विनोबा भी अध्ययन और साधना के परिणाम से प्रकट हुए हैं, जिसमें राजनीति तो है लेकिन सत्ता का संघर्ष नहीं है, जिसमेंअ ध्यात्मभ ीहै ल ेकिनअ ध्यात्मक ेन ामस ेह ोने वाली विशेष साधना नहीं है। गांधी का सत्याग्रही, विनोबा का लोक सेवक, जयप्रकाश की उन्नत नागरिकता- जीवन के ये तीनों नमूने हमारे सामने हैं। हमें निर्णय करना है कि हम अपने जीवन के लिए किस नमूने को सिद्ध करते हैं। आज भारत के नागरिकों को, हर नागरिक को और नागरिकों के समुदाय को यह तय कर लेना पड़ेगा कि वह अपने लिए इन तीनों नमूनों में से किसको पसन्द करता है। यह बात तो सिद्ध हो चुकी है कि आज की राजनीति का उन्नत नागरिकता से मेल नहीं है, पुरोहित के धर्म में जीवन के उन्नत मूल्य नहीं हैं, प्रचलित शिक्षा में नए जीवन की कोई योजना नहीं है। इन कारणों से यह जरूरी हो गया है कि हमें शांति की पूरी नई संस्कृति चाहिए, जिसके अनुसार हम ऐसा जीवन जी सकें, जिसमें हिंसा की जरूरत न हो, जिसमेंह मारीर ोटीश ोषणमुक्तह ोअ ौरप ड़ोसीक ेस ाथ हमारा जीवन हिंसामुक्त हो।

हमारा समाज पारंपरिक समाज है। परिवर्तन के क्रम में दूसरा चरण लोकतंत्र का है, तीसरा चरण नैतिक समाज का होगा, जिसे गांधी ने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में प्रस्तुत किया है। आज हमारे सामने प्रश्न है कि पारंपरिक समाज लोकतांत्रिक समाज कैसे बनेगा। भारत पर अंग्रेजों का राज था, वह समाप्त हुआ लेकिन हम उस अर्थ में स्वतंत्र हुए हैं जिस अर्थ में हमारे अंग्रेज शाासक हमें छोड़कर गए थे। एक हिंदू के हाथों होने वाली गांधी की हत्या ने इतनी बात सिद्ध कर दी कि हिंदू और मुसलमान साथ नहीं रह सकते। क्या स्वराज्य भी यही कहना चाहता है कि विभिन्न जातियों, धर्मों और संस्कृतियों के लोग एक पड़ोस में पड़ोसी के नाते नहीं रह सकते! यदि हम यह नहीं कहना चाहते तो हमको यह मानकर चलना पड़ेगा कि लोकतांत्रिक समाज में विभिन्नताओं को कोई महत्व नहीं दिया जाएगा और समाज तथा सरकार, दोनों तरफ से यह प्रयत्न होगा कि विषमताएं भी क्रम से घटती जाएं और एक बिन्दु पर पहुंचकर समाप्त हो जाएं। बुद्ध ने लोकतंत्र का यह सूत्र दिया था कि मिलो, संवाद करो और उस समय तक संवाद करते रहो जब तक कि सहमति न हो जाए। आज का लोकतंत्र विरोधवादी है। विरोध क्यों हो अगर लोकतंत्रक ाअ ाधारस हकारअ ौरस हमतिह ो।प हलेस े माना हुआ विपक्ष इसलिए जरूरी मान लिया गया है क्योंकि निर्णय बहुत से होते हैं। अल्पमत केवल विरोध करता है। ये सब काम उन्नत नागरिकता के धरातल पर पूरे किए जा सकते हैं। इनके लिए दल बनाना और भारत जैसे जातिवादी देश में जातिवादी राजनीति के प्रकट होने से रोकने के लिए संकट के समय सर्वदलीय बैठकें बुला लेना पर्याप्त नहीं है। इसलिए शांति की संस्कृति चाहिए। शांति की संस्कृति ऐसी मांग नहीं करती जिसको शिक्षा पूरी नहीं कर सकती। उन्नत नागरिकता से लोकतंत्र उन्नत होगा, उसे पुलिस के डंडे की जरूरत नहीं होगी, कोर्ट कचहरी की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सन् 1934 में बंबई में कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन हुआ उसमें गांधीजी ने कांग्रेस के संविधान में एक संशोधन पेश किया। कांग्रेस के संविधान में कांग्रेस के उद्देश्यों में यह बात लिखी हुई थी कि 'शांतिपूर्ण और वैध' उपायों से स्वराज्य प्राप्त करना है। गांधीजी चाहते थे कि शांतिपूर्ण और वैध उपायों के स्थान पर 'सत्यपूर्ण और अहिंसक' रखा जाय। कांग्रेस महासमिति ने गांधीजी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। गांधीजी कांग्रेस से अलग

हो गए। यह एक उदाहरण यह बताने के लिए कफी है कि सत्याग्रह के प्रश्न पर गांधी और कांग्रेस में क्या मतभेद था। नेहरूजी कताई नियमित रूप से करते थे लेकिन नहेरूजी ने खादी को आजादी की वर्दी से ज्यादा कभी कुछ माना नहीं। जबकि गांधीजी के लिए खादी हथियार तो थी ही, इससे बढ़कर भी थी। गांधीजी ने उसमें दरिद्रनारायण की सेवा का साधन भी देखा और सबसे बड़ी बात देखी कि कोई समय आएगा जब खादी नई समाज-रचना का साधन बनेगी। खादी की जो रेखा गांधीजी की निष्ठा और सामान्य कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ताओं की निष्ठा के बीच में थी, उसी तरह सत्य और अहिंसा भी गांधीजी के लिए ऊंचे नैतिक मूल्य थे। कुछ के लिए ये प्रतिकार के हथियार थे।

इस दृष्टि से हमें सत्याग्रह को कई दृष्टियों से देखना चाहिए। जो लोग यह कहते हैं कि अब आजादी मिल गई इसलिए सत्य और अहिंसा पर जोर क्यों दिया जाए और खादी को समाज-निर्माण के लिए अनिवार्य क्यों माना जाए वे अपनी बात कहते हैं, गांधी की बात नहीं कहते हैं। क्या अपने जीवन की साधना हो, क्या परिवार का जीवन हो, और क्या समाज के सामान्य समूह को साथ ले चलने का प्रयत्न हो, इस सबका अभ्यास गांधीजी ने दक्षिण अफीका में ही शुरू कर दिया था। इतना जरूर हुआ कि सत्याग्रह जैसेन ैतिकह थियारम ेंग ांधीक ा विश्वासद ृढ़ह ोग या। इसलिए दक्षिण अफीका के सत्याग्रह को हम प्रारंभिक अभ्यास के रूप में देख सकते हैं। अवश्य गांधी को पैसिव रेजिस्टेंस शब्द बदलकर सत्याग्रह शब्द इसलिए रखना पड़ा कि पैसिव रेजिस्टेंस शब्द से सत्याग्रह का पूरा अर्थ भी नहीं निकलता था और सत्य की जो तीव्रता सत्याग्रह में है, वह पैसिव रेजिस्टेंस में नहीं थी। रंगभेद में जो हिंसा छिपी हुई थी, उसके प्रतिकार के रूप में सत्याग्रह का पूरा प्रयोग दक्षिण अफीका में हुआ। भारत में उसका प्रयोग विदेशी शासन के अंत के लिए हुआ।

गांधीजी के बाद उनके अनन्य शिष्य विनोबाजी ने विचार-परिवर्तन, समाज- परिवर्तन और समाज-रचना के रूप में सत्य का अत्यन्त सौम्य रूप प्रकट किया। जे-पी- इस नतीजे पर पहुंच गए थे कि भारत के विकास में परिवर्तन का दूसरा चरण लोकतंत्र का ही होगा। इसलिए उन्होंने जो कुछ किया लोकतंत्र के लिए किया, प्रचलित लोकतंत्र के द्वारा किया, संविधान की सीमा के अंदर रहकर किया। यह बात गांधीजी के दिमाग में भी थी। अंग्रेजी राज की समाप्ति के बहुत पहले जब पत्रकारों ने पूछा कि अंग्रेजी राज के समाप्त हो जाने पर कौन-सा काम आप सबसे पहले करना चाहेंगे तो उन्होंने उत्तर दिया, 'लोकतंत्र को आगे बढ़ाना। यह ठीक है कि गांधी और जे-पी- दोनों के सामने लोकतंत्र है, दोनों का लोकतंत्र दलों का नहीं है बल्कि उनका लोकतंत्र पंचायत से शुरू होता है। गांधी मार्क्स के साथ राज्य-शक्ति के क्षय तक जाते हैं या यह कहाज ास कताह ै कि गांधी राज्य की दमन-शक्ति का क्षय चाहते हैं और बदली परिस्थिति में आज कोई रचनात्मक काम हो तो उस हद तक राज्य-शक्ति को रखने तक राजी हो जाएंगे। जे. पी. इस प्रश्न को भविष्य के लिए छोड़ देते हैं। लोकतंत्र का नागरिक शांति तो चाहता है लेकिन कानून और संविधान के अंदर। जे-पी- को संतोष हो जाएगा अगर उनके लोकतंत्र का नागरिक विकेन्द्रित सत्ता का लाभ उठाने की क्षमता विकसित कर ले और समान स्तर? पर लोकशक्ति और सरकार-शक्ति के सम्मानपूर्ण सहयोग की भूमिका बन जाए। गांधी की स्थिति इससे थोड़ी भिन्न है। वे अपने नागरिक के हाथ से सत्याग्रह की शक्ति किसी कीमत पर नहीं लेना चाहते हैं, बल्कि गांधी यह कहते हुए दिखाई देते हैं कि नागरिक की सत्याग्रही शक्ति उसे लोकतंत्र के चरण से आगे ले जाकर नैतिक चरण में

इस दृष्टि से हमें सत्याग्रह को कई दृष्टियों से देखना चाहिए। जो लोग यह कहते हैं कि अब आजादी मिल गई इसलिए सत्य और अहिंसा पर जोर क्यों दिया जाए और खादी को समाज-निर्माण के लिए अनिवार्य क्यों माना जाए वे अपनी बात कहते हैं, गांधी की बात नहीं कहते हैं। क्या अपने जीवन की साधना हो, क्या परिवार का जीवन हो, और क्या समाज के सामान्य समूह को साथ ले चलने का प्रयत्न हो, इस सबका अभ्यास गांधीजी ने दक्षिण अफीका में ही शुरू कर दिया था। इतना जरूर हुआ कि सत्याग्रह जैसे नैतिक हथियार में गांधी का विश्वास दृढ़ हो गया। इसलिए दक्षिण अफीका के सत्याग्रह को हम प्रारंभिक अभ्यास के रूप में देख सकते हैं।

बिठाएगी। गांधी के चिंतन का आधार नागरिक की सत्याग्रह-शक्ति है जबकि जे-पी- नागरिक की ऊंची नागरिकता से संतुष्ट होते दिखाई देते हैं। कुछ भी हो दोनों इतना तो चाहते ही हैं कि भारत का पारंपरिक समाज एक उन्नत नागरिकता वाला लोकतांत्रिक समाज बन जाए।

हमारा आपका भारत, हम आप स्वयं जातियों में बंटे हुए हैं। कोई ऊंचा है, कोई नीचा है, कोई अति धनी है, कोई अति गरीब है। उत्पादन के साधन पुराने हैं, स्वामित्व का स्वरूप यह है कि उसमें शोषण ही शोषण भरा है। हमारी प्रेरणाएं ऐसी हैं कि उनमें से बहुत मोटे किस्म का पूंजीवाद ही प्रकट होता है। विषमताओं का समाज हमें प्रिय है। भिन्नताओं के समाज में रहना हमने सीखा नहीं, इसलिए भाषा, धर्म आदि की जो निर्दोष भिन्नता है, वह नागरिक को नागरिक का शत्रु बना देती है। साधनों के स्वामित्व का जो स्वरूप है, वह सगे भाई को भी शत्रु बना देता है। हम एक गांव में रहते हैं फिर भी हम यह दावा नहीं कर सकते कि हम एक पड़ोस में रहते हैं। किसी बिन्दु पर हमारा पड़ोसीपन प्रकट नहीं होता। विदेशी शासन से हम मुक्त हो गए लेकिन संबंधों और संस्थाओं का जो स्वरूप अंग्रेजी राज ने बनाया उसे हम आज तक बनाए हुए हैं। क्या इसका कारण यह नहीं है कि वे हमें प्रिय हैं ? जिस राज्य की शक्ति उसकी पुलिस और फौज में है उसी की ओर हम देखते हैं कि राज्य-शक्ति का कौन-सा प्रसाद कब हमें प्राप्त होगा।

ऊपर हमने यह प्रश्न उठाया है कि क्यों सन् 1934 में गांधीजी ने कांग्रेस की सदस्यता छोड़ी और केवल कांग्रेस के सलाहकार के रूप में कांग्रेस में बने रहे। सलाह को मानने-न-मानने की जिम्मेदारी गांधीजी के सिर से हटकर कांग्रेस के सिर आई। यह स्थिति अंत तक बनी रही। द्वितीय महायुद्ध के छिड़ने पर कांग्रेस ने यह रुख लिया कि दुश्मन के संकट का लाभ हमें लेना चाहिए, जबकि गांधीजी ने अपनी स्थिति इस तरह बनाई कि अपनी बात का अधिकार तो अपना है, लेकिन विपक्षी की विपत्ति को अपना अवसर बना लेना अहिंसा के विपरीत होगा। गांधी ने अपनी जो स्थिति मानी थी, उससे 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रकट हुआ और जापानी आक्रमण के समय अहिंसक प्रतिकार की पूरी योजना बनाई गई। अनीति और अन्याय का प्रतिकार करना सत्याग्रही का धर्म है लेकिन विरोधी के संकट का लाभ उठाना सत्याग्रह-नीति के विरुद्ध है। लाभ उठाने की नीति सत्याग्रह को अनैतिक बना देती है, यहां तक कि उसका कोई अहिंसक आधार रह नहीं जाता। कांग्रेस ने वह किया जो कोई राष्ट्रीय राजनैतिक दल करेगा। लेकिन गांधी ने वह किया जो संकट में भी अपनी निष्ठाओं पर आरूढ़ रहेगा। कांग्रेस अपनी सुविधा देख रही थी जबकि गांधी अपनी निष्ठा का प्रयोग कर रहे थे। दोनों में बहुत अंतर है। अंतर धरातल का है। कांग्रेस का धरातल राजनैतिक है और गांधी का धरातल नैतिक है- नैतिक धरातल पर किए काम से राजनैतिक परिणाम निकालना यह सत्याग्रह की खूबी है। निष्प्रयोजन और निष्फल क्रिया को सत्याग्रह नहीं कहते। सत्याग्रह में हम साधय और साधना को अलग नहीं कर सकते। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रह के लिए नहीं गए थे। वे गए थे एक पेशेवर बैरिस्टरक ीह ैसियतस ेअ पनीर ोटीक माने।ल ेकिनह म देखते हैं कि कुछ घटनाएं ऐसी घटती हैं जो गांधी को सत्याग्रही बना देती हैं। घटनाएं सबके साथ घटती हैं लेकिन जिस प्रेरणा को उन्होंने गांधी के अंदर पैदा किया, उस तरह की प्रेरणा सबके अंदर नहीं होती। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि गांधी के चरित्र की विशेषता इन घटनाओं के द्वारा प्रकट होती है। दक्षिण अफ्रीका की यह बहुत बड़ी देन मानी जाएगी कि इन घटनाओं के माधयम से दक्षिण अफ्रीका ने गांधी को एक अमोघ नैतिक हथियार दे दिया। घटनाएं घटती गईं और गांधी का यह विश्वास दृढ़ होता गया कि इन ज्यादतियों का उत्तर देने के लिए बंदूक उठाने कीज रूरतन हींह ैाउ नकास हीअ ैरस ग्लउ त्तरन ैतिक हथियारों से दिया जा सकता है। जब गांधीजी 1915 में भारत आए तो नैतिक हथियारों की नैतिक लड़ाई का अनुभव लेकर आए। भारत में केवल रंगभेद नहीं था बल्कि विदेशी शासन था, गुलामी थी, विदेशी व्यापार द्वारा होने वाला शोषण था और एक पुराने पारंपरिक समाज की सारी बुराइयां थीं, जो शताब्दियों के क्रम में पैदा हो जाती हैं। इस

तरह भारत की स्थिति अधिक जटिल थी और सत्याग्रह को एक समग्र कार्यक्रम के रूप में मांग कर रही थी। गांधी ने भारत की समस्या को एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में देखा जिसके लिए संपूर्ण और समग्र कार्यक्रम की आवश्यकता थी। इसलिए गांधी ने सत्याग्रह के कार्यक्रम को एक ऐसा रूप दिया, जिसमें सत्याग्रह की नैतिक शक्ति तो थी ही, साथ-साथ कार्यक्रम की समग्रता भी थी।

गांधीजी ने अपना पहला सत्याग्रह आश्रम 25 मई, 1915 में अहमदाबाद शहर के कोचरब में बनाया। थोड़े ही दिनों में कोचरब से साबरमती चले आए। यह साबरमती ही आगे सत्याग्रह का प्रशिक्षण केन्द्र बना और इस नाते देश-विदेश के लोग गांधीजी के पास आने लगे। यहीं मीरा बहन आई, यहीं विनोबा आए। लेकिन स्वराज्य का कोई कार्यक्रम हाथ में लिया जाता इसके पहले अहमदाबाद, जो मजदूरों का शहर था, मजदूर-समस्या का प्रयोग-क्षेत्र बन गया। यहीं वह मजदूर यूनियन बनी जिसने मिल-मालिकों से अहिंसक संघर्ष का प्रयोग किया। लेकिन गांधीजी भारत में इससे बड़ा प्रश्न हल करने आए थे। वह बड़ा प्रश्न था भारत की आजादी का। भारत की आजादी के लिए होने वाले सत्याग्रह का क्या स्वरूप होगा, सत्याग्रह कैसा होगा और सत्याग्रही कैसे होंगे, ये बातें तय करनी थीं।

पहला प्रयोग नमक सत्याग्रह के रूप में हुआ। ऐसा प्रयोग दुनिया ने कभी देखा नहीं था। अहिंसात्मक सत्याग्रह की ऐसी लड़ाई, जिसमें सत्याग्रही के सिर टूटते जाएं और सिर बचाने के लिए उसके हाथ उठें भी नहीं, ऐसी विलक्षण लड़ाई कब और कहां लड़ी गई ? रावण का वध स्वयं राम ने किया था और अर्जुन का रथ स्वयं कृष्ण ने हांका था। लेकिन नमक सत्याग्रह में न मोतीलाल थे, न जवाहरलाल और न सरदार पटेल। डांडी के एक साल बाद धरसाना के मोर्चे पर गांधीजी ने एक अति सुकुमार महिला को भेजा था। सत्याग्रह के संग्राम में शायद यह पहला ही प्रयोग था। किसी को यह भरोसा नहीं था कि नमक बनाने का स्वराज्य की लड़ाई से कोई संबंध है। न भारत के विद्वानों को भरोसा था और न नेताओं को। पंडित मोतीलाल ने तो अपने पत्र में यहां तक लिख दिया कि अगर नमक बनाने से स्वराज्य मिलता हो तो मैं दिन भर बैठा-बैठा नमक बना सकता हूं। इस पत्र का गांधी ने इन शब्दों में उत्तर दिया था: हआपके पत्र का विस्तारपूर्वक उत्तर बाद को दूंगा, अभी यात्रा में हूं। मेरी सलाह है कि बनाकर देखिए।ह इलाहाबाद की कांग्रेस कमिटी ने नमक सत्याग्रह केउ द्घाटनक ेि लएप ंडितम ोतीलालज ीक ोअ ामंत्रित किया। मोतीलाल जी अपनी मोटर में वहां पहुंचे। वह अपनी गाड़ी से उतरें, इसके पहले ही इलाहाबाद के एस-पी- ने कहा कि मोतीलालजी अपनी गाड़ी से उतरकर मेरी गाड़ी में बैठिए। पंडितजी नैनी जेल पहुंच गए। एक पोस्टकार्ड मांगकर पंडितजी ने गांधीजी को लिखा कि आपने कहा था कि बनाकर देखिए, मैं बनाने के पहले ही नैनी जेल पहुंच गया! हजारों जगहों में नमक बना। पूरे देश ने देख लिया कि अहिंसा का मार्ग कैसा होता है। मारना आसान है लेकिन मरना कठिन है। जो कठिन है वही

अहिंसा का मार्ग है। कठिन मार्ग पर चलने के लिए विशिष्ट व्यक्ति भले ही न तैयार हों लेकिन सामान्य नागरिकता की स्थिति में जीने वाले लोग तैयार हो जाते हैं। गांधीजी ने ऐसे लोगों के साथ प्रयोग करके देख लिया। देश की जनता ने और गांधीजी ने, दोनों ने समझ लिया कि आगे का रास्ता क्या है। वह रास्ता विदेशी शासन से सीधी टक्कर लेने का था। 1930 के आंदोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह हुई, अगर उसे उपलब्धि माना जाए तो, कि अंग्रेज सरकार ने संवाद करने का क्रम शुरू किया। लेकिन जो लोग चर्चा के लिए लंदन बुलाए गए, उसमें ऐसे तत्व भी थे, जिनका गांधीक ेस ंग्रामस ेक ेाईस ंबंधन हींथ ा।ब ल्किय हभ ी कहा जा सकता है कि वे सरकार के समर्थक थे। यह पहला अवसर था कि लंदन की सरकार ने कांग्रेस को मान्यता दी। एक अर्थ में यह माना जा सकता है कि देश के बंटवारे के बीज पहले ही गोलमेज परिषद में बो दिए गए, जो 1947 तक बड़े होकर वृक्ष बन गए। क्या यह भी नहीं माना जा सकता कि 1945 में जब लार्ड वेवेल के आमंत्रण पर कांग्रेस और दूसरे कई संगठनों के प्रतिनिधि और कुछ व्यक्ति शिमला में शरीक हुए तो सत्याग्रह का युग समाप्त हो गया और संवाद का युग शुरू हो गया! कोई कहना चाहे तो यह भी कह सकता है कि आजादी की कोशिश जारी रही, लेकिन गांधी के सत्याग्रह का चरण समाप्त हो गया और संवाद का चरण शुरू हो गया। इतना तो हुआ ही कि जिस कांग्रेस को अभी गांधीजी ने सत्याग्रह का पाठ पढ़ाया था, यहां तक कि करो या मरो की सीख दी थी, उसी कांग्रेस को अब ऐसे तत्व से संवाद करना था जो लड़ाई में शरीक तक नहीं था और बैठे सिर्फ इसलिए थे कि अंग्रेज शासन ने उन्हें वहां बैठा रखा था। निश्चित रूप से उन्हें इसलिए बैठा रखा था कि कांग्रेस के द्वारा प्रकट होने वाली भारतीय राष्ट्रीयता को हराने के लिए उनका इस्तेमाल शतरंज के मोहरों की तरह किया जा सके। इस जगह जबरदस्त कठिनाई गांधीजी के सामने थी और कांग्रेस के सामने भी थी। कांग्रेस राजनैतिक धरातल पर खड़ी थी और गांधीजी सत्य-अहिंसा के नैतिक धरातल पर। धरातल दो थे तो दोनों की राय एक कैसे होती। हर ऐसे विषय में जिसमें धरातल भिन्न होने की गुंजाइश है उसमें राजनैतिक और नैतिक के बीच कब किसको चुना जाए, ऐसा विवेक रखना और उसका निर्वाह करते रहना बहुत कठिन काम है। यह गांधीजी का एक विशेष गुण माना जाएगा कि उन्होंने इस विभिन्नता को समझा और आजीवन इसका निर्वाह किया।

संभवतः कम लोगों को मालूम होगा कि पाकिस्तान बन जाने के बाद गांधीजी पाकिस्तान जाना चाहते थे और अगर परिस्थिति अनुकूल हो और परिस्थिति की मांग हो तो वहीं रह जाना चाहते थे। साथ रह जाने के लिए उन्होंने पं- सुन्दरलालजी और सै"यद महमूद को तैयार कर लिया था। बाद में किसी कारण से, जो ज्ञात नहीं है, उन्होंने पाकिस्तान-यात्रा की बात सोची और अपने दो साथियों को जिन्ना साहब की अनुमति के लिए भेजा। जिन्ना ने खुशी-खुशी अनुमति दी, कहीं आने-जाने पर रोक लगाने की बात नहीं की। लेकिन इतना जरूर कहा कि पाकिस्तान का माहौल अच्छा नहीं है। इसलिए गांधीजी को पुलिस और फौज के संरक्षण में ही कहीं आना-जाना पड़ेगा। गांधीजी के दोनों साथियों ने जिन्ना की इस शर्त को स्वीकार कर लिया। लौटकर जब उन्होंने यह बात गांधीजी को बताई तो उन्होंने कहा तुम लोगों ने यह क्यों नहीं सोचा कि यह शर्त मेरे लिए कितनी भारी पड़ेगी। लेकिन तुम लोगों को मैंने भेजा था, इसलिए जिन शर्तों को तुमने मान लिया है, उन्हें मैं भी मान लेता हूं। जिन्ना ने अपने एक मंत्री अब्दुल रब निस्तर को गांधीजी की यात्रा की जिम्मेदारी सौंपी। लेकिन इसी बीच गांधी की हत्या कर दी गई। गांधीजी पाकिस्तान नया राष्ट्र देखने की नियत से नहीं जा रहे थे। उनकी कोशिश थी कि कुछ हिन्दू-मुसलमान भले ही साथ नहीं रह सकते, लेकिन दो देशों के बंटने के बाद दो पड़ोसी की तरह तो रहें। राजनीति के इस बड़े नैतिक प्रयोग के अवसर से गांधी की हत्या ने उनको वंचित कर दिया। अगर यह प्रयोग सफल हो गया होता तो आज भारत और पाकिस्तान की राजनीति और साथ-साथ पूरे दक्षिण एशिया की राजनीति का दूसरा ही -श्य दिखाई देता। दो देशों के आपसी संबंधों को लेकर या कहिए दो पड़ोसियों

के आपसी संबंधों को लेकर कई बार ऐसे प्रश्न पैदा हो जाते हैं, जिनको हल करने के लिए नए मन की जरूरत होती है। पुराने मन से नए प्रश्नों के नए हल नहीं ढूंढ़े जा सकते। राजनैतिक मन हो और समाधान हम नैतिक ढूंढ़ें, यह संभव नहीं है। आज अपने देश के सामने जो प्रश्न हैं, उन प्रश्नों के उत्तर अगर हम पुराने मन से ढूंढ़ने की कोशिशक रतेर हेंगेत ोश ायदह मक भीस फलन हींह ो सकेंगे। और, नई दुनिया तो एक स्वप्न ही रह जाएगी। नैतिक शक्ति में विश्वास करने वाला व्यक्ति हमेशा तैयार रहता है कि परिस्थिति विशेष में वह समस्या को समझे और नई समस्या का नया समाधान निकाले। बंटवारे के समय अंग्रेज कूटनीति ने जो परिस्थिति पैदा कर दी थी उसका समाधान राजनैतिक हो ही नहीं सकता था। अगर कोई समाधान संभव था तो वह नैतिक ही था। इसकी खोज गांधीजी पाकिस्तान जाकर और रहकर करना चाहते थे। हमने यह अवसर उन्हें नहीं दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि जिस दिन गांधी की हत्या हुई उस दिन से नैतिक शक्ति का ह्रास शुरू हुआ। वह ह्रास आज तक बना हुआ है। आगे बढ़ता ही जाएगा, कहां तक पहुंचेगा कहना मुश्किल है। डांडी-मार्च के पहले बारडोली में किसानों के प्रश्न पर एक छोटा सत्याग्रह हुआ था, जिसका नियमन और संचालन स्वयं सरदार पटेल ने किया था। बारडोली के इस छोटे सत्याग्रह ने सरदार को सदा के लिए सरदार बना दिया। और गांधीजी को यह अनुभव हो गया कि सत्याग्रह के हथियार को चला लेने की क्षमता रखने वाले लोग देश में दूसरे भी तैयार होने लगे हैं। यह अनुभव गांधीजी को दक्षिण अफ्रीका में नहीं हुआ था, बारडोली में हो पाया। 1930 में डांडी-मार्च का नेतृत्व गांधीजी ने स्वयं किया था लेकिन उसी क्रम में धरसाना का नेतृत्व एक महिला ने किया। इन अनुभवों से प्रोत्साहित होकर 1932 का अखिल भारतीय सत्याग्रह सविनय अवज्ञा की दिशा में कई कदम आगे गया। 1934 में साइमन कमिशन आया और तब से यह सफ दिखाई देने लगा कि अंग्रेज कूटनीति और गांधी की राष्ट्रीय राजनीति दोनों समानांतर चल रही है। साइमन कमिशन का सफल बॉयकॉट हुआ, पर बस बक्कयकाट होकर ही रह गया। जिस तरह के चुनाव की कल्पना साइमन कमिशन ने की थी उसे मानकर कांग्रेस चुनाव के मैदान में उत्तरी और 11 से 8 राज्यों में विजयी हुई। देश की राजनीति चुनावी राजनीति हो गई। कांग्रेस को अपना सत्याग्रही रास्ता छोड़कर चुनावी रास्ता पकड़ना पड़ा था और गांधीजी की लेखनी से ये शब्द निकले थे: 'चुनाव का दिमाग स्थायी तौर पर बन गया है। अब यह चुनाव दिमाग से हटाया नहीं जा सकता।' इस जगह गांधीजी और कांग्रेस के रास्ते साफ-साफ अलग दिखाई देते हैं। एक की दिशा कानून और संविधान की है और दूसरे की दिशा सत्याग्रह की है- बिलकुल अलग-अलग।

1 सितम्बर 1941 को दूसरा महायुद्ध छिड़ गया और 3 तारीख को ब्रिटेन इसमें शरीक हो गया। ब्रिटेन और अमेरिका का एक पक्ष बन गया और हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी का दूसरा पक्ष। भारत ब्रिटेन का उपनिवेश था इस नाते ब्रिटेन ने भारत को भी लड़ाई में शामिल कर लिया। यहक ांग्रेसअ ैरग ांधीजीक ेब ीचम तभेदक ाए कब ड़ा बिन्दु बन गया। कांग्रेस ने राजनैतिक दृष्टि अपनाई और यह माना कि इस समय ब्रिटेन संकट में है और उसके संकट से हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के लिए जितना लाभ मिल सके, उसे लेना चाहिए। इसके विपरीत गांधीजी की दृष्टि नैतिक थी। उनकी राय थी कि चूंकि भारत को जबरदस्ती युद्ध में शरीक कर लिया गया, इसलिए इस स्थिति से भारत को निकल जाना चाहिए। गांधीजी की जो नैतिक दृष्टि थी वही 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह का आधार बनी। कुल मिलाकर स्थिति यह थी कि लड़ाई में जहां तक पैसे और सिपाही की भर्ती का प्रश्न है अंग्रेज सरकार ने इसमें कमी नहीं आने दी। सिपाही भी भरती हुए और पैसा भी भरपूर खर्च किया।

1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह से यह अनुमान हो गया था कि देश उनके साथ है और भारत के निवासी अंग्रेजों के संकट में उनका पूरा साथ देने के लिए तैयार हैं। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह का अनुभव राष्ट्रीयता की दृष्टि से बहुत अनुकूल नहीं रहा। इसलिए गांधी ने सन् 42 में 'करो या मरो' का नारा दिया। कांग्रेस के सामने दूसरा

कोई रास्ता नहीं था। कांग्रेस सरकारों के इस्तीफे का पूरा लाभ अंग्रेज सरकार ने उठाया और उन सारी शक्तियों को अपने साथ ले लिया जो कांग्रेस के विरुद्ध थीं। इस दृष्टि से देखें तो द्वितीय महायुद्ध का जो समय था, उस समय में भारत की राष्ट्रीयता कमजोर हुई और विदेशी ताकत मजबूत हुई। इस स्थिति का लाभ उठाकर बंबई की सभा में करो या मरो आंदोलन की घोषणा होते ही कांग्रेस के नेता गिर" तार कर लिए गए। गांधीजी आगा खां पैलेस में भेजे गए और दूसरे नेता अहमदनगर कोर्ट में। इसका एक परिणाम यह हुआ कि देश के सामने कोई राष्ट्रीय नेतृत्व रहा ही नहीं। मुसलमानों के बीच मुस्लिम लीग की आवाज थी और बाकी देश में सरकार का बोलवाला था। देश अपने भरोसे जो कुछ सोच सका, उसके अनुसार काम हुआ। उतना होने पर भी हिंसा की घटनाएं अपेक्षाकृत कम हुईं। लेकिन इतना तो मानना ही पड़ेगा कि अंग्रेजों ने अपनी स्थिति बहुत मजबूत कर ली थी। भारत के बाहर अमेरिका का जोर इस बात पर था कि ब्रिटेन की ओर से भारत की आजादी की कोई ऐसी घोषणा होनी चाहिए जिससे प्रेरित होकर भारतवासी खुले दिल से लड़ाई में साथ दे सकें। लेकिन बावजूद अमेरिका की कोशिश के, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल टस-से-मस नहीं हुए और कोई अनुकूल घोषणा करने से बचते रहे। गांधीजी जेल से 1944 में छूटे। लार्ड वेवेल भारत के वायसराय हुए। जेल से छूटते ही गांधीजी को इस बात का पक्का अनुमान हो गया कि अंग्रेजी राज समाप्ति की दिशा में है। लार्ड वेवेल ने लंदन की सरकार की सहमति से शिमला में 1945 में पहली शिमला कांफ्रेंस बुलाई। गांधीजी सलाहकार के रूप में शिमला में मौजूद रहे लेकिन सदस्य के नाते कांफ्रेंस में शरीक नहीं हुए। अंतर इतना पड़ गया था कि गांधीजी की सलाह जिस तरह कांग्रेस को उपलब्ध थी, उसी तरह वायसराय को भी उपलब्ध थी। कांग्रेस की तरु से कार्यसमिति के कुछ चुने हुए लोग कांफ्रेंस में वायसराय के बुलावे पर शरीक होते रहे। मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि, राजवाड़े के प्रतिनिधि, हरिजनों के प्रतिनिधि तथा कई लोग, जिनको वायसराय ने खुद चुना, वे लोग कांफ्रेंस में शरीक होते रहे। सन् 45 में क्रिप्स मिशन आया, सन् 46 में अंतरिम सरकार बनी। 1947 में भारत का बंटवारा हुआ और अंग्रेजी राज समाप्त हुआ। जिस देश में 1942 में करो या मरो की गूंज पैदा हुई थी, पांच वर्षों के संवाद के बाद, उसी देश में ऐसी स्थिति आई कि अंतिम वायसराय ने अंग्रेजी झंडा झुकाया और भारत के झंडे को फहराया और भारतीय सरकार ने उसी वायसराय को अपना पहला गवर्नर जेनरल भी बना दिया।

अलग-अलग सत्याग्रहों को अलग-अलग दृष्टि से देखा जा सकता है लेकिन इतना मानना पड़ेगा कि गांधी ने राजनैतिक संघर्ष का चरित्र बदल दिया। यह ठीक है कि सत्याग्रह अभी ऐसा साधन नहीं बना है, जिसमें साधय की सिद्धि की गारंटी हो। इतना जरूर हो गया है कि अब राजनीतिक संघर्ष में हिंसा का प्रवेश हो जाना ही इस बात की सूचना देता है कि उस संघर्ष को जनमत का समर्थन नहीं है। राजनीतिक संघर्ष की भाषा बदल गई। इतना ही नहीं राजनीतिक संघर्ष की शैली बदल गई। साध्य और साधन भी बहुत कुछ बदल गए हैं। भूमि का निजी स्वामित्व मिटाने की दृष्टि से विनोबाजी ने जो भूदानयज्ञ आंदोलन चलाया, उसको उन्होंने सौम्य सत्याग्रह ही कहा। इसमें कोई शक नहीं कि विनोबा के सौम्य सत्याग्रह ने भूमिहीनों के लिए भूमि प्राप्त की, ग्रामस्वामित्व का एक नया नमूना पेश किया और गरीब के प्रति करुणा का भाव जगाने में बहुत हद तक सफलता हासिल की। अवश्य विनोबा ने अपने सत्याग्रह को प्रचलित राजनीति से बिल्कुल अलग रखा। इतना जरूर हुआ कि सभी दलों के नेताओं ने यलवल (केरल) में कांफ्रेंस करके विनोबाजी के भूदानयज्ञ आंदोलन का समर्थन किया। यह कहा जा सकता है कि भूमि के इतने बड़े प्रश्न को नैतिक शक्ति के सहारे हल करने का मानव-इतिहास का यह पहला ही उदाहरण है। अवश्य ही इस दिशा में अभी प्रयोग के लिए बहुत गुंजाइश है। हाल के जमाने में गरीबी और भूमिहीनता जैसे प्रश्नों को हल करने में हिंसा का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, लेकिन ऐसी हिंसा को क्रांतिकारी कहने का लाभ घटता जा रहा है। तीसरा बड़ा प्रयोग सत्याग्रह के स्तर का बिहार आंदोलन में जयप्रकाशजी ने किया। उन्होंने इस बात की

पूरी कोशिश की कि निरंकुश सत्ता के विरुद्ध जो भी कदम उठाए जाएं वे संविधान की सीमाओं के बाहर न जाएं। इसलिए अगर विनोबा का सत्याग्रह पूर्णतः नैतिक था तो जे-पी- का बिहार आंदोलन का किया हुआ सत्याग्रह शांतिपूर्ण तो था ही, लोकतांत्रिक भी था। बिहार आंदोलन के दौरान जो भी बड़ी घटना हुई, उसकी खुली जांच कराई गई ताकि सरकार और समाज के सामने कोई गलत बात न जाने पाए। यदि लोकतंत्र की सीमा में रहकर सत्याग्रह का एक राजनैतिक अस्त्र के रूप में प्रयोग होता है तो यह बड़ी उपलब्धि होगी। परिवार से लेकर राज्यसत्ता तक जीवन के अनेक क्षेत्र हैं, जिनमें सत्याग्रह के प्रयोग की गुंजाइश है। आज की दुनिया दिनोंदिन सिमटती चली जा रही है। इसलिए पड़ोस के दायरे भी बढ़ते चले जा रहे हैं और सत्याग्रह के रचनात्मक स्वरूप विकसित होने के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं। यह सफ दिखाई देने लगा है कि सत्याग्रह के द्वारा शांति की एक पूरी संस्कृति विकसित की जास कतीह ै।अ ाजक ीब दलतीद ुनियाम ंेस त्याग्रहक ं प्रयोग के अवसर बढ़ते जा रहे हैं।

आज की दुनिया में हम अध्यात्म द्वारा दिए हुए मूल्यों को ध्यान में रखें, साथ ही आधुनिक विज्ञान ने जिन साधनों का आविष्कार किया है, उनका उपयोग भी करें। लेकिन यह मान लेने का कोई कारण नहीं है कि सत्याग्रह वहीं हो सकता है जहां दो शक्तियां आमने-सामने खड़ी हैं। जीवन को समुन्नत करने के जितने प्रयोग हो सकते हैं, उन सबको सत्याग्रह कहा जा सकता है और सत्याग्रह को हृदय-परिवर्तन की सौम्य क्रिया से जोड़ा जा सकता है। जीवन-शिक्षा कभी न समाप्त होने वाली सौम्यतम सत्याग्रह की प्रक्रिया है, यह भी कहा जा सकता है। गांधी ने सत्याग्रह को संघर्ष के हथियार के रूप में भी इस्तेमाल किया और रचना के भी। हमारे पुराने ग्रंथ गीता में कृष्ण अर्जुन से यही कह रहे हैं कि युद्ध करो लेकिन युद्ध का ज्वर न होने दो। गांधी के सत्याग्रही संघर्ष शत्रु-मुक्त थे। स्थायी शत्रु और घृणा की कल्पना गांधी के सत्याग्रह में नहीं है। भारत की आजादी की लड़ाई के क्रम में जो सत्याग्रही संघर्ष हुए वे पहले प्रयोग थे, अंतिम नहीं। भविष्य का द्वार नए प्रयोगों के लिए खुला हुआ है। एक बात साफ दिखाई देती है कि सभ्यता के निर्माण के लिए होने वाला सत्याग्रह आजादी के लिए होने वाले सत्याग्रह से बहुत भिन्न होगा। यह भिन्नता हर वक्त ध्यान में रहनी चाहिए। उस भिन्नता का पूरा चित्र गांधी ने अपने हिन्द स्वराज्य में खींचा है। उसका उदाहरण विनोबा ने अपने भूदान-ग्रामदान में प्रस्तुत किया है। विचार में बहुत शक्ति होती है। मार्क्स का विचार पूरी दुनिया में फैल गया। उसने कोई बंदूक नहीं उठाई थी लेकिन अजेय विचार-शक्ति का प्रदर्शन हुआ। आध्यात्मिक जगत में व्यासजी ने विचार की शक्ति गीता में प्रस्तुत की है। एक बार फिर उसी शक्ति का प्रयोग एक नई सभ्यता के निर्माण के लिए करना है। इन सब शक्तियों का स्रोत मनुष्य है। उस शक्ति को एक बार फिर जगाने की जरूरत है- इस बार महिला-शक्ति के रूप में। धरसाना के सत्याग्रह में गांधी ने नेतृत्व सरोजनी नायडु को सौंपा- एक सुकुमार महिला को। गांधी और विनोबा के बाद के प्रयोगों और लेखों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नई शांति की सभ्यता महिलाओं के द्वारा ही रची जाएगी। आज महिलाओं के जीवन में चाहे जितना भटकाव दिखाई देता हो, लेकिन यह विश्वास होता है कि भविष्य की रचना महिलाओं के हाथ में है। और ऐसे व्यक्तियों के हाथ में है जो पुरुष तो हैं लेकिन अहिंसा के प्रयोग में अपना समय और शक्ति देने के लिए तैयार हैं। पिछले थोड़े दिनों में महिला शांतिसेना के नाम से जो थोड़े प्रयोग हुए हैं, उनसे यह विश्वास दृढ़ होता है कि निरक्षर-से-निरक्षर महिला भी अहिंसा के प्रयोग में आगे रह सकती है। गांधी ने स्वयं लिखा है कि जैसे-जैसे मैं अहिंसा का प्रयोग करता हूं, वैसे-वैसे लगता है कि मैं महिला हो रहा हूं। विनोबा ने तो यहां तक कह दिया कि शांति का काम मैं महिलाओं को सौंपने को तैयार हूं। इन बातों का संकेत इस ओर है कि नई रचना की शक्ति महिलाओं की ओर से प्रवाहित होगी, अलग-अलग समय में अलग-अलग प्रयोग होंगे और होने चाहिए। शर्त इतनी ही है कि साधन शुद्ध हों ताकि सत्य और अहिंसा के जीवन-मूल्य सुरक्षित रह सकें

एक गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी: मंजर अली सोख्ता

संजय कृष्ण

अमृत महोत्सव के इस महापर्व पर अब भी बहुत से स्वतंत्रता सेनानी अज्ञात हैं। इन्हें खोजना, जानना, समझना अत्यंत आवश्यक है। 75 साल स्वतंत्रता के हो गए हैं। समय धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है और हमारी जानकारी पीछे छूटती जा रही है। यह कम दुर्भाग्यपूर्ण नहीं कि आजादी के बहुतेरे नायकों को हम नहीं जान पाए हैं। हमने कोशिश भी नहीं। एक ऐसे ही नायक हैं- मंजर अली सोख्ता। पं. जवाहर लाल नेहरू से पांच साल बड़े थे। इलाहाबाद के आनंद भवन में बचपन बीता। नेहरू के संग-साथ पले-बढ़े। आजादी के आंदोलन में भी साथ-साथ सक्रिय रहे। आगे चलकर गांधीजी से अकुंठ प्रीत हुई। उनके बलिदान के बाद गांधी की छोटी सी पुस्तिका-जो निधन के कुछ समय पहले लिखी थी-'गांधी की वसीयत'। उस पर विस्तार लिखा और 1949 में छपी। आपके हाथों में वही पुस्तक है। पुनः प्रकाशित होकर।

ऐसी शख्सियत गुमनाम रह गई। तो आखिर यह शख्स था कौन? पहले उनके पिता का हाल पंडित नेहरू की जुबानी सुनते हैं। पं. जवाहर लाल नेहरू (1889-1964) 'मेरी कहानी' में लिखते हैं, ''एक और शख्स थे जिन पर लकड़पन में मैं भरोसा करता था। वह थे पिताजी के मुंशी मुबारक अली। वह बदायूं के रहने वाले थे और उनके घर के लोग खुशहाल थे। मगर 1857 के गदर ने उनके कुनबे को बरबाद कर दिया और अंग्रेजी फौज ने उसको एक हद तक जड़ मूल से उखाड़ फेंका था। इस मुसीबत ने उन्हें हरेक के प्रति, और खासकर बच्चों के प्रति, बहुत नम्र और सहनशील बना दिया था और मेरे लिए तो वह, जब कभी मैं किसी बात पर दुखी होता या तकलीफ महसूस करता तो, सांत्वना के निश्चित आधार थे। उनके बढ़िया सफेद दाढ़ी थी और मेरी नौजवान आंखों को वह बहुत पुराने और प्राचीन जानकारी के खजाने मालूम होते थे। मैं उनके पास लेटे-लेटे घंटों अलिलैला की और दूसरी किस्से-कहानियां या 1857 और 1858 की गदर की बातें सुना करता था। बहुत दिन बाद, मेरे बड़े होने पर, मुंशीजी मर गए। उनकी प्यारी सुखद स्मृति अब भी मेरे मन में बसी हुई है।''

ऐसी शख्सियत गुमनाम रह गई। तो आखिर यह शख्स था कौन? पहले उनके पिता का हाल पंडित नेहरू की जुबानी सुनते हैं। पं. जवाहर लाल नेहरू (1889-1964)' मेरीक हानी' में लिखते हैं, ''एक और शख्स थे जिन पर लकड़पन में मैं भरोसा करता था। वह थे पिताजी केम ुंशीम ुबारकअ ली।व हब दायूं के रहने वाले थे और उनके घर के लोग खुशहाल थे।

मंजर अली सोखता इन्हीं मुबारक अली के बेटे थे। मंजर के बारे में उनके परम मित्र और महान क्रांतिकारी और लेखक पं सुंदरलाल लिखते हैं,

''भाई मंजर अली सोख्ता के साथ मेरा प्रेम इतना बढ़ा कि हम दोनों 'एक जान दो कालिब' की तरह बन गए। मंजर अलीक ाज न्मस न्1 884म ेंब दायूंम ेंह ुआथ ा।उ नके पिता शेख मुबारक अली नवाब बदायूं के चचेरे भाइयों में से थे। एक पुराने सूफी सिलसिले से उनके घराने का संबंध था। उसी से खानदान की अल्ल 'सोख्ता' यानी 'दुग्ध' या जला हुआ पड़ गई। 1857 में इनके खानदान ने इन्कलाब में हिस्सा लिया और नतीजे में खानदान के बहुत से लोग लड़ाई के मैदान में मारे गए।। बहुतों को फांसी हुई। खानदानक ीत मामज ायदादज ब्तह ेाग ई।श ेाखम ुबारक फारसी के विद्वान थे। नौकरी की तलाश में इलाहाबाद आकर पंडित मोतीलाल नेहरू के यहां मुंशी हो गए। मोतीलाल जी ने हमेशा उनके साथ दोस्त और भाई का-सा बर्ताव किया। मंजर अली सोख्ता आनंद भवन में ही रहता था। मंजर अली वहीं रहकर बड़े हुए। नेहरू खानदान से उनका आखिर तक प्रेम संबंध कायम रहा। सब आमतौर पर उन्हें मन्ना भाई कहकर पुकारते थे।''

मंजर अली इलाहाबाद में पढ़ाई के समय सुंदरलाल से प्रभावित हो गए थे। दोनों के बीच गहरी मिताई हो गई थी। पं सुंदरलाल लिखते हैं, ''बंग-भंग में मंजर अली मेरे साथ ही म्योर सेंट्रल कालेज में एमए और एलएलबी साथ-साथप ढ़र हेथ े।ए लएलबीक ेअ ौरि वद्यार्थियोंम ें भाई पुरूषोत्तम दास टंडन, स्वर्गीय रमाकांत मालवीय, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री स्वर्गीय रविशंकर शुक्ल, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू और श्री दुर्गाशंकर मेहता थे।'' पं सुंदरलाल आगे लिखते हैं, ''बंग-भंग के आंदोलन का मंजर अली पर गहरा असर पड़ा। देश की आर्थिक और राजनीतिक कैफियत को उन्होंने समझना शुरू किया। दादाभाई नैरोजी, रमेश चंद्र दत्त, विलियम डिग्वी जैसे लेखकों की किताबें उन्होंने ध्यान से पढ़ी। इटली आदि के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास उन्होंने पढ़ा। ठीक उसी समय एक छोटी-सी घटना हुई, जिसने मंजर की जिंदगी पर गहरा असर डाला। म्योर सेंट्रल कालेज के प्रिंसिपल जेपी जेनिंग्ज उन दिनों एमए को अंग्रेजी पढ़ाया करते थे। जेनिंग्ज ने मंजर अली से भारत के आए दिन के दुष्कालों और उनके कारणों पर एक निबंध लिखने को कहा। जो किताबें कोर्स में पढ़ाई जातीथ ींउ नमेंइ नद ुष्कालोंक ीव जहब ारिशक ीक मी बताया गया था। लेकिन नई किताबें पढ़े हुए मंजर ने इसकी वजह अपने निबंध में अंग्रेजों की शोषण नीति को बताया। प्रिंसिपल जेंनिंग्ज को निबंध पढ़कर गुस्सा आ गया। उन्होंने मंजर अली को डांटा-डपटा और समझा कर निबंध बदलने को कहा। मंजर ने अपनी राय न बदली। इस पर वह एमए क्लास से निकाल दिए गए। सन् 1908 में उन्होंने एलएलबी पास कर लिया।'' एलएलबी करने के बाद वह 'इलाहाबाद लॉ जर्नल' में रिपोर्टिंग भी करते थे। 1917 के अंक में उनके नाम के साथ बीए, एलएलबी भी लिखा था। बाद में उन्होंने 1914 में वकालत शुरू की। वकालत के साथ-साथ स्वतंत्राता आंदोलन में भी सक्रिय थे। इसी बीच थियोसोफिकल सोसायटी की नेता एनी बेसेंट प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने से कुछ महीने लंदन की एक सभा में कहा, ''भारत की राजभक्ति का मूल्य भारत की स्वतंत्राता है।'' आयरिश मूल की बेसेंट भारती की आजादी की हिमायती थीं। 1916 में उन्होंने होमरूल लीग की स्थापना की। इसने आजादी के आंदोलन में गति दे दी। सुस्ती दूर हो गई और चारों तरफ आजादी की मांग उठने लगी थी। हर प्रांतों में इसका संगठन खड़ा किया गया। बंबई, मद्रास, कर्नाटक आदि में प्रांतों में लीग के बैनर तले लोग संगठित होने लगे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के कई सदस्यों को आकर्षित किया, जिन्हें 1916 के लखनऊ समझौते के बाद संबद्ध किया गया था। लीग के नेताओं ने उग्र भाषण दिए और सैकड़ों हजारों भारतीयों के साथ याचिकाएं हस्ताक्षर के रूप में ब्रिटिश अधिकारियों को सौंपी गई। मुस्लिम लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच उदारवादियों और कट्टरपंथियों का एकजुट होना एनी बेसेंट की उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसी क्रम में जब उत्तरप्रदेश में होमरूल लीग की स्थापना की गई तो इसका जिम्मा पं सुंदरलाल, पंडित जवाहर लाल नेहरू और मंजर अली सोख्ता को दिया गया। तीनों को संयुक्त मंत्री बनाया गया। होमरूल आंदोलन का शुभ परिणाम यह रहा कि देश के कार्यकर्ताओं में एक केंद्र में मिलकर काम करने की इच्छा जाग उठी। गरम दल और नरम दल दोनों में इस बात की समझ बढ़ी की देश की आजादी पहली जरूरत है। दोनों दलों के नेता आपसी मतभेद भुलाकर एक मंच पर आए।इ सआ ंदोलनक ीय हभ ीए कब ड़ीउ पलब्धिह ै।

1916 में कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसके बाद गांधीजी 1917 से 1918 तक चंपारण आंदोलन में सक्रिय हो उठते हैं। चंपारण आंदोलन की सफलता से देश में एक नई चेतना विकसित की। गांधीजी ने जब 1920 में अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ असहयोग आंदोलन शुरू किया तो उसमें भी मंजर अली सोख्ता ने बढ़चढ़कर भाग लिया और गिरफ्तारी दी। उन्हें एक साल की सजा हुई। इसके बाद तो मंजर अली के संबंध गांधीजी से और प्रगाढ़ होता गया। यह संबंध गांधी के पत्रों से भी पता चलता है। 16 अगस्त, 1924 को रेल से लिखे वसुमती पंडित के पत्र से भी पता चलता है। गांधीजी ने लिखा, ''तुम्हारा पत्र मिला। मैं यह पत्र दिल्ली जाते हुए गाड़ी में लिख रहा हूं। मेरे साथ देवदास, प्यारेलाल, महादेव और मंजर अली हैं।'' दो सितंबर 1924 को बंबई से मोतीलाल नेहरू को लिखे पत्र से पता चलता है कि यरवदा जेल में भी मंजर अली साथ थे। ''....कहने की जरूरत नहीं कि जब मंजर अली और मैं यरवदा जेल में थे तो आपलोगों के विषय में प्रायः बातचीत हुआ करती थी।'' गांधीजी यरवदा जेल में ही मंजर अली से उर्दू सीखी।

गांधीजी ने जब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया तो पूरे देश में इसका असर हुआ। नगर-नगर, गांव-गांव, शहर-शहर लोगों ने झंडा फहराया और स्वाधीनता की प्रतिज्ञा ली-''ब्रिटिश शासन में रहना मनुष्य और भगवान दोनों के प्रति अपराध है।'' गांधीजी को विश्वास हो गया कि देश जनांदोलन के लिए तैयार है। मार्च से लेकर अप्रैल तक पूरा देश आंदोलनरत हो गया। सात अप्रैल को इलाहाबद से पं जवाहर लाल नेहरू गिरफ्तार कर लिए गए। इसके साथ ही मंजर अली सोख्ता, सुंदरलाल, अनादि कुमार दत्त और फिरोज गांधी को भी नैनी जेल में बंद कर दिया गया। पूरे देश में धर-पकड़ शुरू कर दी गई थी। गांधीजी दांडी पहुंचकर नमक कानून तोड़कर देश के नाम एक संदेश दिया। इस बीच करीब साठ हजार सत्याग्रही जेलों में बंद कर दिए गए। गांधीजी को भी पांच मई, 1930 को दांडी के पास एक गांव से गिरफ्तार कर बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद कर दिया गया। उनकी गिरफ्तारी से आंदोलन और तेज हो गया। मोतीलाल नेहरू 30 जून 1930 को गिरफ्तार किए गए। उन्हें भी नैनी जेल में ही रखा गया, जहां पं. नेहरू और मंजर अली भी पहले से ही बंद थे।

गांधी के आह्वान पर जब पूरे देश में भारत छोड़ो आंदोलन छिड़ गया तो उसमें भी कूद गए। 22 अक्टूर 1942 को प्रदर्शन का नेतृत्व पं मुरलीधर शर्मा कर रहे थे। उनके साथ मंजर अली सोख्ता भी थे। दोनों को पकड़ लिया गया और उन्नाव की जेल में नजरबंद रखा गया। कुछ दिनों तक बरेली जेल में भी बंद रहे, जहां पं. नेहरू, महावीर त्यागी आदि भी थे। गांधी-इरविन समझौता होने के बाद जेल से मुक्त किए गए। देश की आजादी सोख्ता ने सक्रिय भूमिका अदा की। देश की आजादी के बाद सेवाकुंज आश्रम ही उनका ठिकाना रहा और वे गांधीजी के विचारों को जीते रहे। गांधीजी की जब 30 जनवरी, 1948 को हत्या हुई तो बहुत मर्माहत हुए। उन्होंने 'गांधी की वसीयत' 1949 में लिखी। गांधीजी ने अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले एक छोटा सा विधान लिखा था-'लोक सेवक संघ'। इसी के आधार पर सोख्ता ने 'गांधी की वसीयत' लिखी। पं सुंदरलाल ने इसकी भूमिका लिखी। वह लिखते हैं-'' 26 जनवरी सन् 1948 को उन्होंने 'लोक सेवक संघ' काए कन याछ ोटास ा िवधानत ैयारा िकया।अ गलो ि दन दोपहर के बाद उन्होंने यह विधान कांग्रेस के जनरल सेक्रेट्री को बुलाकर उसके सुपुर्द किया और कहा कि यह आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने गांधीजी की तरफ से उनके समभाव के रूप में पेश किया जाय, पर इसके चंद घंटे के बाद ही गांधी जी चल बसे। यह विधान 15 फरवरी सन् 1948 के 'हरिजन' में छपा है। कांग्रेस और देश के नाम बापू की यह आखिरी वसीयत है। विधान बहुत छोटा सा है पर हर देश वासी के लिए इसका जानना और समझना जरूरी है। इस पुस्तक में गांधी जी की यह आखिरी वसीयत उनके परम भक्त श्री मंजर अली सोख्ता की पूरी-पूरी व्याख्या के साथ दी जा रही है। आशा है कि दिल से देश की भलाई सोचने वाले बहुत से भाई बहनों को अपना आगे क रास्ता तय करने में इससे बहुत बड़ी मदद मिलेगी।'' मंजर अली ने दो सौ से अधिक पेज में इस विधान की व्याख्या की है। इस पुस्तक के माधयम से मंजर अली को भी समझने में मदद मिलती है कि गांधीजी उनके लिए क्या मायने रखते थे। हिंदू-मुस्लिम सांप्रद्रायिकता को लेकर वे हमेशा जूझते रहे। कानपुर में 1931 के भयंकर दंगे के बाद

उसकी जांच और समाधान के लिए जो कमेटी बनी, उसमें डॉ० भगवान दास के साथ मौलाना जफर+ल हक अलवी, बाबू पुररूषोत्तम दास टंडन, मंजर अली सोख्ता, सुंदरलाल और अब्दुल लतीफ़ बिजनौरी भी थे। गांधीजी उनके जीवन के आदर्श थे। उनके विचारों में ही नहीं, उनके कर्म में भी यह दिखाई देता है। 'विश्ववाणी' में कई अंकों में प्रकाशित उनका आलेख 'आजाद हिन्दुस्तान में न फौज होगी न हथियार' पढ़ने योग्य है। वे जाति-धर्म के बंधन से मुक्त एक मनुष्य की तरह सोचते थे। यह लेख उनके गंभीर अध्ययन के साथ एक मानवतावादी दृष्टि की ओर इंगित करता है। उनका आश्रम सभी दलितों-पिछड़ों के लिए खुला रहता था।

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि मंजर अली सोख्ता के बारे में आधी-अधूरी और बहुत कम जानकारी है। प्रसिद्ध गद्यकार कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' ने जरूर मंजर अली सोख्ता पर एक संस्मरण लिखा है, जो उनकी आत्मकथात्मक पुस्तक 'तपती पगडंडियों पर पदयात्रा' में संकलित है। यह पुस्तक भी अब अनुपलब्ध है। प्रभाकर जी को मंजर अली सोख्ता का मार्गदर्शन भी मिलता रहा है। प्रभाकर जी पर सोख्ता के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा था। प्रसिद्ध उपन्यासकार असगर वजाहत ने अपने उपन्यास 'कैसीअ ागल गाई'म ें भ ाीस ोख्ताक ा जिक्रह ै। फिराक गोरखपुरी के संस्मरणों की किताब 'मैंने फिराक को देखा था' में बहुत शिद्दत से मंजर अली याद किए गए हैं। उनके निधन के बारे में अभी तक कोई सही जानकारी नहीं है। लेकिन 1962 के पहले उनके निधन का अनुमान लगा सकते हैं। पं सुंदरलाल की 'कद्दावर की दास्तान' में सोख्ता पर महत्वपूर्ण जानकारी है, लेकिन न निधन की इसमें कोई जानकारी है न कोई उन पर संस्मरण ही। जबकि सुंदरलाल का निधन 9 मई 1981 को हुआ था। पं सुंदरलाल ने अपने अन्य लोगों के साथ मिलकर हिंदुस्तानी कल्चर सोसायटी की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य पुस्तकों का प्रकाशन करनाथ ा।' गांधीक ीव सीयत'ि हंदी-उर्दूम ेंप हलीब ार यहीं से प्रकाशित हुई। इसके साथ यहां से मासिक 'नया हिंद' नाम की पत्रिका भी निकलती थी। हिंदी-उर्दू दोनों में एक साथ। एक ही पेज पर बाएं हिंदी में और दाहिने हिस्से में उर्दू। अस्सी के दशक तक इसका प्रकाशन होता रहा। 1950 के एक अंक में पुस्तकों का विज्ञापन है, जिसे सोसायटी ने प्रकाशित की है। इनमें भारत का विधान, महात्मा गांधी की वसीयत, आज के शहीद, मुस्लिम देश भक्त आदि के नाम हैं। किताबों के बारे में संक्षिप्त जानकारी भी। इसका पता था-145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

सेवाकुंज आश्रम की स्थापना

1934 में कानपुर के निकट गंगाघाट, उन्नाव में सेवाकुंज आश्रम की स्थापना पं सुंदर लाल ने किया था, जिसमें मंजर अली सोख्ता ने भरपूर सहायता की थी। बाद में कर्ता-धर्ता मंजर अली सोख्ता ही हो गए। सेवाकुंज को लोग सोख्ता आश्रम भी कहते थे। वे यहीं रहने लगे थे। 1940 में प्रकाशित 'कानपुर का इतिहास' के पेज 212 पर भी उल्लेख है-''नगर से कुछ ही मील दूर श्री मंजर अली सोख्ता का आदर्श आश्रम है।'' इस पुस्तक का प्रकाशन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर अधिवेशन के मौके पर किया गया था। इसी आश्रम में एक अनोखी शादी संपन्न हुई, जिसकी रपट 'हरिजन' के 27 मई, 1950 अंक में प्रकाशित हुई थी- ''गंगाघाट आश्रम, कानपुर में 19 अप्रैल को अनोखे ढंग से एक विवाह संपन्न हुआ। इस तथ्य के अलावा कि यह एक अंतर-प्रांतीय और अंतर-जातीय विवाह था, क्योंकि दूल्हा यूपी का बनिया था, और दुल्हन त्रावणकोर की नायर थी। पुजारी मंजर अली सोख्ता खुद थे, जो एक मुस्लिम थे। दूल्हा और दुल्हन दोनों उनके अधीन काम करते हैं। सोख्ता इनके लिए पिता के समान थे। शादी में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुएथ ो।य हस मारोहब हुतह ीस रलथ ाा़अ ैरइ समेंए क भजन, सोख्ता द्वारा एक उपदेश। त्रावणकोरियन और यूपी की प्रथा के साथ विवाह संपन्न हुआ। प्रतीक के रूप में पुजारी द्वारा प्रत्येक पक्ष को हाथ से काते गए सूत की एक माला पहनाई गई। यह सर्वोदयी विवाह का प्रतीक था।'' अब आश्रम नहीं है। जमीन बची है और इस पर दूसरे लोग काबिज हैं। इसका नाम भी अब बदल गया है। यह कोई नहीं बात नहीं है। गांधीजी का आश्रम तो अब खत्म हो रहा है। झारखंड के संथाल परगना में करीब 18 से ऊपर आश्रम थे, अब नामोनिशान भी नहीं बचा है।

संपर्क : ध्रुव तिवारी का मकान तपोवन गली, कोकर, रांची - 834001

महात्मा गांधी के आर्थिक विचार और सतत् विकास

प्रज्ञा सिंह व अनूप सिंह कुशवाहा

भविष्य इस पर निर्भर करता है की
हम वर्तमान में क्या करते है- महात्मा गांधी

आज हम 21वीं शताब्दी में जीवन जी रहे है ऐसे में हमारे देश की बढ़ती जनसंख्या (जनसंख्या में भारत दुनिया में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका हैं), प्राकृतिक संसाधनों की कमी और वैश्विक जलवायु परिवर्तन और आर्थिक और सामाजिक व्यवहार से संबंधित विभिन्न समस्याओं के कारण हमारा भविष्य का विकास सीमित और बाधित हों गया है, आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है की समाज के विकास के लिए हमें किस तरह की नीतियां बनाई जाए, जिससे टिकाऊ विकास हो पाए। आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण में सामंजस्य स्थापित करने की चुनौती को व्यापक रूप से वैश्विक समुदाय के सामने सबसे बड़े मुद्दे के रूप में देखा जाता है। इस वर्ष भारत जी 20 की अध्यक्षता कर रहा है। इस वैश्विक सम्मेलन में सतत व पर्यावरणीय विकास मुख्य मुद्दों में से एक है।

ऐसे में महात्मा गांधी के द्वारा दिए गए उनके आर्थिक विचार और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। जिसमें उन्होंने अपनी आर्थिक नीतियों पर शुरू में ही यह स्पष्ट किया था कि आर्थिक नीतियां ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य और पर्यावरण के हित में हो, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक आर्थिक असमानता की खाई न बढ़ने पाए। गांधी जी का कहना था कि जो नीतियां मानवीय, सामाजिक और पर्यावरणीय हितों को नुकसान पहुंचाती है वो शोषण और हिंसा की श्रेणी में आता है। यहाँ गांधीवादी विचार के लोग ऐसी अर्थव्यवस्था की बात करती है जो कम खपत, न्यूनतम दोहन प्राकृतिक संसाधनों के साथ-साथ आवश्यकता आधारित उत्पादन के माध्यम से स्थिरता को बढ़ावा देती है। गांधीवादी अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक संसाधन केवल वस्तु नहीं हैं, यह मानव जीवन का साधन हैं।

भारतीय परंपरा की मूल धारणा यह है कि संतुलित विकास के लिए मानव और प्रकृति में सामंजस्य होना चाहिए। बढ़ती आबादी और अधिक से अधिक खपत की कभी पूरी न होने वाली मांगें दोनों के बीच संघर्ष पैदा करती हैं और विकास की स्थिरता, विशेष रूप से पश्चिम और एशिया के कई देशों द्वारा हासिल किए गए आर्थिक विकास के लिए चिंता पैदा करती हैं। चूंकि जनसंख्या की बढ़ती मांग अक्सर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के अधिक दोहन से पूरी होती है, इसलिए इसका प्रभाव विनाशकारी होगा। यह नीति निर्माताओं को विकास के वैकल्पिक मॉडल के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर रहा है। आत्म-नियंत्रण या अप्रतिबंधित उपभोग की इच्छाओं से खुद को रोकने की गांधीवादी अवधारणा हमें न्यूनतम शोषण की शिक्षा देती है, जो असीमित उपभोग को बढ़ावा देने वाली आज की औद्योगिक दुनिया की मूल अवधारणा के खिलाफ है।(समाजवादी लेखक और चिंतक सच्चिदानंद सिन्हा के विचार वैकल्पिक अर्थव्यवस्था की ओर)

गांधी द्वारा सुझाया गया आर्थिक मॉडल बहुत हद तक छोटी सुंदर अवधारणा पर निर्भर करता है, जो बदले में ग्रामीण उद्योगों द्वारा समर्थित सूक्ष्म आर्थिक अवधारणा के मजबूत आधार पर खड़ा है। गांधी विकास की अवधारणा में गांव केंद्रित विकास पर जोर देते है इसी तरह, गांधीवादी मॉडल में नैतिकता की बड़ी भूमिका है, इस बात पर जोर दिया गया है कि आदमी पैसे से ज्यादा महत्वपूर्ण है। गांधीजी ने स्वयं कई अवसरों पर कहा था कि आदर्श

अर्थव्यवस्था का उनका विचार छोटे पैमाने पर और स्थानीय रूप से उन्मुख उत्पादन, स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना और स्थानीय जरूरतों को पूरा करना है, ताकि हर जगह रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा सकें।

गांधीवादी अर्थव्यवस्था और सतत विकास गांधीवादीअ र्थव्यवस्थाक ेप रिभाषितक रना,ग ंधीद्व ारा प्रतिपादित अर्थव्यवस्था की परिभाषा हमेशा नैतिकता और मूल्यों का एक नेटवर्क है, इसी तरह उनका अर्थशास्त्र आर्थिक प्रक्रियाओं की गतिशीलता की समझ में समृद्ध है और रचनात्मक विकल्पों की पूर्णता में कल्पनाशील और विचारोत्तेजक है। गांधीजी के अनुसार, अर्थशास्त्र जीवन शैली का एक हिस्सा है, जो सामूहिक मूल्यों से संबंधित है और इसे समग्र रूप से मानव जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है। गांधी सामाजिक कल्याण और न्याय में विश्वास करते थे, इसलिए वह हमेशा वितरणात्मक न्याय सुनिश्चित करने के लिए खड़े थे ताकि उत्पादन और वितरण अलग न हों। (गांधी आर्थिक विचार –जे. सी. कुमारप्पा)

गांधी ने विकास की अवधारणा में सतत विकास के लिए कुछ अवधारणाएं सुझाई थी।

टिकाऊ अर्थव्यवस्था–

आर्थिक भाषा में, टिकाऊ विकास के लिए अंतर–पीढ़ी भलाई के रखरखाव की आवश्यकता होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि भविष्य की पीढ़ियों में व्यक्ति की कुल भलाई समय के साथ कम न हो। दूसरे शब्दों में सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्तियों की भावी पीढ़ी कम से कम आज की पीढ़ियों के कल्याणक ेस मानस् तरप रह ो।इ सलिएभ् ागावीप ेढ़ीक े कल्याण में अंतर–पीढ़ीगत समानता सतत विकास के केंद्र में है। स्थिरता के इस व्यापक दृष्टिकोण में एक अर्थव्यवस्था तभी टिकाऊ होती है जब वह गतिशील रूप से कुशल हो और परिणामस्वरूप कुल कल्याण स्तर का प्रवाह समय के साथ कम न हो।

स्थिरता का गांधीवादी मॉडल –

गांधी के दर्शन को राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों से निपटने के लिए व्यापक स्वीकृति प्राप्त थी, लेकिन अर्थशास्त्र के क्षेत्र में इसके बहुत अधिक अनुयायी नहीं थे। इसकी जानकारी उन्हें भी थी। गांधी अर्थव्यवस्था के प्रबंधन की दो प्रचलित प्रमुख प्रणालियों, पूंजीवादी मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था और साम्यवादी देशों के राज्य–नौकरशाही समाजवाद से प्रभावित नहीं थे। मुक्ति और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भी हमें गरीबी और पिछड़ेपन जैसे मुद्दों को हल करने में मदद नहीं की और प्रगति और विकास का सवाल आज भी हमसे दूर है। उदारीकरण को अपना प्रमुख शब्द मानने वाली विश्व अर्थव्यवस्था आज गंभीर संकट की स्थिति में है, हम कभी स्वस्थ समझी जाने वाली अर्थव्यवस्थाओं के चरमराने के कई उदाहरण देख सकते हैं। नीति–निर्माता और विचारक सभी आर्थिक विकास के सही मक्डल की खोज कर रहे हैं, लेकिन वह कहीं नजर नहीं आ रहा है।

गांधी जी के अनुसार, अर्थशास्त्र जीवन शैली का एक हिस्सा है, जो सामूहिक मूल्यों से संबंधित है और इसे समग्र रूप से मानव जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है। गांधीजी का सतत विकास का दृष्टिकोण विकास के पूंजीवादी मॉडल की प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के साथ–साथ सार्वजनिक नीति के निर्माण और कार्यान्वयन पर उनके प्रभाव को चुनौती देता है। उपर्युक्त सभी विचारों और अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्थिरता पर गांधीवादी दृष्टिकोण चार अवधारणाओं पर आधारित हैय स्वराज, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप और अपरिग्रह। (स्थायित्व का अर्थशास्त्र – जे.सी. कुमारप्पा)

स्वराज

आज के आर्थिक मॉडल आम आदमी को संसाधनों के उत्पादन और वितरण के मामले में पूरी तरह से अनभिज्ञ और असहाय बना देते हैं। इस सन्दर्भ में गांधी जी द्वारा प्रस्तुत किया गया मॉडल स्वराज का है। कमजोर अर्थव्यवस्थाओं को नव–उदारवादी पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त कराने के लिए स्वराज आवश्यक है। एक प्रकार से स्वराज का अर्थ है – आर्थिक स्वराज, जिससे हर देश अपनी ताकत के बल पर खड़ा हो। चूंकि संसाधन दुर्लभ हैं, इसलिए उत्पादन को अनिश्चित काल तक नहीं बढ़ाया जा सकता है। आर्थिक गतिविधि के बुनियादी सिद्धांत जरूरतों पर आधारित हैं न कि समृद्धि पर। उत्तरोत्तर काल असमानताप ैदाक रताह ैक योंकिय हअ ार्थिकम ूल्योंप र

आधारित है और इसी तरह लालच समृद्धि से पैदा होता है, यहां परिवर्तन के लिए मानव मन को अनुकूलित करके आत्म-नियंत्रण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

स्वराज्य का तात्पर्य मनुष्य की इच्छाओं पर नियंत्रण से है। स्वराज के मूल तत्व कृषि और कृषि-केंद्रित उद्योग हैं, इससे अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्रों (प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक) में संतुलन आएगा। और इससे गांवों को महत्व मिलेगा और गांधी ने कहा था कि 'आप फैक्ट्री सभ्यता पर अहिंसात्मक समाज का निर्माण नहीं कर सकते, लेकिन आत्मनिर्भर गांवों का निर्माण कर सकते हैंष। तो यह स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था के टिकाऊ मॉडल ग्रामीण सोच वाले होने चाहिए।

स्वदेशी

गांधी ने कहा भारत इसके कुछ शहरों में नहीं बल्कि इसके गांवों में पाया जाता है। यदि गांव नष्ट हो गए, तो भारत भी नष्ट हो जाएगा स्वदेशी के तहत समाज को बाहरी बाजारप रअ ार्थिकि नर्भरतास ेब चानाह ेगा,ज ेग ामीण समुदाय को कमजोर बना सकता है। गाँव को अपनी आवश्यकताओं के लिए मजबूत आर्थिक आधार पर निर्भर रहना चाहिए और यह सभी ग्रामीणों की जिम्मेदारी है कि वे स्थानीय वस्तुओं और सेवाओं को प्राथमिकता दें। गांधीजी कभी भी अन्य देशों के साथ व्यापार के खिलाफ नहीं थे, लेकिन वे निष्पक्ष व्यापार के बजाय तुलनात्मक लाभ और मुक्त व्यापार को महत्व देने वाली व्यापार प्रणाली के बारे में अधिक चिंतित थे।

ट्रस्टीशिप

गांधीजी ने पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना की क्योंकि वे समानता में मजबूती से विश्वास करते थे। वह अर्थव्यवस्था को आध्यात्मिक बनाना चाहते थे। इस अवधारणाक ेप ीछेक ीभ ावनाव ैराग्यअ ैरम ानवताक ी सेवा करने का मन है। दुनिया में होने वाले सभी संघर्ष आर्थिक असमानताओं के लिए और हर व्यक्ति का संसाधनों तक सीमित पहुंच से हुआ हैं, इसलिए उन्होंने मानव जीवन(अस्तित्व) की बुनियादी जरूरतों से अधिक निजी संपत्ति को शोषण के बराबर माना और माना कि निजी संपत्ति एक प्राकृतिक अधिकार नहीं बल्कि एक मानव निर्मित विशेषाधिकार है, जो मनुष्यो द्वारा पूंजीवादी सोच से बनाया गया है। इसे सामाजिक क्रिया द्वारा संशोधित एवं परिवर्तित किया जा सकता है इसलिए गांधी जी ने साथ ही आर्थिक समानता के अधिकार में अपने गहन विश्वास की घोषणा की। उन्होंने ऐसी दुनिया की कल्पना नहीं की थी जहां कोई संपत्ति नहीं होगी बल्कि वह निजी संपत्ति के अधिकार को सम्मानजनक आजीविका प्राप्त करने के लिए आवश्यकता तक ही सीमित रखेंगे, जबकि अधिकता के लिए उन्होंने ट्रस्टीशिप के सिद्धांत को निर्धारित किया था। उन्होंने उन लोगों से कहा जिनके पास पैसा है, वे गरीबों की ओर से अपना धन रखने वाले ट्रस्टी की तरह व्यवहार करें। ट्रस्टीशिप आर्थिक समानता का एकमात्र आदर्श तरीका है। यह समतावादी समाज की अवधारणा को बढ़ावा देगा।

गैर-अधिकारवाद

इस अवधारणा को गैर-अति उपभोग के रूप में भी जाना जाता है, यह आज की दुनिया में हो रहे अति उपभोग पर प्रतिबंध पर आधारित है। अत्यधिक उपभोग, उपभोग का वह स्तर है जो मनुष्य और हमारी दुनिया के अस्तित्व को खतरे में डालता है। उपभोग पर आधारित पारिस्थितिक पदछाप आकलन के चर्चा से पता चलता है कि पश्चिमी देशोंम ेंभ ारतअ ैरब ांग्लादेशक ीत ुलनाम ेंप्र ति० यक्ति पदछाप आंकलन अधिक हैं। हालाँकि, आज की दुनिया में उपभोग के लिए प्रचुर अवसर हैं और लगभग सभी समाज उपभोक्तावादी बन गए हैं और अब स्थिति बहुत जटिल है। गांधी के विचार में इच्छाओं को सीमित करना नैतिकता पर निर्भर है।

गांधीवादीअ र्थशास्त्रक ेत र्जप रब नाि वकासक ा मक्कडल अर्थव्यवस्थाओं और समाजों को अति-उपभोग की बीमारी और असमानता की बढ़ती हुई खाई से रोकता है तथा सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में है इसके साथ जुड़े ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक गिरावट जैसे परिणामों से पीड़ित होने की संभावना नहीं है।

संपर्कः

3/2, लाजपतराय रोड, निकट डिविजनल कमिश्नर ऑफिस गेट, न्यू कटरा प्रयागराज-211002

रमा शंकर सिंह की कविताएं

प्रार्थना

न कुछ मिले
तो एक फूटी नाव मिल जाए
नया सखुआ लगा लूँगा
जड़वा लूँगा पत्तल
कील काँटे ठीक कर लूँगा

एक टूटी बंसी मिल जाए
उसमें नया धागा लगा लूँगा
नया काँटा खरीद लाऊँगा कस्बे से

मिल जाए एक फटा सा जाल ही
उसमें नए फंदे जोड़ लूँगा
इतने छोटे कि कोई न कोई मछली जरूर फँस
जाएगी एक दिन

यह कब तक चलेगा
बीच मझधार
न मछली मिले न किनारा

इस धसकती रेत पर कब तक चलेगा
ओ गंगा?

देह ही सत्याग्रह है

सुबह से शाम उसी का पोषण
कील मुँहासों से बेदाग रहे चेहरा
दूध-दही, मांस-मछली- झींगा
शाक-मूली मोटा अनाज
सब इसी देह की चमक के लिए

देह करे कई काम
झुककर, अकड़कर, लचककर
हाकिम के सामने यह जीभ बन जाती है
कमजोर के सामने तलवार
यही संविधान
यही कानून की पाबंद
यही करे हुक्म-उदूली

देह बताती
कौन शासक
कौन शासित
कौन फितनागर
कौन क्या है बताती है देह
देह ही सभ्यता का प्रमाणपत्र
यहीं लिखी गई संस्कृतियों की इबारत

यहीं आकार लेती घृणा
यहीं पौरुषता बजाने आती नगाड़े
लड़े जाते युद्ध यहीं

दूर कहीं फिलिस्तीन में
क्षत-विक्षत बच्चों की देह
अत्याचारियों के खिलाफ एक सत्याग्रह है।

कंपट

बच्चे न डरें
पुलिस की राइफल से
और छुट्टियों वाले किसी दिन में
राइफल को कूटकर
टुकड़े-टुकड़े कर
उसका कम्पट खरीद लें
कबाड़ी से।

आखिरी सिक्का

मैंने तुम्हें नजर से उतार दिया है
यही मेरा हथियार है
तुम्हें पता चल जाए
मेरी फितनागरी तो
तुम्हारा लठैत मुझे पीटकर मार डालेगा

मैं चुपचाप
विनम्रता से तुम्हारे रास्ते से
अपना रास्ता अलगाता हूँ
जैसे बिल्ली का रास्ता
चूहे का रास्ता नहीं हो सकता

जब तुम्हारी बग्घी गुजरेगी मेरे बगल से
मैं फूल नहीं बरसाऊँगा
अपने जेब में बचे आखिरी सिक्के से
कम्पट खरीदूँगा, वही चुभलाऊँगा
तुम्हारे मर जाने तक।

संपर्कः
109/205, जे.एस. टावर, फ्लैट नं. 104,
कानपुर उ.प्र.-208012

कहानी

प्रेम में परमेश्वर

तोल्सतोय

किसी गांव में मूरत नाम का एक बनिया रहता था। सड़क पर उसकी छोटीसी दुकान थी। वहां रहते उसे बहुत कालह ोच ुकाथ ाा,इ सलिएव हांक ेस बि नवासियोंक ो भलीभांति जानता था। वह बड़ा सदाचारी, सत्यवक्ता, व्यावहारिक और सुशील था। जो बात कहता, उसे जरूर पूरा करता। कभी धेले भर भी कम न तोलता और न घीतेल मिलाकर बेचता। चीज अच्छी न होती, तो ग्राहक से साफसाफ कह देता, धोखा न देता था।

चौथेपन में वह भगवत्भजन का परेमी हो गया था। उसके और बालक तो पहले ही मर चुके थे, अंत में तीन साल का बालक छोड़कर उसकी स्त्री भी जाती रही। पहले तो मूरत ने सोचा, इसे ननिहाल भेज दूं, पर फिर उसे बालक से प्रेम हो गया। वह स्वयं उसका पालन करने लगा। उसके जीवन का आधार अब यही बालक था। इसी के लिए वह रात दिन काम किया करता था। लेकिन शायद संतान का सुख उसके भाग्य में लिखा ही न था।

पल पलाकर बीस वर्ष की अवस्था में यह बालक भी यमलोक को सिधार गया। अब मूरत के शोक की कोई सीमा न थी। उसका विश्वास हिल गया। सदैव परमात्मा की निन्दा कर वह कहा करता था कि परमेश्वर बड़ा निर्दयीअ ौरअ न्यायीह ै,म ारनाब ूढ़ेक ोच ाहिएथ ाा,म ार डाला युवक को। यहां तक कि उसने ठाकुर के मंदिर में जाना भी छोड़ दिया।

एक दिन उसका पुराना मित्र, जो आठ वर्ष से तीर्थयात्रा को गया हुआ था, उससे मिलने आया। मूरत बोला-मित्र देखो, सर्वनाश हो गया। अब मेरा जीना अकारथ है। मैं नित्य परमात्मा से यही विनती करता हूं कि वहम ुझेज ल्दीइ सम ृत्युलोकस ेउ ठाल े,म ैंअ बि कस आशा पर जीऊं।

मित्र-मूरत, ऐसा मत कहो। परमेश्वर की इच्छा को हम नहीं जान सकते। वह जो करता है, ठीक करता है। पुत्र का मर जाना और तुम्हारा जीते रहना विधाता के वश है, और कोई इसमें क्या कर सकता है! तुम्हारे शोक का मूल कारण यह है कि तुम अपने सुख में सुख मानते हो। पराए सुख से सुखी नहीं होते।

मूरत-तो मैं क्या कंस?

मित्र-परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अन्त:करण शुद्ध होता है। जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे तो तुम्हें परमानंद पराप्त होगा।

मूरत-चित्त स्थिर करने का कोई उपाय तो बतलाइए।

मित्र-गीता, भक्तमालादि गरन्थों का श्रवण, पाठन, मनन किया करो। ये ग्रन्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाले हैं। इनका पढ़ना आरम्भ कर दो, चित्त को बड़ी शांति पराप्ति होगी।

मूरत ने इन गरन्थों को पढ़ना आरम्भ किया। थोड़े ही दिनों में इन पुस्तकों से उसे इतना परेम हो गया कि रात को बारहबारह बजे तक गीता आदि पढ़ता और उसके उपदेशों पर विचार करता रहता था। पहले तो वह सोते समय छोटे पुत्र को स्मरण करके रोया करता था, अब सब भूल गया। सदा परमात्मा में लवलीन रहकर आनंदपूर्वक अपना जीवन बिताने लगा। पहले इधरउधर बैठकर हंसीठठा भी कर लिया करता था, पर अब वह समय व्यर्थ न खोता था। या तो दुकान का काम करता था या रामायण पढ़ता था। तात्पर्य यह कि उसका जीवन सुधर गया।

एक रात रामायण पढ़त-पढ़ते उसे ये चौपाइयां मिलीं-

एक पिता के विपुल कुमारा।
होइ पृथक गुण शील अचारा॥

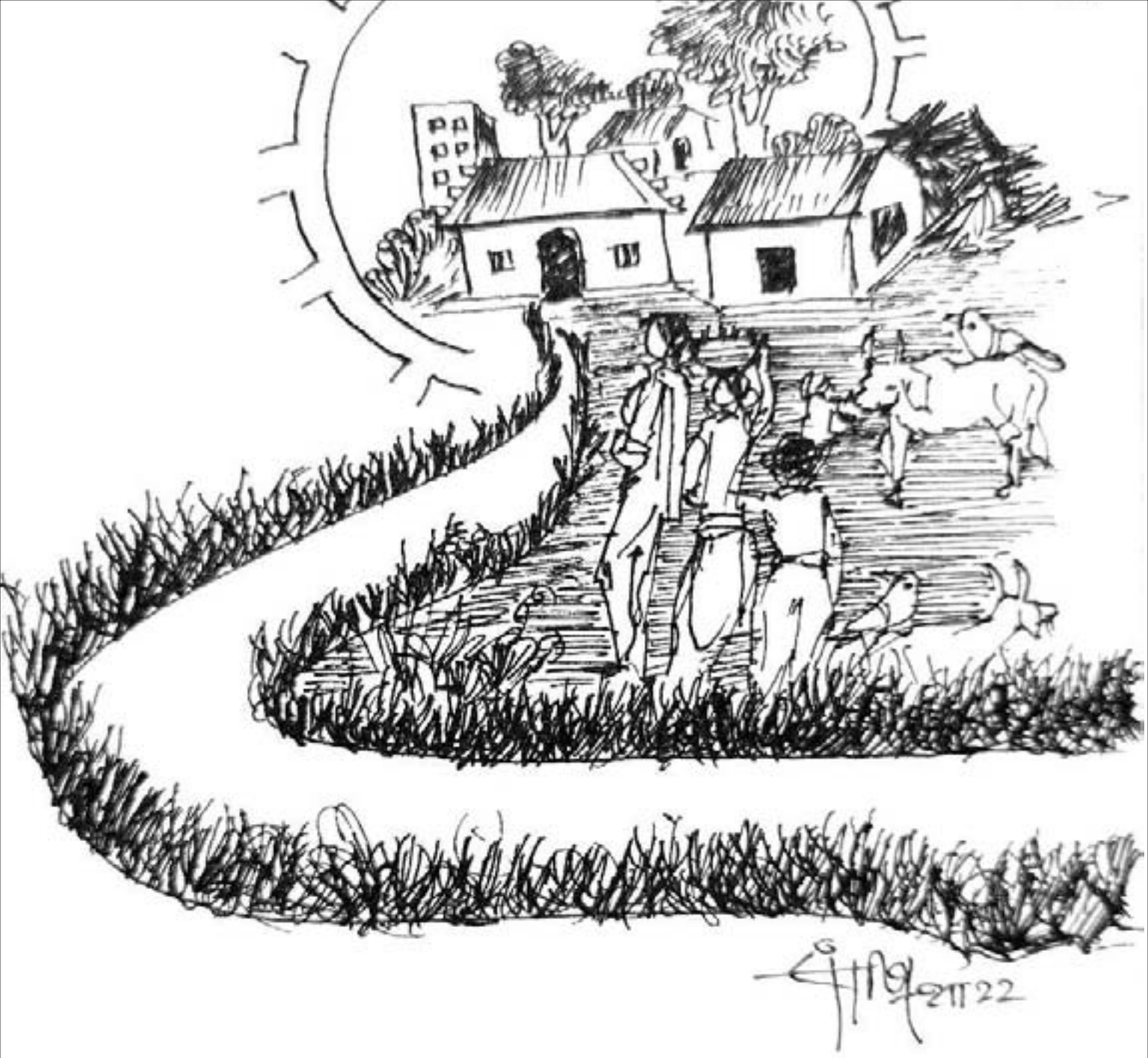

कोई पंडित कोइ तापस ज्ञाता।
कोई धनवंत शूर कोइ दाता॥
कोइ सर्वज्ञ धर्मरत कोई।
सब पर पितहिं परीति सम होई॥
अखिल विश्व यह मम उपजाया।
सब पर मोहि बराबर दाया॥

मूरत पुस्तक रखकर मन में विचारने लगा कि जब ईश्वर सब पराणियों पर दया करते हैं, तो क्या मुझे सभी पर दया न करनी चाहिए? तत्पश्चात सुदामा और शबरी की कथा पढ़कर उसके मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि क्या मुझे भी भगवान के दर्शन हो सकते हैं!

यह विचारतेविचारते उसकी आंख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा–मूरत! बोला–मूरत! देख, याद रख, मैं कल तुझे दर्शन दूंगा।

यह सुनकर वह दुकान से बाहर निकल आया। वह कौन था? वह चकित होकर कहने लगा, यह स्वप्न है अथवाज ागृति।क ुछप तान च ला।व हद ुकानक ेभ ीतर जाकर सो गया।

दूसरे दिन प्रात:कालउ ठ,प ूजापाठक र,द ुकानम ेंआ, भोजन बना मूरत अपने कामधंधे में लग गया, परंतु उसे

रात वाली बात नहीं भूलती थी।

रात्रि को पाला पड़ने के कारण सड़क पर बर्फ के पेर लगग एथ ेा।म ूरतअ पनीध ुनम ेंब ैठाथ ाा।इ तनेम ेंब र्फ हटाने को कोई कुली आया। मूरत ने समझा कृष्णचन्द्र आते हैं, आंखें खोलकर देखा कि बूा॥लालू र्बफ हटाने आया है, हंसकर कहने लगा–आवे बूढ़ा लालू और मैं समझूं कृष्ण भगवान, वाह री बुद्धि!

लालू बर्फ हटाने लगा। बूढ़ा आदमी था। शीत के कारण बर्फ न हटा सका। थककर बैठ गया और शीत के मारे कांपने लगा। मूरत ने सोचा कि लालू को ठंड लग रही है, इसे आग तपा दूं।

मूरत–लालू भैया, यहां आओ, तुम्हें ठंड सता रही है। हाथ सेंक लो।

लालू दुकान पर आकर धन्यवाद करके हाथ सेंकने लगा।

मूरत–भाई, कोई चिंता मत करो। बर्फ मैं हटा देता हूं। तुम बूढ़े हो, ऐसा न हो कि ठंड खा जाओ।

लालू–तुम क्या किसी की बाट देख रहे थे?

मूरत–क्या कहूं, कहते हुए लज्जा आती है। रात मैंने एक ऐसा स्वप्न देखा है कि उसे भूल नहीं सकता। भक्तमाल पढ़तेपढ़ते मेरी आंख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा–'मूरत!' मैं उठकर बैठ गया। फिर शब्द हुआ, 'मूरत! मैं तुम्हें दर्शन दूंगा!' बाहर जाकर देखता हूं तो वहां कोईन हीं।म ैंभ ाक्तमालम ेंस ुदामाअ ौरश ाबरीक ेच रित पढ़कर यह जान चुका हूं कि भगवान ने परमेवश होकर किस प्रकार साधारण जीवों को दर्शन दिए हैं। वही अभ्यास बना हुआ है। बैठा कृष्णचन्द्र की राह देख रहा था कि तुम आ गए।

लालू–जब तुम्हें भगवान से परेम है तो अवश्य दर्शन होंगे। तुमने आग न दी होती, तो मैं मर ही गया था।

मूरत–वाह भाई लालू, यह बात ही क्या है! इस दुकान को अपना घर समझो। मैं सदैव तुम्हारी सेवा करने को तैयार हूं।

लालू धन्यवाद करके चल दिया। उसके पीछे दो सिपाही आये। उनके पीछे एक किसान आया। फिर एक रोटी वाला आया। सब अपनी राह चले गए। फिर एक स्त्री आयी। वह फटेपुराने वस्त्र पहने हुए थी। उसकी गोद में एक बालक था। दोनों शीत के मारे कांप रहे थे।

मूरत–माई, बाहर ठंड में क्यों खड़ी हो? बालक को जाड़ा लग रहा है, भीतर आकर कपड़ा ओढ़ लो।

स्त्री भीतर आई। मूरत ने उसे चूल्हे के पास बिठाया और बालक को मिठाई दी।

मूरत–माई, तुम कौन हो?

स्त्री–मैं एक सिपाही की स्त्री हूं। आठ महीने से न जाने कर्मचारियों ने मेरे पति को कहां भेज दिया है, कुछ पता नहीं लगता। गर्भवती होने पर मैं एक जगह रसोई का काम करने पर नौकर थी। ज्योंही यह बालक उत्पन्न हुआ,

उन्होंने इस भय से कि दो जीवों को अन्न देना पड़ेगा, मुझे निकाल दिया। तीन महीने से मारीमारी फिरती हूं। कोई टहलनी नहीं रखता। जो कुछ पास था, सब बेचकर खा गई। इधर साहूकारिन के पास जाती हूं। स्यात नौकर रख ले।

मूरत–तुम्हारे पास कोई ऊनी वस्त्र नहीं है?

स्त्री–वस्त्र कहां से हो, छदाम भी तो पास नहीं।

मूरत–यह लो लोई, इसे ओढ़ लो।

स्त्री–भगवान तुम्हारा भला करे। तुमने बड़ी दया की। बालक शीत के मारे मरा जाता था।

मूरत–मैंने दया कुछ नहीं की। श्री कृष्णचन्द्र की इच्छा ही ऐसी है।

फिर मूरत ने स्त्री को रात वाला स्वप्न सुनाया।

स्त्री–क्या अचरज है, दर्शन होने कोई असम्भव तो नहीं।

स्त्री के चले जाने पर सेव बेचने वाली आयी। उसके सिर पर सेवों की टोकरी थी और पीठ पर अनाज की गठरी। टोकरी धरती पर रखकर खम्भे का सहारा ले वह विश्राम करने लगी कि एक बालक टोकरी में से सेव उठाकर भागा। सेव वाली ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और सिर के बाल खींचकर मारने लगी। बालक बोला–मैंने सेव नहीं उठाया।

मूरत ने उठकर बालक को छुड़ा दिया।

मूरत–माई, क्षमा कर, बालक है।

सेव वाली–यह बालक बड़ा उत्पाती है। मैं इसे दंड दिये बिना कभी न छोडूंगी।

मूरत–माई, जाने दे, दया कर। मैं इसे समझा दूंगा। वह ऐसा काम फिर नहीं करेगा।

बुयि ने बालक को छोड़ दिया। वह भागना चाहता था कि सूरत ने उसे रोका और कहा–बुयि से अपना अपराध क्षमा कराओ और परतिज्ञा करो कि चोरी नहीं करोगे। मैंने आप तुम्हें सेव उठाते देखा है। तुमने यह झूठ क्यों कहा?

बालक ने रोकर बुयि से अपना अपराध क्षमा कराया और परतिज्ञा की कि फिर झूठ नहीं बोलूंगा। इस पर मूरत ने उसे एक सेव मोल ले दिया।

बुयि–वाहवाह,क याक हनाह ै!इ सप रकारत ोत ुम गांव के समस्त बालकों का सत्यानाश कर डालोगे। यह अच्छी शिक्षा है! इस तरह तो सब लड़के शेर हो जायेंगे।

मूरत–माई, यह क्या कहती हो! बदला और दंड देना तो मनुष्यों का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं, वह दयालु है। यदि इस बालक को एक सेव चुराने का कठिन दंड मिलना उचित है, तो हमको हमारे अनन्त पापों का क्या दंड मिलना चाहिए? माई, सुनो, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। एक कर्मचारी पर राजा के दस हजार रुपये आते थे। उसके बहुत विनय करने पर राजा ने वह ऋण छोड़ दिया। उस कर्मचारी की भी अपने सेवकों से सौसौ रुपये पावने थे, वह उन्हें बड़ा कष्ट देने लगा। उन्होंने बहुतेरा कहा कि हमारे पास पैसा नहीं, ;ण कहां से चुकावें? कर्मचारी ने एक न सुनी। वे सब राजा के पास जाकर फरियादी हुए। राजा ने उसी दम कर्मचारी को कठिन दंड दिया। तात्पर्य यह कि हम जीवों पर दया नहीं करेंगे, तो परमात्मा भी हम पर दया नहीं करेगा।

बुयि–यह सत्य है, परंतु ऐसे बर्ताव से बालक बिगड़ जाते हैं।

मूरत–कदापि नहीं। बिगड़ते नहीं, वरंच सुधरते हैं।

बुयि टोकरा उठाकर चलने लगी कि उसी बालक ने आकर विनय की कि माई, यह टोकरा तुम्हारे घर तक मैं पहुंचा आता हूं।

रात्रि होने पर मूरत भोजन करने के बाद गीतापाठ कर रहा था कि उसकी आंख झपकी और उसने यह –श्य देखा–

'मूरत! मूरत!'

मूरत–कौन हो?

'मैं–लालू।' इतना कहकर लालू हंसता हुआ चला गया।

फिर आवाज आयी–श्मैं हूं।श मूरत देखता है कि दिन वालीस् त्रील ोईअ ोढ़,ब ालकक ोग ोदम ें िलये,स म्मुख आकर खड़ी हुई, हंसी और लोप हो गई। फिर शब्द सुनाई दिया–'मैं हूं।' देखा कि सेव बेचने वाली और बालक हंसतेहंसते सामने आये और अन्तर्धान हो गए!

मूरत उठकर बैठ गया। उसे विश्वास हो गया कि कृष्णचन्द्र के दर्शन हो गए, क्योंकि पराणिमात्र पर दया करना ही परमात्मा का दर्शन करना है।

अनुवाद – **प्रेमचंद**

फोटो में गांधी

चित्रकारी

सुखदा
वर्ग: आठ (ए)
स्कूल: होली इनोसेंट पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, दिल्ली

प्रतिभा चौहान की बाल कविताएं

(1)
पाँच बजे की सुबह देखो
कितनी शीतलता है छाई
मस्त हुआ है अंबर सारा
पृथ्वी ने ली है अंगड़ाई

सूरज भैया आते होंगे
चंदामामा करो विदाई
मुर्गा सोता पड़ा हुआ है
शायद घर में हुई लड़ाई

तोता मैना कोयल कौवा
खेल उठे हैं छुपन छुपाई
झूम उठी है डाली डाली
प्रभु ने ऐसी हवा चलाई

तुम भी उठकर दौड़ो भागो
नभ में लाली है मुस्काई
जिसने भी व्यायाम किया है
अच्छी सेहत उसने पाई ।

(2)

सूरज भैइया हुए उदास
लगता है कोई बात है खास
शायद कोई हुआ है झगड़ा
या पापा से पड़ी है डांट

लाल लाल से हुए हैं गाल
यह गुस्से की कोई बात
आज मुझे तुम सत्य बताओ
या करता हूँ मां से बात

डर के मारे सूरज बोला
मम्मी से मत करना बात
न मैं गुस्से में हूं भाई
नहीं पड़ी है पिता से डांट

कल तारों की हुई थी पार्टी
चंदा मामा भी था साथ
हड़प गए सब लड्डू-पेड़े
प्लेटें कर गए सारी साफ।

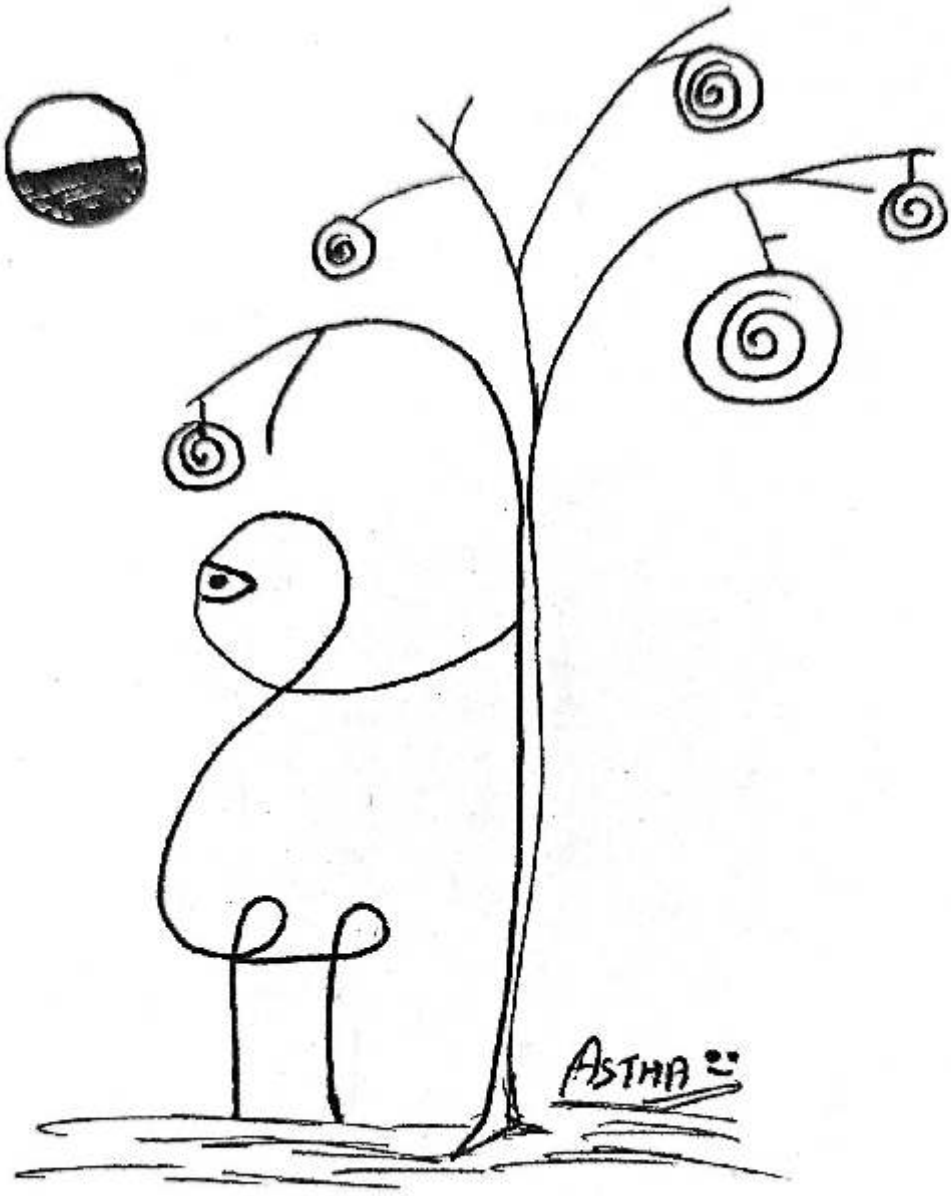

(3)

कद्दू बोला केले से
तुम कितने हो पतले से

मुझको देखो मोटा ताजा
लगता हूं मैं कहीं का राजा

तुम तो जैसे रहते भूखे
लगते हो कंजूस कहीं के

केले का मन हुआ उदास
पहुंचा लेकर एक फरियाद

सेब संतरा लीची आम
सबसे बोली अपनी बात

सबने की कद्दू की खिंचाई
लगते हो तुम हाथी भाई

आकार नहीं होती पहचान
गुण से होती सबकी शान

केले से फिर माफी मांगी
कद्दू ने अब बात है समझी।

(4)

चिड़िया बोली पेड़ भाई
क्यों हो रही इतनी कटाई
नहीं रहोगे तुम जंगल में
तो कैसे इंसान रहेगा
बादल रूठ चले जाएंगे
हर झरना सुनसान रहेगा
बारिश फिर न हो पाएगी
हर कोई हैरान रहेगा
कैसे खेती बाड़ी होगी
मुश्किल में किसान रहेगा
प्यासे होंगे पशु और पक्षी
प्यासा हर इंसान रहेगा
यह सुनकर पेड़ हुआ उदास
बोला चिड़िया रानी बैठो पास
सच कहती हो चिड़िया रानी
काश कोई समझाए प्राणि
अगर समझ जाए ये इंसान
पृथ्वी पर होगा एहसान ।
तुम्हारे पर काट दिए जाने की
ताकि कल को कुछ गलत होने पर
कोई प्रतिकार न कर सको तुम
इसलिए सबल बनो, प्रतिवाद करो
बतलाओ दुनिया को कि
तुम निर्बल नहीं, सबल हो
तुम्हें स्वीकार नहीं बन जाना
एक खूंटे से बंधी गाय
तुम्हारा भी स्वतंत्र अस्तित्व है
तुम अपनी आत्मरक्षा करने में सक्षम हो
तुम अपना कल लिखने के काबिल हो
और तुम अपना यह हक
किसी को भी छीनने न दोगी।

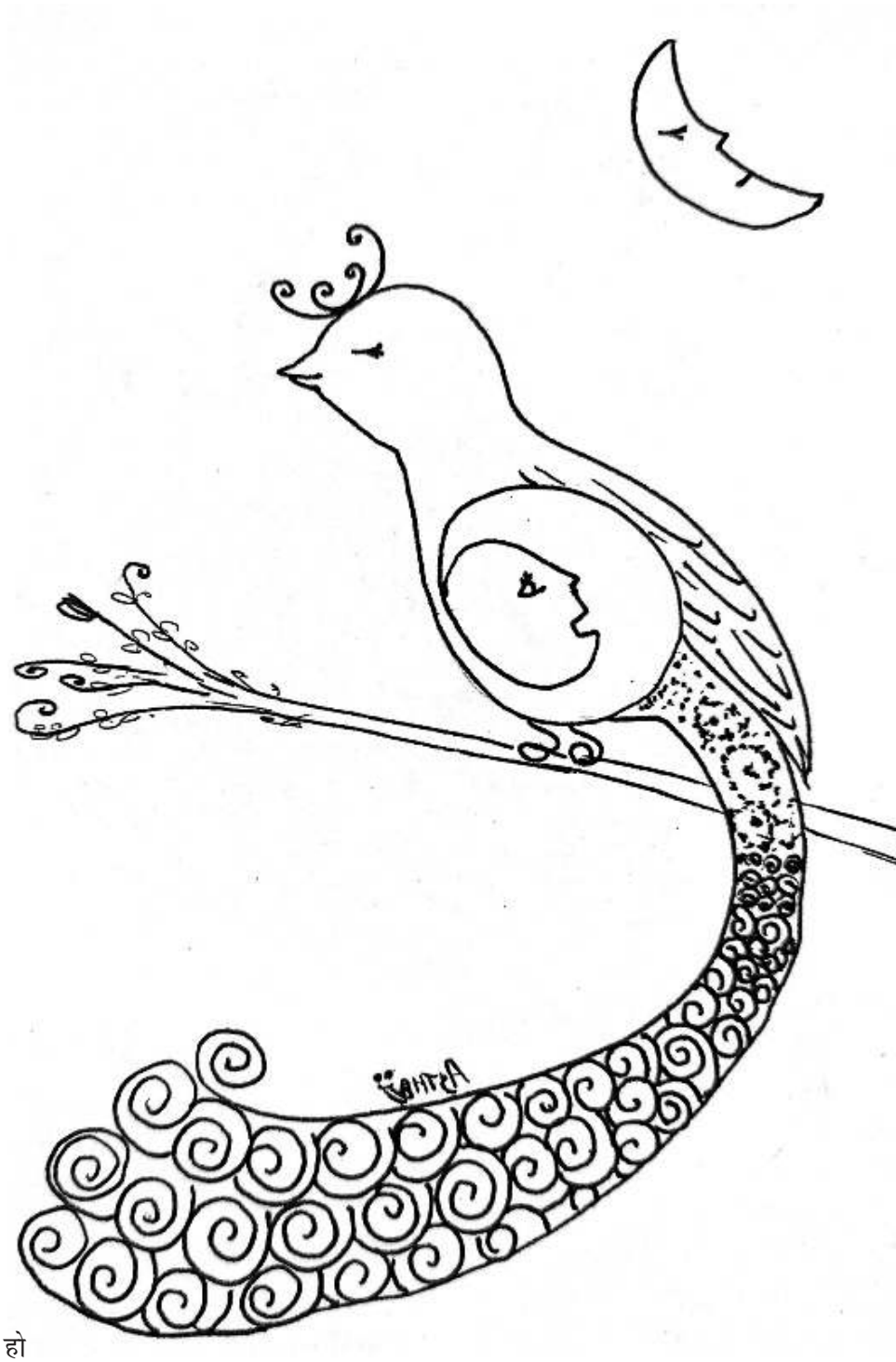

(5)

भालू के मन में आई बात
पहुंचा एक दर्जी के पास
सिल दो भैया एक पजामा
जैसा पहने बंदर मामा
ढीला थोड़ा सिलना ज्यादा
लगती मुझको गर्मी ज्यादा
दर्जी ने फिर ले ली नाप
बोला परसों आओ आप
सिलकर आयेगा पजामा
अपने घर तुम लेकर जाना
जैसे जैसे दिन दो बीते
भालू लेने चला पजामा
पजामा जब नाप के देखा
यह तो भाई बहुत ही छोटा
ये तुमने क्या किया हिसाब
कर डाला कपड़ा बर्बाद
दर्जी बोला ठीक थी नाप
पर लगते हो मोटे आप
जाकर अपना वजन घटाओ
कपड़ा नया खरीद के लाओ ।

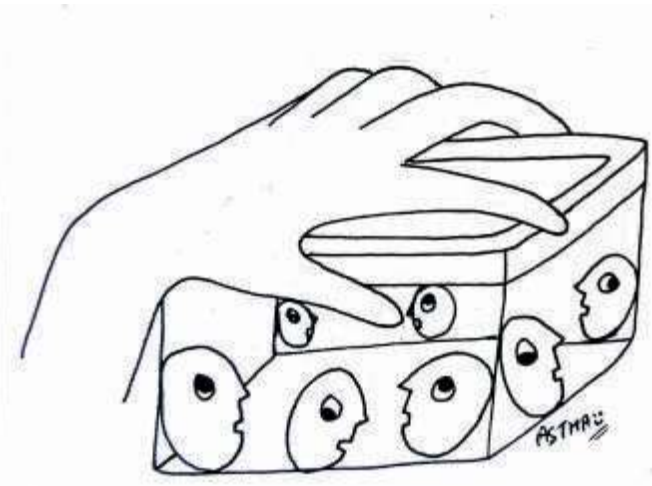

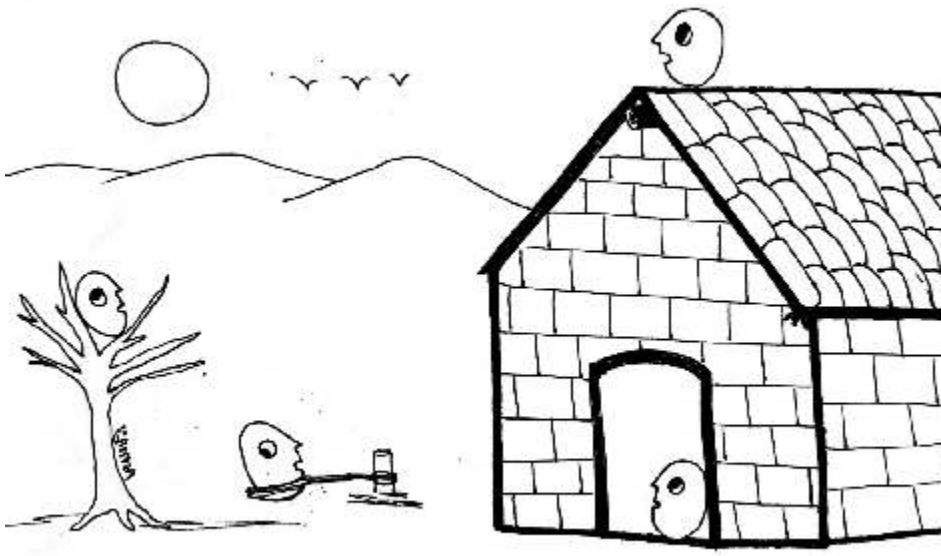

(6)

अपना घर है सबसे प्यारा
जिसमें बहती प्रेम की धारा
मम्मी, पापा, दादा, दादी
भैया, दीदी, चाचा, चाची
है यह कितनी खुशी की बात
दुख सुख में सब रहते साथ
सब मिलकर त्यौहार मनाते
साथ में मिलकर घूमने जाते
देश-विदेश कोई शहर या गांव
लंदन पेरिस, दिल्ली, गुड़गाँव
जाऊं कहीं भी शहर या गांव
पर सबसे प्यारी घर की छांव
कुछ दिन अच्छा लगता बाहर
फिर मन करता घर घर घर
घूम लो कितना भी संसार
सबसे प्यारा अपना घर द्वार।

संपर्कः
अपर जिला न्यायाधीश, बिहार न्यायिक सेवा
मो. -08709755377
मेल- cjpratibha.singh@gmail.com

मिलेट खाएं स्वस्थ रहें

नेहा सिंह

पिछले दिनों दिल्ली के गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सत्याग्रह मंडप में तीन दिनों (5-6-7 नवंबर) तक मिलेट महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और समापन सत्र में हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय शामिल हुए। इस महोत्सव में पूरे तीन दिनों तक मिलेटमैन डॉ. खादर वली और उनकी बिटिया डॉ. सरला ने पंद्रह सत्रों में लोगों को मिलेट के बारे में विस्तार से बताया।

पिछले दिनों दिल्ली के गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सत्याग्रह मंडप में तीन दिनों (5-6-7 नवंबर) तक मिलेट महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और समापन सत्र में हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय शामिल हुए। इस महोत्सव में पूरे तीन दिनों तक मिलेटमैन डॉ खादर वली और उनकी बिटिया डॉ सरला ने पंद्रह सत्रों में लोगों को मिलेट के बारे में विस्तार से बताया।

''अन्न ही औषधि है। अगर अन्न का ठीक ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो यह औषधि की तरह काम करती हैं। इस मामले में श्रीअन्न औषधि के समान है।'' ये बातें दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने कही। वे गांधी दर्शन में आयोजित तीन दिवसीय मिलेट्स महोत्सव के उद्घाटन के बाद सत्याग्रह मंडप में उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। आगे उन्होंने कहा कि साल 2023 को संयुक्त राष्ट्र ने मिलेट्स वर्ष घोषित किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जी-20 सम्मलेन के दौरान रात्रि भोज में मिलेट्स से बने भोजन ही महमानों को परोसा था।

बीते 5-6-7 नवंबर को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सत्याग्रह मंडप में इस मिलेट महोत्सव का आयोजनि कयाग या।इ सि मलेटम होत्सवक ाअ ायोजन अवसर ट्रस्ट ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और गांधी दर्शन के सहयोग से किया था। इस तीन दिवसीय आयोजन का थीम पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ जीवन के लिए मिलेट्स के उपयोग विषय पर आधारित था। इस महोत्सव को सोशल मीडिया पर ट्रेंड कराने के लिए हैशटैग ये दिवाली मिलेट वाली जारी किया गया था। यहां देश भर से आये 35 मिलेट्स उत्पादकों द्वारा विभिन्न प्रकार के स्टाल भी लगाये गये थे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सौजन्य से यहां मिलेट को लेकर सुंदर प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। साथ ही तीनों दिन शाम 6 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ।

महोत्सवक ेउ द्घाटनस त्रक ेद ौरानर ाज्यसभाक े पूर्व सांसद व अवसर ट्रस्ट के अध्यक्ष आर. के. सिन्हा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि अगर आहार सही नहीं है तो दुनिया का कोई डॉक्टर आपको ठीक नहीं कर सकता। पहला सुख निरोगी काया है। मैं खुद दूषित भोजन के कारण बहुत बीमार रहा हूं। लेकिन मिलेट्स से बने खाद्य पदार्थख ानेक ेब ादम ेरेस् वास्थ्यम ेब हुतअ ाश्चर्यजनक परिवर्तन आये हैं और मेरी सेहत बहुत अच्छी हो गई है।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही ने कहा कि आज 130 देशों में मिलेट्स पर आयोजन हो रहा है। मिलेट्स में इतनी ताकत है कि इसके सेवन से 100 वर्षों तक जीने की कल्पना की गई है। गीता में भी इसके बारे में लिखा गया है। मोटे अनाज

को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार गंभीर है। उत्तर प्रदेश सरकार ने अब तक 50 हजार किसानों को मोटे अनाज के नि:शुल्क बीज का वितरण किया है। उन्होंने मंच से उत्तर प्रदेश में मिलेट उपजाने के लिए फार्म के लिए जमीन देने की बात कही।

वहीं मिलेट मैन डा. खादर वली ने कहा कि भोजन का कॉरपोरेटाइजेशन हो चुका है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यह सब शुरू हुआ है। हरित क्रांति के नाम पर हमारे परंपरागत अनाज के बदले हमारी थाली में चावल और गेहूं परोस दिया गया है। अगर आप चावल और गेहूं खाते हैं तो आप हिंसक हैं। क्योंकि एक किलो चावल या गेहूं उपजाने के लिए 8000 लीटर पानी की जरूरत होती है। जबकि एक किलो मिलेट के लिए अधिकतम केवल 800 लीटर पानी की जरूरत होती है। हम प्रकृति के विरुद्ध चल रहे हैं। आगे उन्होंने बताया कि दूध में कैल्शियम नहीं है। इसलिए दूध पीने की चीज नहीं है। और हमें अलग से प्रोटीन लेने की जरूरत नहीं है। हमारे डॉक्टर बताते हैं कि हरेक दो-तीन घंटे पर कुछ खाना चाहिए। इसमें कुछ भी वैज्ञानिक विचार नहीं है।

वहीं गांधी दर्शन के उपाध्यक्ष विजय गोयल ने कहा कि मोटे अनाज का हम वर्षो से उपयोग कर रहे हैं। मोटे अनाज का उपयोग आपकी आयु को बढ़ाता है। मिलेट्स से बना अच्छा भोजन दिल्ली में बहुत मुश्किल से मिलता है। मैं गांधी दर्शन में मिलेट्स भोजनालय के लिए सिन्हा जी को स्थान उपलब्ध करवाने को तैयार हूं। इस सत्र में अतिथियों आभार ज्ञापन इंदिरा गांधी कला केंद्र के कलाकोश डिवीजन के प्रमुख प्रो. डा. सुधीर लाल ने किया।

दूसरे सत्र में ग्लूकोज असंतुलन पर अपने विचार रखते हुए डा. सरला ने कहा कि हमें अपने शुगर को नियंत्रित रखना है तो अपने भोजन में मिलेट को शामिल करना चाहिए। खाने में जंक फुड का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। चावल और गेहूं पर्व-त्योहार और विशेष मौके पर खाना चाहिए। हमें भोजन में सफेद चीनी और सफेद नमक से परहेज करना चाहिए। इस सत्र में मिलेटमैन डा. खादर वली ने कहा कि मिलेट आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है लेकिन हम इस पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। डायबिटीज की वजह से 2000 बिलियन रुपये हम विदेशी दवा कंपनियों को दे रहे हैं। मिलेट का उपयोग करने से जो रुपये हम विदेशी कंपनियों को दे रहें है वो रुपये हमारे पास बचेंगे। उसका उपयोग हम अन्य कार्यों में करेंगे।

तीसरे सत्र में डा. खादर वली और डा. सरला ने श्री अन्‍न क्यों जरूरी है इसके बारे में बताया। साथ ही डा. सरला ने कंगनी, कुटकी, कोदो, सांवा और हरी कंगनी में मौजूद फाइबर और पोषक तत्वों के बारे में विस्तार से बताया। ये मिलेट किन रोगों में लाभकारी है इसके बारे में जानकारी दी। वहीं मिलेट मैन डा. खादर वली ने कंगनी, कुटकी, कोदो, सांवा और हरी कंगनी को पाजिटिव मिलेट बताया। साथ ही कहा कि ये मिलेट हमारे शरीर के लिए प्रकृति प्रदत्त ऐसा अन्न है जो हमारी शारीरिक जरूरतों को पूरा करता है।

वहीं चौथे सत्र में डा. सरला ने मिलेट का खाना कैसे बनाएं। खाना बनाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखें इस पर प्रतिभागियों से चर्चा की और उनके सवालों के जवाब दिये।

दूसरे दिन पांचवें सत्र में मिलेट मैन डा. खादर वली और डा. सरला ने स्वास्थ्य के लाभकारी पारंपरिक प्रथाओं के पुनरुद्धार की बात की। छठे सत्र में मिलेट मैन डा. खादर वली ने रिफाइन ऑयल को कैंसर का कारक बताया। सेहत के हिसाब से खाने के लिए कच्ची घानी या कोल्ड प्रेस ऑयल को सही बताया। खाने के लिए सरसो, मूंगफली, सूरजमुखी, नारियल तेल आदि को बेहतर बताया। अपने प्रोटोकॉल में तिल का तेल और अरंडी का तेल आदि को उपयोग करने की सलाह दी।

सातवें सत्र में डा. सरला ने माइक्रोबियल संतुलन के लिए अंबली के सेवन की बात कही। साथ ही कहा कि यह हमारे गट के लिए अच्छा होता है। यह कैसे हमें सेहतमंद रखता है इसके बारे में बताया। इस सत्र में उन्होंने अंबली के बारे में विस्तार से समझाया। साथ अंबली को कैसे कितनी देर कैसे भिगोएं, कैसे पकाएं और कैसे खाएं। इसकेब ारेम ेंभ ीवि वस्तारस ेब ताया।अ ाठवेंस त्रम ेंड ा. खादर वली ने दूध के बारे में बताते हुए कहा कि व्हाइट

रिवोल्यूशन के नाम पर हमें जहर पिलाया जा रहा है। पशु दूध हमारे शरीर के अंदर हार्मोनल असंतुलन पैदा करता है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग से बचना है तो तीन साल तक दूध, चाय और काफी नहीं पिएं। दूध सिर्फ बच्चे को अपनेम ांक ाप ीनाच ाहिए।ड ेयरीक ाद ूधक ाइ स्तेमाल नहीं करना चाहिए। मिलेट्स से दूध बनाकर सभी को लेना चाहिए। इसमें सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व मौजूद हैं। दूध के उपायों पर बात करते हुए उन्होंने लोगों को बाजरा और रागी से बने मिलेट्स दूध की महत्ता, उसके उपयोग और उसे बनाने की विधि विस्तार से बताई। साथ ही कोकोनट और पीनट से निकाले दूध को उपयोग करने की सलाह दी।

नौवें सत्र में डा. सरला ने मिलेट से स्वादिष्ट भोजन कैसे बनाएं इसके बारे में विस्तार से बताया। इस सत्र में उन्होंने लेमन राइस, रोटी, इडली, डोसा, खीर, मिठाई आदि बनाने के तरीके बताए। इस दौरान उन्होंने अपने यूटयूब चौनल मिलेट मैजिक का जिक्र भी किया। और बताया कि यहां से आप मिलेट के भोजन कैसे बनाएं इसे सीख सकते हैं। दसवें सत्र में डा. खादर वली ने पानी की कहानी विस्तार से बताई। आज जो हम जल पी रहे हैं उसमें प्लास्टिक की मात्रा बढ़ गई है। कई अन्य तरह के विषैले तत्व भी जल में शामिल हो गए हैं। लोगों को संरचित जल पीने और संरचित जल से ही खाना बनाने की सलाह दी। पानी को संपूर्ण आरोग्य के लिए उन्होंने जरूरी बताया है। जल को संरचित करने के लिए पानी के बर्तन में कॉपर प्लेट रखने की सलाह दी। पानी को कभी भी प्लास्टिक बोतल में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इसे ताम्बा से बने बर्तन में रखकर ही उपयोग करें। इसमें सभी खनिज पदार्थ मौजूदर हतेह ैं।स ाथह ीप ानीर खनेक े लिएम ट्टीक े बरतन को बेहतर बताया। वहीं चीनी और चीनी से बने मिठाई के बदले लोगों खजूर के गुड़ और उससे बने मिठाई खाने की सलाह दी।

दूसरे दिन कार्यक्रम के अंत में डा. खादर वली और डा. सरला ने प्रतिभागियों के सवालों के जवाब दिए और बताया कि स्वस्थ शरीर के लिए मिलेट्स से बने खाद्य पदार्थ क्यों जरूरी हैं।

तीसरे और अंतिम दिन बारहवें सत्र में पर्यावरणीय पहलू मिट्टी, नदी और वायु संरक्षण विषय पर बोलते हुए डा. अरूण श्रीवास्तव ने कहा कि हमारा जीवन शैली धीरे–धीरे बदल गया। जिसकी वजह से पर्यावरण का नाश होर हाह ै।भ ूमिगतज लस् तरक मह ोर हाह ै।ग ेहूंअ ौर चावल उगाने में बहुत ज्यादा पानी लगता है। मिलेट उगाने में कम पानी लगता है। आज जरूरत यह है कि वेस्ट को वेल्थ में परिवर्तित करने की। वहीं तेरहवें सत्र में जैव विविधता और ग्लोबल वार्मिंग पर अपनी बात रखते हुए डा. खादर वली ने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग का मूल कारण कार्बन डाइऑक्साइड है। इसलिए हम लोग अपने जीवन शैली में परिवर्तन करें। हम प्रज्ञा पूर्वक ऐसी जीवन शैली अपनाए कि हमें कम से कम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन करना पड़े। चौदहवें सत्र में खाद्य संप्रभुता पर बोलते हुए डा. खादर वली ने कहा कि किसान ने ज्यादा पैदावार के चक्कर में बीज का हक खो दिया है। किसान की संप्रभुता तभी आएगी जब उसके पास बीज का हक होगा। किसान खुद उगाएं, खुद प्रोसेस करें, खुद खाएं और खुद सेल करें। फूड सिक्योरिटी पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि सुरक्षा ज्यादा अन्न जमा करने में नहीं है। जब आपके पास भोजन उगाने और खाने की स्वतंत्रता होगी, तभी आपकी सुरक्षा का मतलब है।

'फिल्म के जरिये मिलेट्स की महत्ता बताएगी सरकार – गोविंद मोहन'

गांधी दर्शन के सत्याग्रह मंडप में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन संस्कृति मंत्रालय के सचिव गोविन्द मोहन ने बताया कि भारत सरकार मिलेट्स को आम जन तक पहुंचाने के लिए एक फिल्म बनाने जा रही है जिससे मिलेट्स के महत्त्व को आम जन तक पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने मिलेट्स को अंतरराष्ट्रीय मुकाम पर पहुंचाने के लिए जी–20 में मेहमानों को भोजन में मिलेट्स को परोसा था और आज मिलेट्स से बना भोजन भारत के सभी बड़े–बड़े रेस्टोरेंट में उपलब्ध है। साथ ही मिलेट्स को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदमों से कार्यक्रम में आये लोगों को अवगत कराया।

बॉक्स–2

'विदेशियों ने हमारी रसोई पर कब्जा कर लिया है – जोशी'

तीसरें दिनस मापनस त्रम ेंभ ाजपाक ेव रिष्ठन ेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि विदेशियों ने हमारी रसोई पर कब्जा कर लिया है। यह देशवासियों के स्वास्थ्य के लिए घातक है। उन्होंने कहा कि मिलेट देश की संस्कृति से जुड़ा प्रश्न है। घर में बनने वाला खाना सबसे अच्छा होता है। पहले हम चौकी पर बैठ कर हाथ से खाते थे और आज हम बिना छुरी कांटे के नहीं खाते हैं।

इस अवसर पर हरियाणा के माननीय राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने अपने संबोधन में कहा कि मोटा अनाज हमारा पारंपरिक आहार है, जिसे खाकर हमारे पूर्वज लम्बी आयु जीते रहे हैं। श्री धान्य में विशेषता है कि यह हमारे शरीर की सफाई भी करती है। मैं मिलेट महोत्सव के सफल आयोजन के लिए सभी को बधाई देता हूं।

अवसर ट्रस्ट के अध्यक्ष और पूर्व सांसद आर के सिन्हा ने कहा कि देश में मिलेट्स को लेकर जागरूकता फैलाने की जरूरत है। मोटा अनाज हमारी सेहत के लिए लाभदायक है। वहीं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष रामबहादुर राय ने कहा कि मैं खादर वली जी का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं और इनके बताये गए सभी नियमों का पालन करने की कोशिश करता हूं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि इंदिरा गांधी कला केंद्र इस मिलेट्स महोत्सव के आयोजकों में शामिल है। हम एक समय का भोजन 'मिलेट शपथ' लेकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बना सकते हैं। ये दिवाली मिलेट वाली हैशटैग सोशल मीडिया पर बहुत प्रचारित हो गया है। हम लोगों ने इस कार्यशाला के माध्यम से एक यज्ञ की शुरुआत कर दी है।

गाँधी दर्शन के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि हम सब मिलेट्स पर एक आयोजन की परिकल्पना कर रहे थे। हम लोग बचपन से ज्वर बाजरा खाकर बड़े हुए हैं। यहाँ बने मिलेट्स का खाना इतना स्वादिष्ट था कि मैं भेद नहीं कर पाया कि यह मिलेट्स से बना खाना है।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सुबोधाकान्त सहाय ने कहा कि इस देश में हर दूसरा व्यक्ति शुगर और ब्लड प्रेशर का मरीज है। ऐसे समय में मिलेट की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। इस कार्यशाला में शामिल होने वाले सभी लोग बहुत भाग्यशाली हैं।

मिलेट मैन डा. खादर वली ने बताया कि आज हम पाश्चात्य जीवन जीने के कारण कई परेशानियों से गुजर रहे हैं। उसका समाधान हमारी रसोई में छिपा है। पूरे विश्व में रसोई को हटा दिया गया है। यह हमारे देश में नहीं होना चाहिए। अपने स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए मिलेट ही एकमात्र सरल माधयम है। 15 दिनों में मिलेट्स से शुगर की बीमारी ठीक होनी शुरू हो जाती है। खाना सही नहीं है तो कोई दवा काम नहीं करती।

डॉ. खादर वली ने कहा कि चावल, गेहूं के समस्त उत्पाद, चीनी और डेयरी के दूध को थाली से हटाकर यदि मिलेट्स को ले आयें तो तीन महीने से दो वर्षों के अंदर सारी बीमारियां समाप्त हो जायेंगी। उन्होंने कहा कि इससे 90 प्रतिशत अस्पताल भी बंद हो जाएंगे। यह दु:ख की बात है कि चावल, गेहूं और गन्ने के समृद्धि और विकास के लिये तो पिछले पचास वर्षों में सैकड़ों करोड़ लाख खर्च किये गये, लेकिन मोटे और छोटे अनाज पर आजतक कोई रिसर्च ही नहीं हुआ। छोटे अनाज पैदा कर सिर्फ भारत पूरे विश्व को अगले पांच सौ वर्षों तक पर्यावरण को सुरक्षित रखकर खिला सकते हैं। मिलेट महोत्सव में आए लोगों से मिलेट मैन डा. खादर वली ने तीन अपील किए। पहला, देश में मिलेट मंत्रालय बने। दूसरा, हर राज्य मुख्यालय में एक मिलेट शोध केंद्र स्थापित हो। तीसरा, हर जिले और तहसील मुख्यालय में एक वेलनेस सेंटर बने। ताकि हमारा भविष्य सुरक्षित रहे।

गतिविधियाँ

मिलेट्स महोत्सव का आयोजन

गांधी दर्शन और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के संयुक्त प्रयास से तीन दिवसीय 'गांधी मेगा मिलेट्स महोत्सव' का आगाज 5 नवम्बर को गाँधी दर्शन में हुआ। इसका उद्घाटन दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि के तौर पर उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री सूर्यप्रताप शाही, गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल और पूर्व राज्यसभा सांसद श्री आरके सिन्हा उपस्थित थे।

इस महोत्सव की थीम 'पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ जीवन के लिए मिलेट्स के उपयोग' विषय पर आधारित थी। मिलेट मैन के नाम से प्रसिद्ध डॉ खादर वली ने लोगों को मिलेट्स के लाभ पर अनेक जानकारियाँ दी।

तीन दिवसीय मिलेट्स महोत्सव का समापन 7 नवम्बर को हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय थे। अध्यक्षता पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ मुरली मनोहर जोशी ने की। इस अवसर पर समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल, आईजीएनसीए के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय, पूर्व सांसद श्री आरके सिन्हा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। महोत्सव का स्लोगन 'इस बार की दिवाली मिलेट वाली' लोगों के आकर्षण का केंद्र बना।

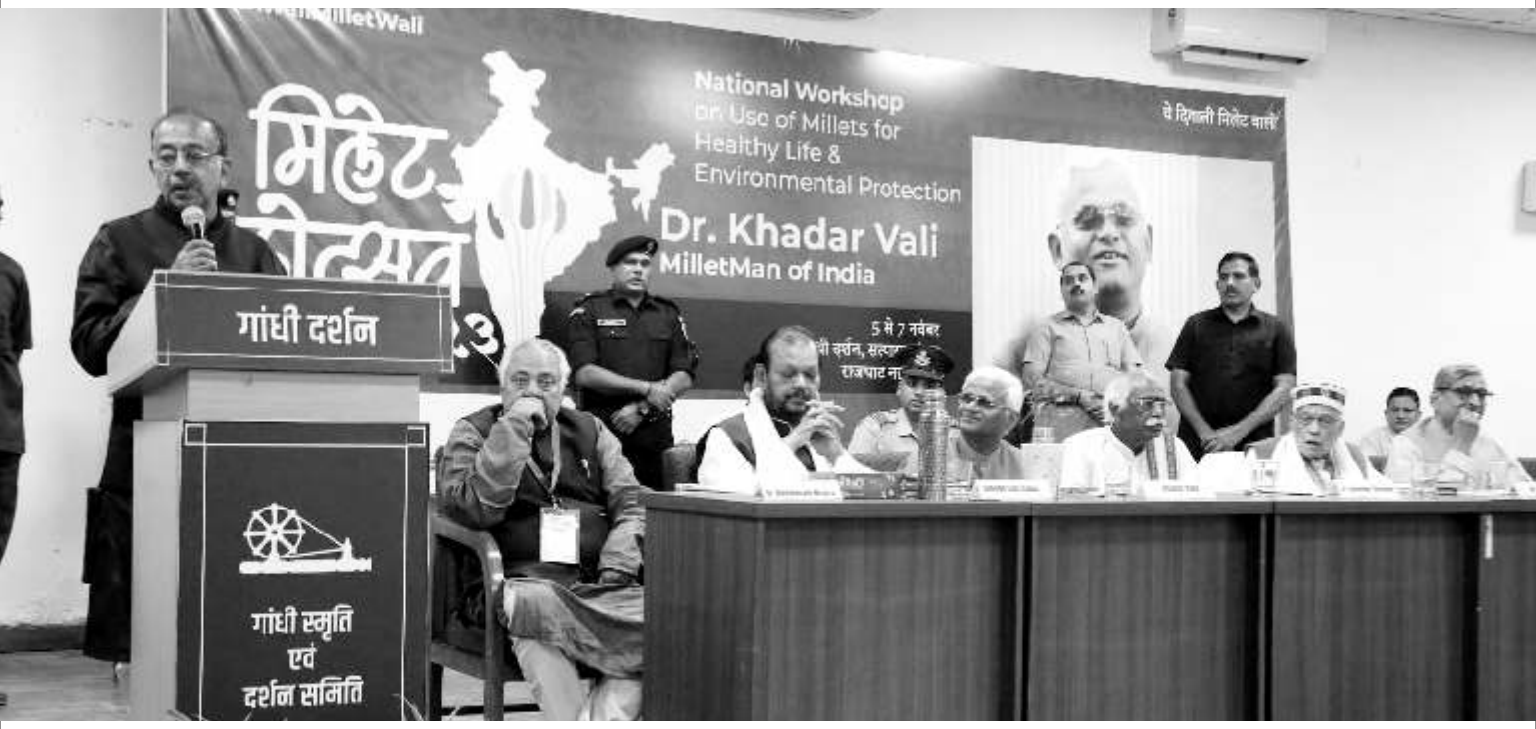

200 युवाओं ने किया गाँधी स्मृति का दौरा

नेहरू युवा केंद्र संगठन के लगभग 200 युवा कार्यकर्ताओं ने 5 नवंबर, 2023 को गांधी स्मृति का दौरा किया और शहीद स्तंभ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली ने युवाओं को गाँधी दर्शन का अवलोकन करवाया और गांधीजी से जुडी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी। कार्यकर्ताओं ने महात्मा गांधी के कक्ष और मल्टी मीडिया संग्रहालय का अवलोकन भी किया।

गांधी प्रश्नोत्तरी में दिखाया बच्चों ने उत्साह

गांधी स्मृति के माननीय उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल जी के निर्देशानुसार गांधी स्मृति में नियमित रूप से गांधी;प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे गांधी स्मृति मे घूमने आए बच्चे उत्साह से भाग ले रहें हैं। गाँधी स्मृति की इस पहल का यहाँ बच्चों के साथ आने वाले अभिभावक भी तारीफ कर रहे हैं। प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप गांधीजी की पुस्तिका 'मोनिया' दी जाती है।

गाँधी विचार सभा आयोजित

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 18 नवंबर, 2023 को गांधी स्मृति में गांधी विचार सभा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल ने की। जिसमें आरडब्ल्यूए के अध्यक्षों, पेंशनभोगी संघ के निदेशक और अध्यक्ष, सामाजिक कार्यकर्ताओं,ि शक्षाविदों,स ेवानिवृत्तस रकारीक र्मचारियोंस हित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर श्री गोयल ने कहा कि गाँधी स्मृति एक ऐतिहासिक स्थान है, जिसमें बने म्यूजियम का अधिक से अधिक लोगों को अवलोकन करना चाहिए।

हमारे नये प्रकाशन

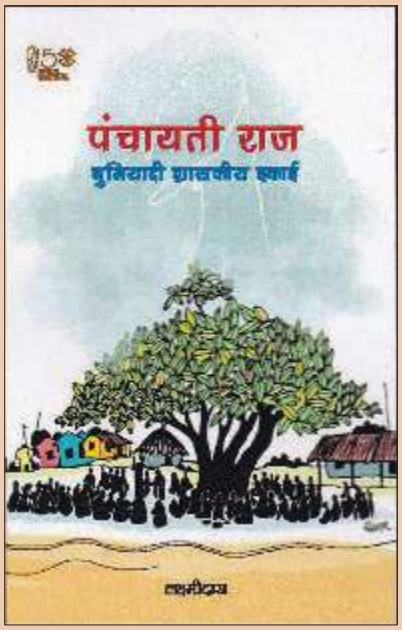

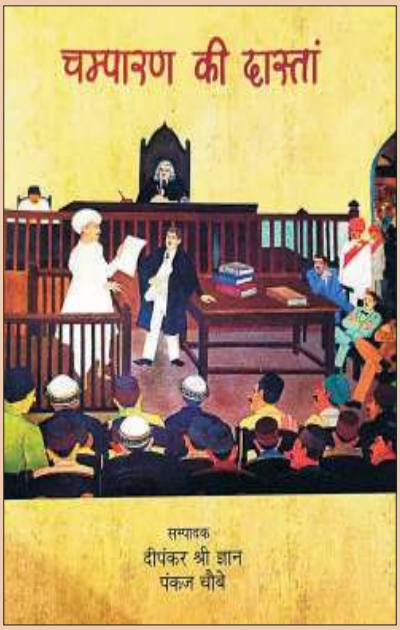

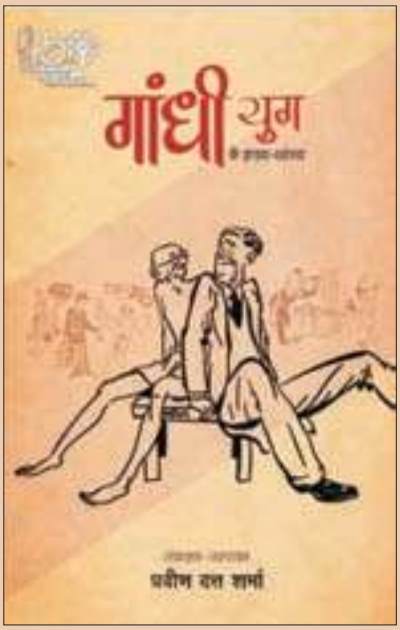

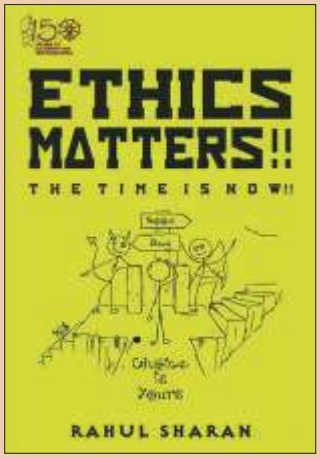

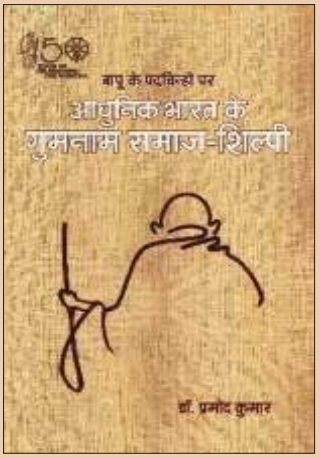

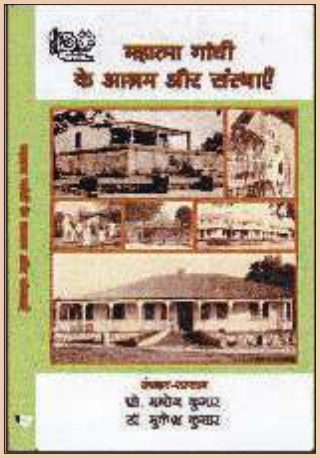

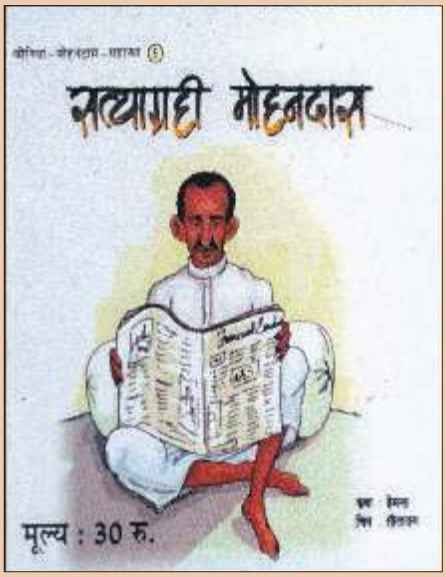

सम्पर्कः

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110 002

फोनः 23392796, 23011480, 23012843

फैक्सः 91.11.23011480

ई-मेलः 2010gsds@gmail.com www.gandhismirti.gov.in

RNI NO. DELHIN/2018/76242

''आप मुझे जो सजा देना चाहते हैं, उसे कम कराने की भावना से मैं यह बयान नहीं दे रहा हूँ। मुझे तो यही जता देना है कि आज्ञा का अनादर करने में मेरा उद्देश्य कानून द्वारा स्थापित सरकार का अपमान करना नहीं है, बल्कि मेरा हृदय जिस अधिक बड़े कानून से-अर्थात अन्तरात्मा की आवाज को स्वीकार करता है, उसका अनुसरण करना ही मेरा उद्देश्य है।''

(मोहनदास करमचंद गांधी)

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली
(एक स्वायत्त निकाय, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रकाशक - मुद्रक : स्वामी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लिए पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092 से मुद्रित तथा गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110092 से प्रकाशित।